विज्ञापन

इस कार्खाने अर्थात् मतबा मुंशी नवलकिशोर सन १८८७ ई॰ अर्थात् इन सी पुस्तकों के छपने का लिखा जाता है यह इस पेश हिन्दी में छपी हैं और इन का मोल भी बहुत किफायत से छपा कर लिखा है परन्तु व्यापारियों के लिये और भी सस्ती होंगी जिनको व्यापार की इच्छा हो वह छापे खाने के मुहतमिम अथवा मालिक से खत किताबत कर कमीशन का निर्णय करें

नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
भाषा (इतिहास)	३ वन पर्व्व	नये तसवीर	काव्य
महा भारत	४ विराट पर्व्व	तस्वीर नये छापे	रस सागर
१ हिस्सा में आदिपर्व्व,	५ उद्योग पर्व्व	रामायण तुलसी कृत	श्रृंगार सागर
सभा पर्व्व, वन पर्व्व,	६ भीष्म पर्व्व	ले सातों काण्ड	विश्राम सागर
२ हिस्सा में विराट पर्व्व,	७ द्रोण पर्व्व	१ बालकाण्ड	प्रेम सागर
उद्योग पर्व्व, भीष्म पर्व्व,	८ कर्ण पर्व्व	२ अयोध्या काण्ड	कृष्णलीला
द्रोण पर्व्व,	९ शल्य पर्व्व गदा प	३ आरण्य काण्ड	विजय मुक्तावली
३ हिस्सा में कर्ण पर्व्व,	सौप्तिक पर्व्व सब सौ-	४ किष्किन्धा काण्ड	अनेकार्थ
शल्य पर्व्व, गदा पर्व्व,	प्तिक व विशोक पर्व्व	५ सुन्दर काण्ड	छन्दोर्णव पिंगल
सौप्तिक पर्व्व, सौप्तिक प-	पर्व्व	६ लंका काण्ड	कविकुल कल्पतरु
र्व्व, विशोक पर्व्व, स्त्री प-	१० शांति पर्व्व राज	७ उत्तर काण्ड	रसराज
र्व्व, शांति पर्व्व में, राज	धर्म्म व आपद्धर्म्म व	रामायण शब्दार्थकोष	सतसई सटीक
धर्म्म, आपद्धर्म्म, मोक्ष	मोक्ष धर्म्म व दान धर्म्म	रामायण का इतिहास	सतसई
धर्म्म,	११ अश्वमेध आश्रम	रामायण मानस दीपिका	सभा विलास
४ हिस्सा में, शांति पर्व्व,	वासक मुशल पर्व्व	रामायण कवितावली	तुलसी शब्दार्थ
दान धर्म्म, अश्वमेध,	महाप्रस्थान स्वर्गारोहन	रामायण गीतावली	भजनावली
आश्रम वासक पर्व्व म	१२ हरिवंश पर्व्व	रामायण गीतावली स-	प्रेम रत्न
मौसल पर्व्व व महाप्र-	रामायण रस विलास	विनय पत्रिका वा मो	युगुल विलास
स्थान स्वर्गारोहन पर्व्व	रामायण तुलसी कृत	विनय पत्रिका वा शि	चित्र चन्द्रिका
व हरिवंश पर्व्व,	रामायण सटीक मयंक	पुराण	बारहमासा वसन्त सब
महाभारत पर्व्व पर्व्व	नरदीपिका कोश आदि	देवी भागवत	मनोहर लहरी
अलहदा भी हैं	तथा अर्थ वनरामायण सटीक	वेदान्त	गंगा लहरी
१ आदि पर्व्व	तथा शिल्पदंधी	योग वाशिष्ठ	यमुना लहरी
२ सभा पर्व्व	तथा मोद शब्दों की-	प्रबोध चन्द्रोदय नाटक	जगत् विनोद

॥ हरिहरसगुणनिर्गुणपदावली ॥

---००---

श्रीसच्चिदानन्द स्वरूप विश्वरूप स्वामी कृत पदावली लिख्यते ॥

कवित्त ॥ सिंदुर सुभाल सोहे बालचन्द्र लोक मांहि सोहे जग जासु नाम विना यश पायो है। सोहे बेदगाथ हाथ मोदक परशुबर अभेसु योति अंगअंग महं छायो है। योग यज्ञ जप तप यतन अनेक करै प्रथम गणेश पूजि अच्छे फलपायो है। विस्वरूप विश्वके अधार करतार एक उमा के उदार बार चित्तमें सोहायो है ॥ १ ॥ सोहत अखण्ड चंड कोटिन्ह दिनेश अंग विघन प्रचंड खंडखंड करि डारो है। शंभुके सुवन गज बदन भुवन मांह विदित अनादि गति मतिको अधारो है। कबिबर शुद्धि बुद्धि कुमुद सुचंद योति होत है झलक बेद मत बतसारो है ॥ बिश्व रूप झाकी सों झलक हिय मांझ होत योति घन सुंड फेरि शोच घन टारो है ॥ २ ॥ राग भैरो ॥ एक दन्त गज बदन दयानिधि सिद्धि सदन जन सुखकारी ॥ शोक निकंदन शंकर नन्दन भुज विशाल सोहत चारी ॥ कंज मंजु पुस्तक बर सुंदर अभय दानि मोदक धारी ॥ १ ॥ सिद्धि बुद्धि छवि खानि सोहावनि सोहति संग परम प्यारी ॥ विश्व रूप गुण सिंधु दया निधि वाहन मूषक भयहारी ॥ २ ॥ राग भैरो ॥ ज्ञान सिंधु गज वदन मदन मद मर्दन सुत जन हितकारी ॥ विघन हरण जन शरण दानि प्रभु कृपा सिंधु भव भय हारी ॥ गौरी सुवन भुवन यश तेरो विदित बेद गावत चारी ॥ १ ॥ विद्या बुद्धि दानि सुख सागर कोटि दिनेश योति धारी ॥ बिश्वरूप प्रभु शरण परो हे हरहु कुमति ममता भारी ॥ २ ॥ राग भैरो ॥ गणपति शंभु सुवन छवि न्यारे जो छबि बरनि न सकत सहस फणि सारद नारदमुनि जन हारे ॥ चन्द्रभाल छबि द्युति बिशाल अति सूर्प कर्ण गजबदन उदारे ॥ २ ॥ कोटिन्ह भानु योति छबि सोहै मुकुट किरीट योति उजि यारे ॥ बिश्व रूप जेहि हेरत दगते छुटत बेगि बिघन दखभारे ॥ ३ ॥ राग भैरो

॥ गणपति वदन हरण दुख भारो शोक सिंधु गण कुंभज केवल विघन हरण प्रण नाथ तुम्हारो ॥ १ ॥ प्रथम पुज्य श्रुति लोक विदित चहुं तेज पुंजगुण ज्ञान अंगारो ॥ जासु नाम जपि सकल सुरासुर होत कठिन संकठ ते पारो ॥ २ ॥ विश्व रूप प्रभु करुणा चागर शंकर सुवन जगत हित कारो ॥ ३ ॥ रागभैरो ॥ गणनायक ज्ञान अगारो ॥ करिवर वदन मदनरिपु वालक हारक मोह विकारो ॥ १ ॥ गिरिजा प्रीति कुमुद रुचि कर अति भालचन्द उजियारो ॥ हसत लसत दुति रदन सोहावन वसन मनोहर धारो ॥ २ ॥ विद्यानिधि गुणनिधि सुखनिधि प्रभु सिद्धी नाथ उदारो ॥ नयन कोर जेहिओर निहारत सो न लहत दुख भारो ॥ ३ ॥ कुहूंनिशा जड़ता अति मतिको विघ्न प्रचंड पहारो ॥ कोटि दिवाकर वज्र अमित सम पवन गवन करि टारो ॥ ४ ॥ मंगल मूल अमंगल हारक दायक वुद्धि बिचारो ॥ विश्वरूप जग जाल कालते लखि निज शरण उबारो ॥ ५ ॥ रागभैरो ॥ गुरु मोहि राम रूप मन भावे ॥ सबके तारन कारन सबके ज्ञान सरूप सोहावे ॥ १ ॥ समरथ शील दयागुण सागर भानु अमित दुति छावे ॥ सब तीरथ मय चरण कमल जल पीवत मोह नसावे ॥ २ ॥ जाके पद पंकज की महिमा सुरनर मुनि गण गावे ॥ जाको पार वेद नहि पावत लघुमति कवि किमि पावे ॥ ३ ॥ नहिदाता जाता कोउ गुरु सम अस निश्चे उरआवे ॥ विश्व रूप प्रभुकृपा करत जेहि पलमे अलख लखावे ॥ ४ ॥ रागभैरो ॥ अचल शरण गुरु को हम पायो ॥ छूटे ताप त्रिविध अति दारुण प्रेम प्रीति उरछायो ॥ १ ॥ सुतवित वनिता अहिगण नाशकगारुड मंत्र लखायो ॥ छायो सहज परम सुख केवल सकल सोच विनसायो ॥ २ ॥ छूटो द्वैत जगत भ्रम नाना सहज स्वरूप सोहायो ॥ विश्वरूप जल थल चहुं पूरण ब्रह्म रूप दरशायो ॥ ३ ॥ भंजन भैरो ॥ वन्दौ श्रीगुरु देवचरण कों ॥ भव दुख उदधि पार नहि सूझत पायो सहजे तरणि तरणकों ॥ १ ॥ जेहि पदकंज लसत सुर सरिता चारि पदारथ दानि शरणकों ॥ करुणा सिंधु वुद्धि गुण दायक कठिन दुसह भय जनम मरणकों ॥ २ ॥ श्री गुरु तारक ब्रह्ममहा प्रभु विश्व रूप गुरु भजु चरणन कों ॥ ३ ॥ सोरठ ॥ देखो वन भरत आनन्द ज्ञान ॥ गुरु चरण रज ऋतु सोहावन घटा समता ध्यान ॥ गुरु स्वरूप अनूप सुन्दर मेघ सजल सुजान ॥ १ ॥ आठ याम अखंड वरषे झूरि द्वैतन भान ॥ विश्वरूप प्रताप गुरुको अचल अमल ठेकान ॥ २ ॥ भजनठुमरी ॥ मन अब राम नाम रट लेहो ॥ छन छन छीनहोतइन्द्रिगण

कब हरिके गुणगैहो ॥ १ ॥ नीच कर्म तरुलाइ लोभ जलसींचि अमिय फल कैसेपैहो ॥ पर अपकार पहार शीसधरि भव जल केहि बिधि पारसिधइहो ॥ २॥ जगत गहन बन दावचहूं दिशि काहु केहि मगुते बाहरनइहो ॥ विश्वरूप अवसरके चूके सिरधुनि धुनि पुनि पुनि पछितइहो ॥ ३ ॥ बिहाग भजन ॥ मनरे भूले बिराने देश ॥ इत अपनो हित दीशतनाहीं जेहि बससहत कलेश ॥ १ ॥ जेहितन कहं पालत निशि वासर करि बहु पाप हमेस ॥ सोतन गीध श्वान मुख जइहै कारिहै कि अनल प्रवेस ॥ २ ॥ नयन अंधभये श्रवन सुनत नहि पग न चलत बहु तेस ॥ जर्जर भये दशन सब टूटे सेत भये सबकेस ॥ ३ ॥ अलप धनिककी कौनचलावे जइहै अवशि धनेश ॥ काल गालतें नहि कोउ बांचत सुर नर असुर सुरेश ॥ ४ ॥ जेहि पद सेइ अचल पद पायेना-रदादिं मुनिशेस ॥ विश्व रूप दृढ़ अवशि गहो सोइ अवर सकाल चल भेस ॥ ५ ॥ भजन ॥ मनरे हरि बिनु सकल बिराने ॥ अहित होत सब समय पाय के जाकहं हित करि जाने ॥ १ ॥ यदपि दिवाकर रुचि करकर लहि कमल तुरित विग साने ॥ सोइ रबि कर गन पाइ बारि बिनु वारिज तुरित सुखाने ॥ २ ॥ सकन शस्य पालका वारिद है पालत सबहि समाने ॥ बर्षत बिपुल उपल कबहूंके बिनसत ओहि विताने ॥ ३ ॥ वनिता भोग राज सुख चाहत मूढ़ विना पहिचाने ॥ इतदुख मूल नरक दायक उत करि तेहि प्रीति भुलाने ॥ ४ ॥ जेहि डरते यम राज डरत नित निशिदिन काल सकाने ॥ विश्वरूप सिय नाथ भजे जो सो जन परम सयाने ॥ ५ ॥ भजन ॥ मनरे समुझि बूझि अब देखो ॥ तेरो तन तेरे संग ना जइहै अवर करौं कालेखो ॥ १ ॥ कूच नगारा बाजि गयोहै ठौकेउ यम गन मेखो ॥ काल कर्म को धार बड़ोहै सो नहि मूढ़ निरेखो ॥ २ ॥ ध्यावो मन करुणा निधि रघुवर जलधर वर रुचिवेखो ॥ विश्व रूप जग सुख सपनेके अचजिन नैनन्ह पेखो ॥ ३ ॥ भजन॥ रेमन तू न भयो अपनो ॥ कोटि सिखावों नेकु न मानत देत दुसह तपना ॥ १ ॥ तेरि बस परि सहेउं बहुत दुख चौरासी भ्रमना ॥ ऊंच नीच घरबास घनेरो मातु गरभ दहना ॥ २ जानि दिवाकर कर शीतल जल साहस करत घना ॥ निकटहि आतम रसहित कारक पियत न एक छना ॥ ३॥ केतिक युग बीते भरमत तोहि निज हित समुझतना ॥ बिश्व रूप निज बोध हेतु करि जानु जगत सपना ॥ ४ ॥ भजन ॥ समुझि न परत अलख गति तेरी ॥ सब जग कारन आपु अकारण निर्गुण सगुण घनेरो ॥ १ ॥ मायातें बहु खेल कियोहै रचेउ भुवन चहुं फेरो ॥ बिबिधि सुभाव भेदतें जहं तहं बहु बिधि

जीव बखेरो ॥ २ ॥ चहु दिशि विषय दियो फैलाई जीव कहत तेहि मेरो ॥ काम क्रोध की ओट परोहै सुधि नहि कर्त्ता केरो ॥ ३ ॥ जब यह जाल दया करि खंवहु नयन कोर हरि हेरो ॥ विश्व रूप जग झूठ सांच मति सहजहि होत निवेरो ॥ ४ ॥ बिहाग भजन ॥ भजोरे मन सब गुण निधि भगवन्त ॥ दीनबंधु करुणा के सागर अकल अनीह अनन्त ॥ जीव चराचर रमेउ दयानिधि केवल कमला कन्त ॥ १ ॥ निज समान अपनो है साहेब कोउ प्रटतर नलहंत ॥ अति अगाध महिमा है जाकोकहि हारे श्रुति संत ॥ २ ॥ सब विभूति प्रभु को जग छायो तेज वंत गुण वंत ॥ विश्व रूप ऐसो प्रभु हेरो क्या हेरसि धनवंत ॥ ३ ॥ भजन ॥ मनरे भटकत हरि बिनु जाने ॥ धर्माधर्म विचार करत नहि लोभचीक दृगताने ॥ १ ॥ अवरन कह समुझावत बहु विधि अपनी राह हेराने ॥ जगत सघन वनभूलि गयो है नहिकरतन पहिचाने ॥ २ ॥ वड़ो गुनी सब महं काह वा वत हम उत्तम उरआने ॥ खानपान तन पालन रतनित पर धन हरण सयाने ॥ ३ ॥ करत कुकर्म दिवस सबबीते अजहुंन मूढ़ अघाने ॥ विश्वरूप अब चेत सवेरे झूठे जनम नसाने ॥ ४ ॥ बिहाग ॥ मनरे विषय कारण बहु नाचो ॥ जो जग दीश ताहि बिसरायो घर घर निसि दिन यांचो ॥ १ ॥ गुरु उपदेश नहीं ठहरत उर जैसे जल घट कांचो ॥ विषय बयन सुनि तुरित ढरत शठ जिमि पावक घृत आंचो ॥ २ ॥ अंध भये मणि नाम न देखत वरबस कांचुहि रांचो ॥ बर बस चलत कुमारग निशिदिन वेद पुराणहि बांचो ॥ ३ ॥ झूंठ पसार सार करि मानत गहत न हरि पद सांचो ॥ विश्व रूप अवसर के चूके यम गण देत तमाचो ॥ ४ ॥ भैरो में भजन ॥ भजुमन शंभु चरण सुखदाई ॥ जासु शरणतें लहै परम पद बहुरि न भव जल आई ॥ १ ॥ जेहि यांचे ते होत अयांचक दारिद सकल नसाई ॥ सकल भूति कर तूति सोहावन निशिदिन करतल छाई ॥ २ ॥ अति दयाल समरथ सुख दायक मूढ़ ताहि बिसराई ॥ कामी कुटिल विषय रस बस नित गहत न जेहि शरणाई ॥ ३ ॥ तजि चिंता मणि सब सुख दायक गहत काचु हठि धाई ॥ सुर तरु सकल मनोरथ दायक परि हरि आक लगाई ॥ ४ ॥ विधु शेषर हर चरण प्रीति करु जो चाहसि कुशलाई ॥ विश्व रूप भव अगम तरण कहं दूसर नाहि उपाई ॥ ५ ॥ धनाश्री ॥ अजहुं समुझ मन होत अबेरो ॥ नाहकहीं सब दिवस वितायो कबहुं न हरि पद हेरो ॥ १ ॥ बालक पन बीते अजान मह असन शयन रुचि ढेरो ॥ करत चपलता इत उत धावत नहि सुधि साधन केरो ॥ २ ॥ तरुण भये

सुधि सकल भुलाने तरुण तिमर मद घेरो ॥ मत्तमहिष वृष राज सरिस मठ भये कामिनि कर चेरो ॥ ३ ॥ कृषी वणिज व्यवहार करत बहु धन मह प्रीति घनेरो ॥ नीति अनीति विचार करत नहि संगति कुपथिन केरो ॥ ४ कंपत गात बात नहि पूछत नेह पर ममता तेरो ॥ विश्व रूप भजु जनक सुता वर काल किये चिर डेरो ॥ ५ ॥ भजन ॥ मन बसहु सरोवर जाई ॥ घाट विचार सुचारु शमादिक छवि सो पानसोहाई ॥ १ ॥ निर्मल ज्ञान वारि परि पूरण सुखद मनोहर ताई ॥ निज स्वरूप सुख रूप सुमोती चुंगत प्रीति बढ़ाई ॥ २ ॥ नहिंतहं करदम भेदजनित दुख अमित वासना काई ॥ शोक ग्रीषम ऋतु ताप न लागत शीतलता अति छाई ॥ ३ ॥ कामी कुटिल नीच अभिमानी काक गीध बिपुलाई ॥ पर अपकार विषयरस निशि दिन तेहिथल बासन पाई ॥ ४ ॥ मुनि जन धीर मराल मगन होय करत निवास सदाई ॥ विश्वरूप घर अचल करोतहं आवा गवन नसाई ॥ ५ ॥ भजन ॥ ज्ञान कृपान गहो मन मेरो ॥ अति हुसियार रहो निशिबासर रिपु घेरेउ बहुंफेरो ॥ १ ॥ मोह मान मदमार प्रवल रिपु इन्ह संग फउज घनेरो ॥ करत उजारि भवन सबहीके भरन परो इन केरो ॥ २ ॥ शम दम योग विराग यतन बहु पहिरो कवच अछेरो ॥ होइ अभय मारो रिपु दल को दयबहु दुसह दरेरो ॥ ३ ॥ आतम रूपराज अविचल पद बैठो सब तजि घेरो ॥ विश्वरूप सुख सिंधु मगन रहु दशहु दिशा जय तेरो ॥ ४ ॥ भजन ॥ यह तनके ममता दुखदाई ॥ कहुं पूजेते गगन करतुहै कहुं परिभवतेदेय बढ़ाई ॥ जबतक हृदय ग्रंथि नहि छूटै तब तक मिटत न मनमलिनाई ॥ १ ॥ भ्रम बस कर्म करत बहु भांतिन जन्मत मरत बहुत दुख पाई ॥ यह भव उदधि अपार धार है हठकरि परेउ बीचतेहि जाई ॥ २ ॥ काम क्रोध जहं जंतु घनेरे ग्रास करत सब काहं बरिआई ॥ विश्वरूप गहु राम नाम दृढ़ सकल चाहत मनकी बिसराई ॥ ३ ॥ खेमटा ॥ झूठे जगत भुलाना मैं कैसे सुख पावों ॥ एको छन हरि भजन करत नहि राजस गति चित लावों ॥ काम क्रोध जल भरत रैनदिन अजहुं भवननहिं छावों ॥ १ ॥ हरि जनहरि सों प्रीति बिसारेउ सुत वनिता गुण गावों ॥ निकटहि व्यापक प्रभु सुख सागर देश बिदेशहि धावों ॥ २ ॥ करि पखंड प्रभुता चित चाहों श्रुति सारग बिसरावों ॥ विश्वरूप अस दिन कब ह्वैहैं राम शरण महं आवों ॥ ३ ॥ खेमटा ॥ संवलिया लाल मैं तोहि जानो ॥ विनति करौं जनि लाव नजरिया छटासे मोरे नैना लोभानी ॥ १ ॥ विश्व-

रूप चित चोर कन्हैया तुमरे हाथमेंनाहि बिकानी ॥ २ ॥ खेमटा॥ मुरलिया लालदे मोहि आनि ॥ चांद सुरजकेरि योति मुरलिया बजाई हरे जियरा विरानि ॥ १ ॥ विश्वरूप हंसि हेरि नजरिया लगादे प्यारे नैना निसानि ॥ २ ॥ खेमटा ॥ धनुहियां हाथ यों लेइतानि ॥ कर गहि बाण सुजान संवलिया चलाइ कीन्हो दशमुख हानि ॥ १ ॥ विश्वरूप करिअभय धरनियां छुडाइ दीन्हो जगकी गलानि ॥ २ ॥ खेमटा ॥ नजरिया हेरिदे मोहिंदानि ॥ कमल कोस छवि हरनि नजरिया छुडादे मेरो ममता गलानि ॥ १ ॥ विश्व-रूप रघुवर वरदानिया कहां लों तेरो महिमा बखानि ॥ २ ॥ खेमटा राघो तेरो छवि यों नजरी मह लैयों हो ॥ सरयु सोहावनि विहरत नीको छन छन नेहिया बढ़ावत रहियो हो ॥ १ ॥ बचन माधुरि मनहि बसैं हो सुख घन रसिया कवो ना बिसरैयो हो ॥ बिश्व रूप लालन दश रथके पदरज मतिया लगावत तरियोहो ॥ २ ॥ खेमटा ॥ राघो तेरो सुधिय कवन विधि पैयोंहो ॥ रोदन करति परत धरणी मह कहत कौशिल्या प्राणहो देयोंहो ॥ जनक दुलारी प्यारी प्राणहूं ते मेरी कवन यतन तेरि सिय सुधि ले योंहो ॥ २ ॥ छिन छिन कोटिन युगतें कठिन भयो केहिविधि रतियां अगम बिते योहो ॥ विश्व रूप बिधि बिपति भवन दियो दुखकी समैया अब कासों सुनैयोहो॥ ३ ॥ खेमटा ॥ कोने मद भूलि बिगारे सब कमवां ॥ जगकर सपना भोग लखतना जोरत रहत लाख को जमवां ॥ १ ॥ जरत गरभको सोच करत ना कियेरे कउल जपिहों हरि नमवां ॥ २ ॥ पुरजन वनिता संग रहत ना जीवन चपल लखो हरदमवां ॥ ३ ॥ विश्व रूप गुरु चरण गहतना करतव नीच चहत सुख धमवां ॥ ४ ॥ खेमटा ॥ लागे दिन रैन हमारे मन रमवां ॥ कुटिल करम को आश करवना चरण कमल जपि-हो सुख धमवां ॥ १ ॥ कठिन जगत को बंधन सहिहों वहुरि नपैहों गरभ जनमवां ॥ २ ॥ भरम भवन में वास न लहिहों तजिहों कुटिल कुमति मद कमवां ॥ ३ ॥ विश्व रूपमोहि अवरन भावे हारिल की लकड़ी घन समवां ॥ ४ ॥ ध्रुवपद ॥ सखि राजको समाज साज सोहत रघुनाथ जीको कांति सदन मदन कोटिपटतर नहि पावैरी ॥ १ ॥ भूपन की पांति पांति सुरपति सु मुनि सोहाति गान करति देव वधू भुवन को रिझावैरी ॥ २ ॥ ज्वलित वरण तरणि योति भूषण पट योति होति शीस मुकुट मणि गण छवि दृ-गन कों चुरावैरी ॥ ३ ॥ महाराज भूप न को भूप विश्व रूप राम ऐसो प्रभु छोड़ि आस दीनसों लगावैरी ॥ ४ ॥ ध्रुव पद विलावल ॥ मोहन कुंजन

ब्रज जन प्यारे ॥ कुंज विहरन चित हरन श्याम श्याम राम संग सिधारे ॥ १ ॥ कुंजन प्रति कुंज कुंज गुंजत चहुं भृंग भीर कुसुमित तरु ललित मोर सोर सों पुकारे ॥ २ ॥ लीन्हे संग ग्वालवाल खेलत ब्रज लाल खेल निरखत चित भरत मोद कुसुम हरषि डारे ॥ ३ ॥ विश्व रूप व्यापक जेहि नेति नेति गावे श्रुति भाग्य पुंज पुंजन संग विहरत निसवारे ॥ ४ ॥ ध्रुवपद ॥ आलीरी सावन आयो घनमन भावन झनन घनन अंजोर चपल दो दृग झंपन ॥ १ ॥ वनवारी बल राम सुनाम गये वन सोचति मोहत विश्व रूप सखिरी उर छायो मोहिं कंपन ॥ २ ॥ ठुमरी ॥ भ्रमवंश तें भव जालमें भटकी ॥ यतनं करत सुखहेतु अनेकन कामिनि कोप विषय चित अटकी ॥ १ ॥ आश पिशाच विवश भयो निश दिन बाहर धावत सुधि न निकट की ॥ २ ॥ विश्व रूप रघुबीर शरण गहु हरण द्वंद जग फन्द विकटकी ॥ ३ ॥ ध्रुवपद सामकल्यान ॥ येआजु पावन कीन्हो सुख घन छवि निधि भवन भुवन संभोग रण योग जन पावन ॥ १ ॥ वहु रंगी पट रंग सुरंग सुभूषण मोहत मोहत विश्व रूप सखीरी श्याम सोहावन ॥ २ ॥ ध्रुवपद सामक ल्यान ॥ विरहत मोहन ग्वाला गोपी साथ लेई ॥ सघन बाटिका कुसुमु घनेरो नाना गन्ध फूले हैं चंवेली मुख धृत वंशी शोहन ॥ १ ॥ मंजरी माल मणि माल भीनो सजे हैं अंबर छवि न्यारे ॥ विश्व रूप वंशी धुनि सुनि सुरनि किलकिहा हा देई देई ये लागत सुर मुनि जोहन ॥ २ ॥ ध्रुपद ॥ निर्त्तत मोहन श्यामा वंशी हाथ गहें ॥ चपल सोहावनि वेन सोहाई झुकिझुकि आवत दूर पराई सुखघन विहरे मोहन ॥ १ ॥ मधुबन विहरत श्याम कन्हाई बालन्हकोसंग केलि मचाई ॥ विश्व रूप निर्त्तत यदुनन्दन थेई थेई तता थेइ तंतं गगन मुरली वाजत सोहन ॥ २ ॥ ध्रुवपद ॥ आयो घन घोर मोर नाचत चहुं ओरहेरि कीन्हो प्रिय सोर भोर भई दशा तन की ॥ ऐसें ब्रज ग्वाल बाल हेरें नन्दलाल ओर फेरे नहि नेकु नैन चित्रलिखो मनकी १ ॥ भूषण सुअंग अंग मोरत अनंग कोटि रंग रंग पीत योति चपला ज्यों घन की ॥ ऐसोमोहन अनूपहेरे दृग विश्वरूप नैन बैन भेद कियो खोटो विधि जनकी ॥ २ ॥ ध्रुपद ॥ जीतोरी जबही ऐसो कामकामिनी को माया जाल पै हो तबही तू श्यामा प्यारे ब्रज चन्द जी ॥ जीवन अलख जानो पथिकसो संग मानो चपला मोंचित लायो भूलेमति मंद जी ॥ १ ॥ सपना को राज पायो उरमें आनंद छायो जागे पछ तायो ऐसो जानो जग फन्द जी ॥ विश्वरूप भजो नाम जीवन सुखद श्याम मोहन मुकुंद माधो प्यारे सुख कन्दजी ॥ २ ॥ राग ठुमरी ॥ मन मेरो

रघुवीर सों अटको ॥ सुर नर नाग अवध सुख चाहत सो तजि भवन छांह तरु वट की ॥ १ ॥ नृप किरीट पद परत जाहिके तापस वेपसों बन बन भटकी ॥ २ ॥ विश्वरूप कहै भरतसों पुर जन विधि रहे मुकुट जटा सिर लटकी ॥ ३ ॥ ठुमरी ॥ खगपति अहि जिमि कंसको भटकी ॥ गहि कर केश नरेश बीच में श्याम घुमाय भूमितल पटकी ॥ १ ॥ धायो रि कंस सहोदर रिपुगण छिन में हतेउ खेलि कियो नटकी ॥ २ ॥ विश्वरूप जासों काल डरतु है गिनती कवन असुरदल भटकी ॥ ३ ॥ ठुमरी ॥ मन जिनके धन गेहसों अटकी ॥ छांडेरिसुपथ बृथा भयो जीवनरविकर बारि तृषा कहुं हटकी ॥ १ ॥ होत बिफल जप योग कांच जैसे बहत सकल जल रहत न घटकी ॥ २ ॥ बिश्वरूप गुरु चरण सरोरुह वेगिगहो तजि चीक कपटकी ॥ ३ ॥ ठुमरी ॥ सखि सबके चित श्याम सों अटकी ॥ ढरत नयन जल नींद न आवत कोटि न युगशत होत पलककी ॥ १ ॥ विसरत नहि सखि मोहन कीछवि यमुना नीर रुचिर छवि तटकी ॥ २ ॥ विश्वरूप मधुपुर गये मोहन मोहि सुधि रहत न भूषन पटकी ॥ ३ ॥ ठुमरी ॥ मन जबते हरि ओर से हटकी ॥ तब तेरे भव जल पावत दुख धन आवत जात अमित युग भटकी ॥ १ ॥ विश्वरूप श्रुति मगनहि हेरत सुत वित नेह गेह सुख अटकी ॥ २ ॥ ठुमरी ॥ भूपन जों घनन योति सों झलकी ॥ उर बनमाल भाल सोहै चन्दन भृकुटी ललित हास मन ललकी ॥ १ ॥ मब गुणअयन बेन मन मोहन लटक जलज मुखछवि अलि दलकी ॥ २ ॥ विश्वरूप मन मोहन कीनो विसरत नहि छवि नयन चपलकी ॥ ३ ॥ ठुमरी ॥ बिन समुझेहिये सोच सों भटको ॥ राज विभव सुख बंधु सहोदर आस छनिक तृणजल जिमि लटकी ॥ १ ॥ रैनि सपन सुख गगन कुसुम सम मानप्त चित्त चपल चित अटकी ॥ २ ॥ विश्वरूप गुरु पद रज अंजन गंजन दृग दुख दोष कपटकी ॥ ३ ॥ ठुमरी ॥ मन जिनको निज बोधसों अटकी ॥ बिहरत अभय सबहि महं पूरण भय न होत उर रिपुगण खटकी ॥ १ ॥ बाहर नामरूप दृग गोचर पुतरी ललित रचित जिमि पटकी ॥ २ ॥ विश्वरूप सुख अमल सोहावन योति झलक जिमि रविगन ठटकी ॥ ३ ॥ रागभैरवी ॥ वतवों मोहि श्याम गये केहि ओर ॥ श्याम श्याम रटि थकित भई अति नाहि मिले नन्द किशोर ॥ १ ॥ कचतें कुसुम झरत चहुंदिशतें टूटी गललर जोर ॥ बिकल भई सुधि सकल भुलानी मन अटको चित चोर ॥ ३ ॥ मुरलीटेर करत मुरली धर आइ गये तेहि ओर ॥ विश्वरूप सखि निरखि मगन भई जैसे चन्द चकोर ॥ ३ ॥

रागभैरवी ॥ माधव माया सबहिं नंचावै ॥ योगी जंगम नृप संन्यासी पारं कोउ नहिं पावै ॥ १ ॥ जाकी चास वास मुनि जन सब बनमें जाय लगावै॥ मानस वेग प्रबल नानासर हठि तहं तुरित पठावै ॥ २ ॥ कहुं तिय सुत धन रूप भईहै नानां भेषदेखावै ॥ कहुं परिवार बंधुहित अपनो बहुबिधि जाल बढ़ावै ॥ ३ ॥ हों पंडित ज्ञानी सर्वोत्तम अहंमिति उर आधिकावै ॥ सो नहिं समुझत मूढ़ मोह वस हठि निज शीस कटावै ॥ ४ ॥ काहकहों करुणा के सागर कछु उपाइ नहिं आवै ॥ विश्वरूप रघुनाथ शरणतवं दृढ़ भरोस मनं भावै ॥ ५ ॥ रागभैरवी ॥ माधव मन जीतव कठिनाई ॥ मुनि जन यतन करत बहुहारे नेकु थाह नहिं पाई ॥ १ ॥ मूल सहित गिरिवर उखारि वरु करतेलेइ उठाई ॥ सब सागर एक बार सिमिटिवरु अंगुलि माँह समाई ॥ २ ॥ पावक प्रबल प्रचंड असन करै वरु शीतलता छाई ॥ नभकहु सिमिटि धरनि महं मेले वरु विष दुसह पचाई ॥ ३ ॥ स्वर्ग नरक दुख सुख वहु भांति-न यहं मन कृत समुदाई ॥ चौरासी मह भ्रमत दिवस निशि नहिं पावत थिर ताई ॥ ४ ॥ जापर दया करहु करुणा निधि माया पति रघुराई ॥ विश्व रूप वसि होत ताहि मन विनु प्रयास सुख पाई ॥ ५ ॥ राग भैरवी ॥ मेरो मन हरत कपाली वन मालिया ॥ मुख मुरली डमरू छवि सोहे कर धनु बान त्रिशूल छटालिया ॥ १ ॥ शीस मुकुट मणि जटित सोहावन शंकर केसरि सोहत जटालिया ॥ २ ॥ विश्वरूप करपूर गौर हरश्याम वरन मन मोहत घटालियां ॥ ३ ॥ भैरवी ॥ काहे रघुवर कूप भकावत हो ॥ श्रुति मत विदित सकल अंतर गति जानति हार लखावति हो ॥ १ ॥ विश्वरूप जगदीश दीन प्रभु नाम की लाजन आवत हो ॥ २ ॥ भैरवी ॥ सखि मोहनं मोकंह भावतरी ॥ श्याम अलक मुख झलक सुर सों कोटि मदन छबि छा-वतरी ॥ १ ॥ विश्व रूप दृग कमल चपल सों श्याम सनेह लगावतरी ॥ २ ॥ भैरवी ॥ तोरि राम धनुष जगत यश छायो है ॥ छवि रुचि कारि सोहै देखि त्रिभुवन मोहै एकटक नर नारि पलकन लायो है ॥ १ ॥ रबि दुति उजियारी जगमग ज्योति सारी भूप जान खान देखिउर सकुचायो है ॥ २ ॥ जनक को पन पाले खल नृप मद घाले साधु नृप उर माह अति सुखमायो है ॥ ३ ॥ भृगुपति मद तोरे मुनि जन करजोरे जानि प्रभु शीस नवाई बनको सिधायोहै ॥ ४ ॥ रुचिर समाज सोहै गिरा बिधि शेष जोहै उपमा न पायो ताते अनुपम गायोहै ॥ ५ ॥ विश्व रूप प्रभु राम जनहित सुखधाम जानकी समेत रथ चढ़ि गृह आयो है ॥ ६ ॥ भैरवी जोरे कर भरत

जी अरज सुनायोहै॥ चलहु भवन न प्र अवध कारो सन थ करुणा निधान तुमैं लेन काह आयो है॥ १॥ सुनिके विनय वाणी रघुवंशि सुखदानि स-मुझि पिताको पन उर सकुचायोहै॥ २॥ भरत नेह भर सकत न रामटारी प्रेम के विवश भये दृग जल छायोहै॥ ३॥ … रूप रघुराज समुझायो सुर काज चित्रकूट तें भरत काह … ॥ ४॥ भैरवी॥ श्यामा मेरे चित को चुराय लई भवन भोग लेई … मैंतो॥ सुन्दर गति छबि ललित मोहन की ब्रज पुरजन को लुभा … ॥ १॥ विश्व रूप मुरली मोहनकी सुर नर नाग मोहाय लई॥ … छियां मेरे संगमें छपाय रहो ज्ञान नैन सो हियां लखिहों प्यारे॥ … रहत भेहदी की घृत जैसे छीर में छ यरहो॥१॥ विश्व रूप … मिलनेकि और उपाय नहीं॥ २॥ राग भैरवी॥ … नसाय दई रामसों नेह हिय धारिहों अब॥ घेर अराति … सतपथसों बिचलाय दई॥ विश्वरूप निजबोध ब्रह्म सुख … ते … राय दई॥ २॥ भैरवी॥ काया तेरे संगमें न जाय कहो कान … प्यारे॥ सुख घन ब्रह्म सरूप भालक चहुं केवल मनको … ॥ विश्वरूप अवसर दिन दशको अबतोहि काल फसाय चही॥ १॥ भैरवी॥ रघुबर जबतक प्रीति न तोसे॥ काह भये बनजंतु बटोरे खान पान बहु पोसे॥ काह भये मृग छाल बिछाये सयुक्त ना गुण देखे॥ काह भये … जटा बढ़ाये मनलागो घनकोसे॥ १॥ अक्षर बोध सीख करतब सब … अनीश कृत जोसे॥ विश्वरूप जगदीश नापद चो पद रति नहिं … ॥ २॥ होरीकीताल॥ मैंतो मन मोहन को रटती रही। ज्योति रूप सों घटती रही॥ कुबरी संग प्रीति हरि कीन्हों कवन कलासों घटती रही॥ इत आवन नहिदेति श्याम को विरह विथासों लटती रही॥ २॥ मधु पुर नवल सनेह श्याम सों सखि कुबजा सो पटती रही॥ विश्वरूप ब्रज हरि नहिं ऐहे प्रीति इहां सों हटती रही॥ ३॥ तालहोरी॥ मैंतो दुख सागर सों तरती नहीं चरण शरण को धरती नहीं॥ १॥ गुरु पदनाव अचल कृत चोखी घोर पवन सों डरती नहीं॥ भइहों अशंक पार भव जलतें योग यतन कोकरती नहीं॥ २॥ अचल अमन सुख घन हिय छायो द्वैत फन्दसो मरती नहीं॥ विश्वरूप … उदय भयो ज्योतिपलकसो टरती नहीं॥३॥ होरीकीताल॥ ऐसे … में … रही चरण युगल को चहती रही॥ चन्द्र चूड़ रिपु आइ चहुं छायो शोच अनल सों दहती रही॥ रैनि दिवस दृग नींद

न आवै दुसह दपट को [illegible] रही ॥ १ ॥ [illegible] बिंधु [illegible] खगपति सों नेह अचल को गहती [illegible] ॥ [illegible] गम्य [illegible] छन छन रहती रही ॥ २ ॥ [illegible] ॥ प्यारी नट नागर सों करती नहीं ॥ कमल नयन सों डरती [illegible] ॥ श्याम [illegible] अंग सुख कहुं [illegible] चितइन सों री भरती नहीं ॥ [illegible] मोहन साथ कुवंजा सों बनती रही ॥ १ ॥ [illegible] मोहन की [illegible] भरती नही ॥ [illegible] तब हरि [illegible] जल [illegible] नही ॥ २ ॥ ताल होरी को ॥ [illegible] डरती नांही ॥ [illegible] सुख घन सो टरती नही ॥ [illegible] सीप [illegible] नहीं ॥ कोजग [illegible] संभरती नही ॥ २ ॥ [illegible] रूप निज [illegible] नहीं ॥ [illegible] चपल चरख सों डरती [illegible] ॥ ३ ॥ [illegible] भरतीरही ॥ अजब भवन [illegible] हृदय सों गरती रही ॥ [illegible] डरती रही ॥ १ ॥ [illegible] रही ॥ विश्व रूप पावक विनु [illegible] रही ॥ २ ॥ [illegible] ॥ गहो अब रामको प्यारे [illegible] ॥ [illegible] कछू नहिं हाथ आवरे ॥ [illegible] नल डारे लखो जग झूठ [illegible] ॥ १ ॥ [illegible] ॥ बिनय महावीर की मेरी दयाकरि [illegible] ॥ [illegible] रवि कोटि तन सोहे निरखि शिर छत्र [illegible] ॥ सदा मैं [illegible] तेरो ॥ १ ॥ सोहै भूषण [illegible] सुरंगनमें ॥ [illegible] रवि चन्द्रवक्तुतेरो सोहै माला मधिन केरो ॥ २ ॥ [illegible] दहन छवि सोहै ॥ अभै [illegible] पहूं फेरो ॥ ३ ॥ जलधि गोपाद सो कीन्हो [illegible] ॥ करों प्रभु [illegible] टेरी शरन है विश्व को तेरो ॥ ४ ॥ [illegible] ॥ खेलत बसंत रघुकुल दिनेश देखत समाज [illegible] सुरेश ॥ नित नूतन घर घर मह उछाह [illegible] डर नहि त्रिविध दाह ॥ [illegible] सकतगाय ॥ १ ॥ देवनि [illegible] लिये समेत [illegible] स्वरलचि ताल देत ॥ गह गह धुनि चहुंविरव रूप होत मगन जैसे रंकभूप ॥ २ ॥ राग रागवसंत ॥ खेलत बसंत श्री महावीर बलसागर रबि सम तेजधीर ॥ श्री अगाध सागर

कुमार गजराज पापके हरि उदार ॥ प्रभुविश्वरूप रघुवर अधार वरदान देहु करुणा अगार ॥ २ ॥ ठुमरी ॥ श्याम रूप जबसों दृगहेरे ॥ विकल होत मनकल न परेरे ॥ कहे जोवैन मधुर रुचि कर अति मुरली टेर फेर चितदेरे ॥ हंसनि चातुरी चकृत चपलता नहि पटतर हेरेउं बहुतेरे ॥ १ ॥ गोवन के संगवालन लीन्हो कर कर जोरि डगर चहुंघेरे ॥ विश्वरूप लीलाधर मोहन रैनि दिवस सखि चितमो बसेरे ॥ २ ॥ ठुमरी ॥ भल तेरो श्याम जवानो निरखत नैन अघानी ॥ रचि रचि बिरवा पान सवांरे दशन अधर छवि खानी ॥ तिरछे नैन हरत हरिजीको लसत ललित मुसुकानी ॥ १ ॥ पीत वसन छवि चितको हरत है भूषण भूति निशानी ॥ विश्वरूप मोहनछ छवि तेरो लखि अनंग सकुचानी ॥ २ ॥ ठुमरी ॥ देखो देखो रे श्याम की रुचि-राई ॥ कुंडल चपल करण महराजै मुखमुरली छविछाई ॥१॥ पीत बसनद्युति अधिक विराजै लखि दामिनि सकुचाई ॥ २ ॥ मणिगण हार सुछवि उर शोभित मानहुं सिमिटि सुरशशि आई ॥ ३ ॥ विश्वरूप मनमोहन मोहन हरत फन्द दृगकी चपलाई ॥ ४ ॥ भैरवी ॥ राधिका संग श्याम सिधारे ॥ हम सबते कछु वात कहत नहीं कपट करत मुरलीधर प्यारे ॥ १ ॥ कहां गये मन मोहत मोहन अलिहम खोजति कुंजलतारे ॥ चंचल प्रीति करत हरि हमसन कहा कहों सखि मोहन कारे ॥ २ ॥ विश्वरूप हरि विरह विकल भई जोहत सब सखि यमुना किनारे ॥ ३ ॥ भैरवी ॥ भला नारे मोहन प्यारे सांवलिया नन्दलालारे ॥ नयन लगीचितको ठगी लागी काम कमान ॥ वनवन सुधि कहुना मिली गये कहांरी कान ॥ १ ॥ सुंदर छैलसंग राधिका करती बहुत गुमान ॥ विश्वरूप धुनि वांसुरी लगो विरह कोवान ॥ ॥ २ ॥ भैरवी ॥ मिलनारे मुरलिया वाले सांवलिया मोहि प्यारे ॥ पीत बसन काछे भली वन माला छविखान । चितवनि दृगमें रसभरी निरखत हरिले प्रन ॥ १ ॥ तिलक भाल शोभा भली झलक कोटि सत भान । विश्व-रूप मनमें बसीकिये सरसजो गान ॥ २ ॥ खेमटा ॥ वितत सबदिनवां नाह-कारे ॥ नहिंहरि भजन शरण नहिंगुरुके होइहे यमगण गांहकारे ॥ १ ॥ कुमति कुसंग सनेह बढाये मोहभार सिरवांह करे ॥ विश्वरूप पुनिपुनि पछितै-हो पैहो दुख उर दाहकारे ॥ २ ॥ खेमटा ॥ सूरतिया पनि हारिनि भईमोर ॥ विनाकूप बिन डोर भरत जल पिवत मगन नितरहे चहुओर ॥ १ ॥ त्रिकुटि भवनवां रहति मौनवां कौनहु समय न लावति भोर ॥ २ ॥ विनु दीपक घृत बाति अनल बिनु ज्योति बरत नित रहत अंजोर ॥ ३ ॥ काम क्रोध जहं

सलस नहींहै विषय वायु नहिं करत झकोर ॥ ४ ॥ नूर जहूरझरतहै झला झल नहि तहं आसचास जगघोर ॥ विश्वरूप गुरु गम्य अगमहै लखे मिटै मायाकृत घोर ॥ ५ ॥ खेमटा ॥ सुरतिया लागि रही हरि ओर ॥ बिषयबिवस जनिलावो भोर ॥ १ ॥ सुरति निरत जोप्रान करतुहै टूटिजात मनकर सब जोर ॥ २ ॥ ज्ञानध्यान यह महा रतनहै ताहि हरत नहिं कबहूंचोर ॥ विश्वरूप हिय मगन भयोहै मेटि गयउ सब जगकी खोर ॥ ३ ॥ भैरवी ॥ वेद वेद्यराम चन्द्रहरे प्रभो गहो मन ॥ माधो केशो बंशीधर हरि गोसुरनन्दन पीतांबरधर ॥ चापपाणि भव मोचन सियवर ॥ १ ॥ सिद्ध महीधर केसि निसूदन गोप बाल सर्वेश्वर श्रीपति शोक निकन्दन जग जीवन कर ॥ २ ॥ श्रीश गदाधर जग बंदन प्रभु पारब्रह्म अखिलेश्वर निधिपति फन्दनि कन्दन मुकुंद मुरदर ॥ ३ ॥ भवभय भंजन तेज रासि बर अविनाशी अज परशुराम मधु सूदन जनमन मोहन भय हर ॥ ४ ॥ बुद्धि सुखा कर परम पुरातन लोक नाथ बिश्वेश्वर बसु पति काली मर्दन नारायण नर ॥ ५ ॥ सत्य दया निधि अकल समीरण हंस बंशईनेश्वर सत पत्तिकर्दम नन्दन बिश्व रूप पर ॥ ६ ॥ भैरवी ॥ नन्द सुवन भुवन विदित शोक को हरैया ॥ चलत चाल अति रसाल राजित छबि दृग विशाल बाल केलि करत हरत जन मन सुखद दैया ॥ १ ॥ सजल अमल कमल चारु सरिस बदन छबि अपार राजित रद शोभा पर अधर अरुन छैया ॥ २ ॥ शरद चन्द मन्द हास फन्द उदधि घटज रासि बोलत बर बैन सेन साधु उर बसैया ॥ ३ ॥ माता सुधि बिसरि गई निरखत दृग ताहि टरी सुख अगार अटके मन चित्र सम रहैया ॥ ४ ॥ करत केलि प्रभु अपार मुनि जन मन बन बिहार धरणि भार हरण शरण दीन दुख हरैया ॥ ५ ॥ शंकर अज देव नाथ आवत नित अमर साथ गावत प्रभु गाथ हाथ जोर परे पैया ॥ ६ ॥ ब्रज जन भये अति अशोक जैसे रवि निरखि कोक कमठ अंड सरिस नन्द लाल उर सुहैया ॥ ७ ॥ विश्व रूप मन सुचारु राजित ब्रज बर बिहार बिहरो निशि बार काम कन्स को नसैया ॥ ८ ॥ राग परज ॥ मन रे अब निज रूप निहारो ॥ जेहि देखे जग होत सपन सम भानु निकर उजियारो ॥ १ ॥ अगम अविद्या रजनि नसानी ज्ञान बिचार अपारो ॥ बिगसे सरीज भये मुकुलित अति मुकुंद दुसह दुख भारो ॥ २ ॥ चकई बुद्धि मिलत प्रिय पिय सों छुटो है वियोग बिकारो ॥ बिश्व रूप पुरण जग माहीं चारु खानि बिस्तारन हारो ॥ ३ ॥ राग परज ॥ गहु मन अजहुं शरण रघु

वरकी ॥ दीन बंधु प्रभु जगहित कारक जीवन धन अति निशि दिन हरकी ॥ १ ॥ ढार पाई जिमि नीर ढरतु है तैसे कंतजु धन जन ढरकी ॥ यह तन की कछु अवधि न दीखत नदी कूल जिमि गति तरुवर की ॥ २ ॥ दामिनि दमक चमक जिमि थिर नहिं अयसो परखो भोग अमर की ॥ तामहं हेतु करत निशि वासर सुधि नहिं काल कराल कुसरकी ॥ ३ ॥ सोचन को अवसर भल पायो दुर्लभ साज लहेउ नर तनकी ॥ विश्वरूप जगदीश हेतु कर छोडु तुरित मन आश अपरकी ॥ ४ ॥ राग परज ॥ कहत पथिक रघुवरहि निहारी ॥ श्याम वरण छवि अति अतुलाई विधि निज करतें सवांरी ॥ १ ॥ अति सुकुमारी संग वर नारी शोभा अति रुचिकारी ॥ शरद चन्द्रिका रुचिर चन्द्रके सरिस वदन उजियारी ॥ २ ॥ गौर वरण मन हरण निरखि छवि नैन पलक दियो टारी ॥ सुनि अद्भुत छवि देखन आये ग्राम नगर नर नारी ॥ ३ ॥ कंटक कुश वन धरणि विकट अति कैसे को चरण मगु धारी ॥ विश्व रूप सब कहत परसपर धन्य जनक अरु धनि महतारी ॥ ४ ॥ परज ॥ अवलों भुलानो अवना भुलैहों ॥ गुरु प्रसाद तें निशि दिन अनुछन हरि महं प्रीति लगैहों ॥ १ ॥ चाह दाह उर मांह घनेरो वरि विचार वुतैहों ॥ मोह जाल परिवार अनेकन्ह करि प्रभु सुरति नचैहों ॥ २ ॥ जग वन दाव अनल चहुं दिशि अति तामह पगु नहि दैहों ॥ मोर तोर दुख सागर परि हरि त्रिकुटी भवन वनैहों ॥ ३ ॥ पाप पुन्य करिके हरि गण दोउ ताके वीच न जैहों ॥ अमृत रस करि पान निरंतर लहि सुख मोद वढ़ैहों ॥ ४ ॥ मन अति चपल फिरत जहं तहं नित ताको वेग घटैहों ॥ विश्व रूप निज रूप अजायेव पुरुष एक समैहों ॥ ५ ॥ परज ॥ विनु रघुवीर न वरनि नसाई ॥ यह जग जाल कराल दुखद अति छूट न अवर उपाई ॥ १ ॥ ध्रुव प्रहलाद अंवऋषि नारद सनकादिक समुदाई ॥ राम नाम रस अमिय पान करि विहरत शोक विहाई ॥ २ ॥ वाल्मीकि घट संभव मुनिवर जपेउ नाम मन लाई ॥ ज्ञान भवन सुख रूप भयो है चहुं दिशि कीरति छाई ॥ ३ ॥ अजहूं मानु जानु हित अपनो छोंडो आस पराई ॥ विश्वरूप सुख सिंधु दानि हरि केवल गहु शरनाई ॥ ४ ॥ राग खेमटा ॥ रघुवर केहि अपराध विसारे ॥ जो प्रभु धर्म शील कहं तारत ऐसी वानि तुमारे ॥ तो कत वेद पतित पावन प्रभु ऐसो विरद उचारे ॥ १ ॥ गीध कवन सम दम व्रत कीन्हो गनिका का तपधारे ॥ अजामील द्विज वंधु कुमगु रत ऐसो अधमन्ह तारे ॥ २ ॥ निर्वल केवल

आपु दयानिधि निरधन धन हित कारे ॥ आरत सहि न सकत जन की प्रभु हर गिरि तें अति भारे ॥ ३ ॥ केवल नाथ भरोस तुमारो तजि जग द्वन्द अगारे ॥ बिश्व रूप प्रभु वेगि दया करि हरो मोह मद मारे ॥ ४ ॥ खेमटा ॥ करम गति कहि नहिं जाई ॥ करम डोरि बंधन अनादि के फंसेउ भुवन समुदाई ॥ १ ॥ तेज पुंज गुण खानि दिवाकर शशि छवि खानि सोहाई ॥ अमित कल्प वीते भरमत नभ अजहुं न नेकु थिराई ॥ २ ॥ यदपि शेष सर्वेश सनातन महिमा बल बिपुलाई ॥ धरणी भार धरत शिर पर नित सकत न फन्द छोड़ाई ॥ ३ ॥ नयन कोर जो जग लय कर हर विदित अमित प्रभुताई ॥ भिक्षाटन कपाल कर डोलत भवन मसान बनाई ॥ ४ ॥ जो बामन जगदीश तीनि पद कीन्हे भुवन निकाई ॥ बिश्व रूप बलि द्वारे ठाढ़े गहन करम तें बंधाई ॥ ५ ॥ परज ॥ पढ़ि वेद जित बन हारे ॥ बांची वेद गही नहिं सांची चलत कुमगु निशिबारे ॥ १ ॥ फूलोहे फूल फल लागत नाहीं समुझि होत दुख भारे ॥ मन पतंग बसि काम पवन के धावत विषय विकारे ॥ २ ॥ निरखत भोग जगत के मृग जल छल जल बाढ़ि करारे ॥ बिश्व रूप तेहि नेह लगायो तजि हरि नाम पियारे ॥ ३ ॥ परज ॥ अब की बार कहां हित हेरी ॥ सुत वित गेह सनेह सजन की जैसे जल गति पुरइनि केरी ॥ १ ॥ करम गहन बन घेर दहन कि पैहो दुसह दारुण दुख फेरी ॥ बिश्व रूप गहु गुरु पद सुख निधि बचिहो न आन उपाय घनेरी ॥ २ ॥ परज ॥ जय जय दीन बंधु रघुराई ॥ ब्रह्मादिक सुरगण मुनि जेते अस्तुति करत पार नहिं पाई ॥ १ ॥ धन जन रूपतें नाहिं मिलत हरि एक भक्ति तें होत सहाई ॥ २ ॥ गज को बिभव कछू नहिं आहि आरत जानि कर प्राण बचाई ॥ ३ ॥ सब गुण युत द्विज भक्ति विमुख होयतेहि तजि भक्त स्वपचते मिताई ॥ ४ ॥ हे व्यापक अज निर्विकार हरि निज जन हेतु रूप प्रगटाई ॥ बिश्व रूप रघुबर कृपाल प्रभु वेगि हरो मन की कुटिलाई ॥ ५ ॥ राग परज ॥ देखो रे हरि बिनु जीव दुखारे ॥ ॥ परे ओट मति खोट भुलाने नाना भेद बिकारे ॥ निज स्वरूप सुखरूप सनातन सत् चित् वेद पुकारे ॥ ताहि न गहत बहत माया बस कामी काम कुधारे ॥ १ ॥ यह तन क्षणिक नित्य करि मानत अहमिति रथ पगु ढारे ॥ नेकु थिरात न भ्रमत दिवस निशि झूठे बिषय पसारे ॥ २ ॥ सुत प्रिय वचन सुनत हरषे उर तीय सो प्रीति अपारे ॥ धन संचत बहु भांति यतन करि अंत होत सब न्यारे ॥ ३ ॥ करुणासिंधु बसत घट भी-

तर अजहूं चेत गवांरे ॥ विश्वरूप अंतहु पछतैहो जब जैहो यम द्वारे ॥ ४ ॥ भैरो ॥ चलत अंगनवां रघुवर चाल ॥ दधि ओदन मुख मेल पठाये चितवत तिरछे नैन विशाल ॥ १ ॥ बोलत श्याम मनोहर बानी सुनत सभै जन होत निहाल ॥ २ ॥ लषन भरत संग सोहत शत्रुहन पैजनियां पगु देत हैं ताल ॥ विश्वरूप पितु मातु मगन भये लूटत रंक धनद जिमि माल ॥ ४ ॥ राग भैरो ॥ पुरि कमाई जग में तासु ॥ श्रवण कथ रस पान करत नित जीह निरंतर नाम प्रगासु ॥ १ ॥ नैननतें हरि रूप निहारे शीस नवावे हृदय हुलासु ॥ करजोरे नित वंदन करई प्रेम प्रीति कबहूं न अयासु ॥ विश्वरूप सतगुरु बलिहारी राम चरण महं जेहि नित वास ॥ २ भैरो ॥ नाथ अजहु मोहि करहु उवार॥ नाथ मान कर नाथ दया करो नाथ न हो प्रभु अरज तुम्हार ॥ १ ॥ वनज नयन होवनज हित राजित वदन वनज रिपुसत रुचिकार ॥ २ ॥ लक्ष्मी पति लक्ष्मी सागर प्रभु सब लक्षण गुण केर अगार ॥ ३ ॥ विश्वरूप प्रभु देखु दया करि केहि अपराध न सुनत पुकार ॥ ४ भैरो ॥ हरि इच्छा को मेटनिहार साहेब एक अहै करतार ॥ १ ॥ जो इच्छा सों करत दयानिधि दीनबंधु प्रभु परम उदार ॥ २ ॥ जो सिरजत पालत सबही को हरत सभै प्रभु कृपा अगार ॥ ३ ॥ जिनकें जस मति देत कृपानिधि तिनके उर तस बसत विचार ॥ ४ ॥ सकल कामं फल दाता रघुवर हय निर्लेप जगत आधार ॥ ५ ॥ भक्त हेतु प्रभु वपुधरि प्रगटत लीला करत सकल सुखसार ॥ ६ ॥ प्रणत पाल प्रणतारतमोचन गावत वेद लहत नहिं पार ॥ विश्वरूप शरणागत आये पाहि पुकारत तुमरे द्वार ॥ ८ ॥ राग परज ॥ आनन्द रस पियो मनुवां हमारे येहिमें मगन रहो निशिवारे ॥ १ ॥ जो रसपान किये सनकादिक मेटेउ सकल जगत के भारे ॥ विचरत सदा सकल लोकन में नहिं कछु गहत हैं हर्ष विकारे ॥ २ ॥ पिय शुकदेव लहेउ सुख सागर मेटेउ हानि लाभ टकसारे ॥ यह रस को महिमा जानतु है शंकर शिवा पिये यकतारे ॥ ३ ॥ काग राज पीयउ मन लाई जीतेउ माया काल कुचारे ॥ जो पीवे सो युग युग जीवे निज सुखतें गावत श्रुति चारे ॥ विश्वरूप यह रस हिय आवे जब रघुवर पद करै कमारे ॥ ४ ॥ रागभैरो ॥ नहिं वनयोग अहै रघुवीर सुनत मवन वन सभै अधीर ॥ १॥ भयेउ अवधपुर महं पछितावा लागेउ कठिन हृदय तिमितीर। नर अस नारि सकल पुरवासी भूख नींद नहिं कछुक शरीर ॥ २ ॥ विना खबरि सब जहां तहां डोलत जैसे चलदल पत्र समीर ॥ हा विधि तोकहं

अस न चाहिये राम वियोग देन दुख पीर ॥ ३ ॥ विश्वरूप प्रभु बिना विकल भये यथा फणिक मणि बिनु नहिंधीर ॥ ४ ॥ भैरो ॥ त्रिकुटि भवन वां पियावसे मोर ॥ बिना सूर शशि अनल अंजोर ॥ १ ॥ नहिं उपजे नहिं विनसे कबहूं आवत जात न कवनिहु ओर ॥ रात दिवस तहं होत कबहुं नहिं संध्या नहीं होतहै भोर ॥ २ ॥ आनन्द झरत एकरस निशि दिन सुरति करै जिमि चन्द चकोर ॥ निरखि स्वरूप मगनभये मनमहं सहजे मिटे सकल भ्रमथोर ॥ ३ ॥ विश्वरूप धनि सोई सोहागिनि त्यागि सकल पिय चरण निहोर ॥ ४ ॥ भैरो ॥ ज्ञान खड्ग लेइ निशिदिन जागो बीर भावरस मनुवां पागो ॥ १ ॥ समदम फौज करो तैयारी, धीर धरो रनते नहिंभागो ॥ काम क्रोध दोउ रिपुकों मारो करिले राज सकल भय त्यागो ॥ २ ॥ सुभग विचार प्रजाके बसावो छोडु सकल चित कलिमल दागो ॥ रामको नाम सुधारस पीयो तोरो वेगि जगत को धागो ॥ ३ ॥ विश्वरूप जनि गाफिल परियें रामचरण करो दृढ़ अनुरागो ॥ ४ ॥ राग भैरवी ॥ कन्हैया मो से होत न राजीरे ॥ चहुं दिशि ढूंढत नहि कहुं पायो मधुबन भाजीरे ॥ १ ॥ चलहु मनावन सखि सब हरिको भूषण साजीरे ॥ विश्वरूप मुरली मोहन की सखि कहुं वाजीरे ॥ २ ॥ रागभैरवी ॥ भोरहिं श्याम न आवतरे ॥ श्याम मिलन को चितमैं चहतिहों इत सखि मोहिन भावतरे ॥ २ ॥ अबतो प्रीति कियो राधे सो कुंजन केलि रचावत रे ॥ विश्वरूप यशुमति लालन की चितवनि चितहि चुरावतरे ॥ २ ॥ भैरवी ॥ मधुबन श्याम बुलावत रे ॥ लाल अधर मोहन के चहतिहों कित मगु कौन बतावतरे ॥ १ ॥ वंसीराग रुचिर मे हनको वरबस मनहि नचावतरे ॥ विश्वरूप बहु यतन करतिहों धीरज नेकु न आवतरे ॥ २ ॥ भैरवी ॥ कन्हैया तेरो छवि दृग लागीरे ॥ कुसुम कमान बान तें वेधे विरहते पागीरे ॥ १ ॥ जलज नयन छवि अयन हरत मन सब निशि जागीरे ॥ विश्वरूप हरि कुंजन विहरो यह बर मांगी रे ॥ २ ॥ भैरवी ॥ कन्हैया मोहि दीन्ह बिसारीरे ॥ गये परगेह सनेह बढ़ायो सुधि न हमारीरे ॥ १ ॥ जेहगिरि वन महं केलि कियो है श्रीबनवारी रे ॥ विश्वरूप सो थल निरखे तें दुख डरभारीरे ॥ २ ॥ भैरवी ॥ भोगहि योग न भावतरे ॥ गंग यमुनको धार दुरायो जलकन ओर्घपिवावतरे ॥ १ ॥ नित नह नेह करत कुबरी सों रचि रचि योग पठावतरे ॥ विश्वरूप असमति मोहन को सखि अब कौन छुड़ावतरे ॥२॥ भैरवी ॥ सो कहि योग दुरावत रे ॥ जाइ इंगल पिंगल सुख मन घर सों छन छन वोध जगावत रे ॥ १ ॥ जाइ

गगन विच भवन बनावो जेहि थल काल न आवतरे ॥ विश्व रूप धुनि होत गगन में निशि दिन मनहि बसावतरे ॥ २ ॥ भैरवी ॥ जोकाहिं श्याम निहारतरे ॥ श्याम हरत मन तुरित ताहि को बरबस जादुहि डारतरे ॥ १ ॥ काहु कहोंसखि छबि आनन को विधि उर शोच पसारतरे ॥ विश्वरूप भूषण मोहन को छबि रवि कोटिन्ह वारत रे ॥ ३ ॥ राग भैरवी ॥ गति यांलखि नहिंजाई तेरो हे श्यामा दृग चपलाइ रहत मन आइ मेरी ॥ सजल पयोद सरिस तन राजे अंग अंग कमनीय कांति मनोहर निरखि मनोभव सकुचि सकुचि रहे होय उपमा में किन को गाइ ॥ १ ॥ गौ चरावन जात बृन्दावन ग्वाल बाल संग लोय ऐसे मीन बिना जल प्यासे तलफि तलफि तजेजीय तुमने मोहि जादु लाइ ॥ २ ॥ विश्वरूप मोहन बनमाली जीवन धन ब्रज तीय ॥ बदन कंज मकरंद मधुप मन हरषि हरषि सोइ पीय ॥ बरना मोहि सोहाइ ॥ ३ ॥ राग भैरवी ॥ उपमा कहि नहि जाइ तेरो हे रामा छबि रुचिराइ सुखद चित छाइ तेरो ॥ लखन सहित विहरत करुणा निधि नट बर साज करीय ॥ चितवनि मन भावनि अति सोहै पुलकि पुलकि उठेहीय ॥ सरसिज नयन सोहाइ ॥ १ ॥ सघन सोहावन बन विहरत हरि करशर धनुष धरीय ॥ बनचर जाति निरखि छबि हरिके झुकि झुकि चरण परीय ॥ दृगन तें पलक टुराइ ॥ २ ॥ विश्वरूप सुखरूप सनातन जनम न कंज अलीय ॥ करि हरि कृपा दरश मोहि दोजे बलि दुख दोष दलीय ॥ अविचलि तेरो प्रभुताई ॥ ३ ॥ राग भैरवी ॥ सुखमा अति अतुलाइ तेरो हे शंभो ॥ छबि ललचाइ रहत मन जाई तेरो ॥ कुंद कपूर सरिस तन राजे गल माला अहिकीय ॥ कर डमरू धुनि रुचि कर सोहे सुनत सुनत सुख होय ॥ दुख दर्शन तें नसाइ ॥ १ ॥ वाम अंग गिरजा अर्द्धंगी शोभा अति रमणीय ॥ शीसगंग रुचि चन्द्र मनोहर भालपट ल छबिदीय ॥ भसम सुअंग सोहाइ ॥ २ ॥ विश्वरूप जगदीश निरंजन जनहित रूप धरीय ॥ बेगि द्रवो करुणा गुणसिंधो तारेउ विपुल अघीय ॥ मेरी सुधि क्यों बिसराइ ॥ ३ ॥ राग भैरवी ॥ कन्हैया संगयारी नाले होरी ॥ यावंशी मेरो सरवस खोयो जादू कियो गिरधारी ॥ १ ॥ तबसों सुधिबुधि सब हरि लीन्हों नहि सोहात घर बरी ॥ २ ॥ विश्व रूप ब्रज लाल सांवरो हंसि हरि मोहि निहारी ॥ ३ ॥ राग भैरवी ॥ कउल दियो टारी न ऐहेरे ॥ कंत समैया हरि बिछुरायो पाछिल नेह बिसारी ॥ १ ॥ अब तो कन्हैया सुखसों सोयो राज काज भयो भारी ॥ २ ॥ विश्व रूप बिधि सब सुख खोयो पर बस

भयो वनचारी ॥ ३ ॥ राग ठुमरी ॥ हमारे मन साथै लई चितवनि ऐसी छलियां ॥ अमल अभंग बाल रविकेछवि कुंडल झलक नई ॥ बोल अमोल कलोल केलिवर मनसिज कोटिनई ॥ १ ॥ अचल प्रताप राज्ञ सब दिशिभये कीरति तेज मई ॥ दशरथ लाल कृपाल नृपति भये सब दुख दूरिगई ॥ २ ॥ चाहत निहारि निहारि नारि सब विधि सुख अवधि दई ॥ बिश्वरूप सुख धाम मिलो हरि जीवन सुफल भई ॥ ३ ॥ ठुमरी ॥ हमारे ब्रज वाते नई सुनि आई सब सखियां ॥ नवल किशोर श्याम छबि छायो पटरत बिधि न दई ॥ कमल कुरंग मनोज लज्जित भये कोउ सनमुख न भई ॥ १ ॥ रैनि व्याज रविजाय छपित भये शशि तन छीनभई ॥ बाल तमाल सघन बनमह गये तजि घन सघन रई ॥ २ ॥ कलमद त्यागि मैान भये कोकिल जल निधि खार मई ॥ बिश्वरूप यदुलालन के सम कविगण बचनगई ॥ ३ ॥ ठुमरी ॥ निहारी मन आपमई छांड़ि कपट मतियां ॥ अपने आपु आपुमह मिलि गये पुरण रूप भई ॥ सब जल सिंधु सिंधु सब जल भये निज पर भेद मई ॥ १ ॥ जग मग ज्योति अगम उर छायो छन छन पुलक नई ॥ बिश्वरूप पूरण सुखपायो गुरु पद अलख दई ॥ २ ॥ ठुमरी ॥ बिचारे बिनु सांचिभई देखो खोलि अब अंखियां ॥ बांझ किशोर चापशर करलिये बिहरन विपिन गई ॥ करि मृगया मन मोद बढ़ायो गर्भ न जन्म लई ॥ १ ॥ धाइ बचन बाल सुनि बिहरे मन अनुगम दई ॥ बिश्वरूप जग अंध वंध्य वस मनकियो विपय मई ॥ २ ॥ ४ ॥ ठुमरी ॥ का करव सांवर बहुसंगिया ॥ ना सुने कहल हमारि सखि रे ॥ मंद हसनि मन रीच नीरे शोभा अति सुचिकारि ॥ कर मुरली मुखमें दियोरे अपना बसकरिडारि ॥ १ ॥ चन्दकिरनि मन मोहनीरे सोहे उर उजियारि ॥ बिश्वरूप जलना भरव हो यमुना हरि रखवारि ॥ २ ॥ ठुमरी ॥ ना सूझत रघुवर बिनु अंखियां ॥ को सहे विरह कटारि सखि रे ॥ श्याम वरण मन मोहनी रे जैसे घन युतवारि ॥ मुख की शोभा को कहै रे मदनामित छबिधारि ॥ १ ॥ व्याज बिपिन सुख मोचनी रे कीन्हो बिधि बन चारि ॥ बिश्वरूप अब ना जियब हो बिछुरे प्राण हमारि ॥ २ ॥ ठुमरी ॥ ना डरत छन छन मन रंगिया ॥ का कहो बहुत पुकारि हारिहो ॥ काम कपट पटमोहनीरे ओढ़े रंग सवारि ॥ विपय भवन बसि बीहरे हो सखियां संग सुधारि ॥ १ ॥ प्रीति चरण भयमोचनी हो दीजे उर रखवारि ॥ बिश्वरूप प्रभु ना बचब हो शरण भरोस बिसारि ॥ २ ॥ ठमरी ॥ लखत रहहिं सख कर छबि अंखियां ॥ नाटरे सुरति हमारी हर

हो ॥ चन्द गरल शुभ सोहनी रे गंग जटा दुखहारि ॥ अहि भूषण डमरू लिये हे गिरिजा वाम पियारि ॥ १ ॥ कुन्द बरण मन मोहनी रे कोटिन रवि उजियारि ॥ विश्वरूप उरमे बसो अदशोक हरण त्रिपुरारि ॥ २ ॥ ४ ॥ ठुमरी ॥ भजो हरिहो काम कोटारी ॥ हृदय नयन उघारि देखो जगत दुख कारी ॥ ताहि मांह सनेह लायो विषय रुचि भारी ॥ १ ॥ शुभ अशुभ जंजीर तोरो बैठु घरहारी ॥ अलखरूप अनूप निरखो मोहमदजारी ॥ २ ॥ विश्वरूप विचार देखो विदित दशचारी । विना राम दिनेश तेरो उर न उजियारी ॥ ३ ॥ ठुमरी ॥ लखो छवि हो रामको न्यारी । दृग विशाल कृपाल प्रभु के कंज रुचि धारी ॥ १ ॥ श्रवण कुंडल चपल राजे कुटिल कच कोरी । तिलक भाल भूपाल मणि के भानु उजियारी ॥ २ ॥ रुचिर बसन अमोल सोहे वाम सियप्यारी ॥ विश्वरूप सरूप हरिको ध्यान भयहारी ॥ ३॥ ठुमरी ॥ चलो सखिहो श्यामके वारी ॥ शीत मन्द सुगन्ध सोहे छायोपवन गति न्यारी ॥ कुंज कुंज अनूप सोहे कुसुम रुचि कारी ॥ १ ॥ देखि छवि सुर राज मोहे चकित चितभारी ॥ करत केलि मनोज मदके मथन वनवारी ॥ २ ॥ रुचिर बोल अमोल सखिरे बिबस करिडारी ॥ विश्वरूप हमेस मनको हरत गिरधारी ॥ ३ ॥ ठुमरी ॥ लखो गतिहो ज्ञानको न्यारी । सुरति देत बिसारि तनके दशा मतवारी ॥ निज सरूप असंग विहरै जलज जिमि वारी ॥ १ ॥ ज्ञानके हरि झपटि छन में लपटि नख डारी ॥ लोभ मोह मनोजगज को अमित दल डारी ॥ २ ॥ विषम भेद कुभाव जगको कुमति मति टारी ॥ विश्वरूप अंदेश छूटो अभय वनचारी ॥ ४ ॥ ठुमरी ॥ यशोमति वारो देखो रावरो कन्हैया मटुकि पटकि पट छीन लियोहै ॥ देतहै गारी कहा माने न हमारी कछु बरजेवनेकी परत हो पैयां ॥ १ ॥ आलिके वचन सुनि यशोमति मन गुनि बिहंसि मवने कछु उतर न दैया ॥ २ ॥ विश्वरूप लखि भइहै मगन सखि ॥ भरीहै पुलक जल नयनन छैया ॥ ३ ॥ ठुमरी ॥ हरो मन मेरो प्यारो सांवरो कन्हैया लटकि भवर मुख कंज दियोहे ॥ दृगसो निहारि हंसिमोहि बनवारी सखि ॥ तबसों ठगोरीघर न सोहैया ॥ १ ॥ शशिको निहारी जैसे तरु को पुलक भारी रविसों जलज पुलकावलि छैया ॥ २ ॥ विश्व रूप ऐसो छवि पट तर कैसो ॥ विधि मति छीन लियो ब्रज के बसैया ॥ ३ ॥ २ ॥ राग टोड़ी ॥ अंग छवि छाये घन नन्द के किशोर हे ॥ मधु पुर नर नारी नयन पलक टारी हृदय निहारि बोले कैसे चित चोर है ॥ १ ॥ कोटि कोटि सुर सोहे निरखि मनोज

मोहे ब्रज को सुभग ऐसो विधि सो निहोर है ॥ कमल नयन श्याम संग सोहे बलराम आये धनुमख जहां नृप को बटोर है ॥ २ ॥ मल्ल को पछारि मारे खल नृप नास डारे खंड खंड धनु तोरे जैसे तृन कोर है ॥ कन्स को झपटि मारे धरणि को भार टारे विश्व रूप छायो यस ऐसो शिर मोर है ॥ ३ ॥ राग टोड़ी ॥ संग दोउ आये वन मुनि के किशोर है ॥ एक संग सोहे नारी मुख छवि अति भारी मोहनी मनोज नारी रवि सो अंजोर है ॥ १ ॥ सुनि के पुलक छाये मिलने को मुनि आये नयन सनेह जैसे चन्द से चकोर है ॥ चित्र कूट के निवासी मुनिवर तपरासी भयो है मगन देखि जैसे घन मोर है ॥ २ ॥ पुर जो पथिक ग्राम लखि प्रभु छवि धाम करत अंदेसो कैसो जनक कठोर है ॥ विश्व रूप सुरनाथ कहैं पगु धरि माथ रघुवीर वेगि हरी भार चहुं ओर है ॥ ३ ॥ २ ॥ राग वहार ॥ श्याम हमारा भावरी ॥ सुख दाइरी वसन्त सुहावनो ॥ फुलवा फूले वन भवरा लोभेले ठौर ठौर गुन गावरी ॥ १ ॥ रुचि सह कार वहारि मोरिलो कुसुमा कर छवि छावरी ॥ २ ॥ विश्व रूप व्रज वंसिया वजायो सुनत भई हम बावरी ॥ ३ ॥ वहार ॥ राम पियारा आवरी सुख दाइरी वसन्त पंचमी ॥ बगिया फूले घन वनवां फूलेलो मधुप मधुर धुनि छावरी ॥ १ ॥ मोतिया घने घन धनवां लुटायो अवध प्रेम वसवावरी ॥ २ ॥ विश्व रूप दशरथ के छवीलो हांसि हेरै करि भावरी ॥ ३ ॥ २ ॥ राग होरी ॥ आजु की वारी मानि क्योंन लेरे कान्हा ॥ विनति करों मैं पायन करि के जनि कस्त मोते रारी ॥ यदुनन्दन बरजो लरिकन्ह को राखहु लाज हमारी ॥ १ ॥ जिन डारो रंग मोहन मोपर भिजजेहे रंग सारी ॥ हमतो जेहैं अपने भवन को छोडु डगर गिरिधारी ॥ २ ॥ सुनत सखी कर बचन मनोहर तिरछे नैन निहारी ॥ विश्व रूप वरजो नहि माने श्याम दियो रंग डारी ॥ ३ ॥ होरी काफी ॥ हाल की सारी फारि काहे दीन्ही कान्हा ॥ फागुन मस्त बाल संग परिके बाउर बोलतु ह्मारी ॥ लाज न सहिहों तोरे संग वसि के होइहे हांस हमारी ॥ १ ॥ तजदे कुवाद वाद अब मोहन छोडु घाटर वारी ॥ हमतो यमुन जल जैहैं भरन को जिन रोको गिरधारी ॥ २ ॥ नन्द नगर कोइ नृप ना वसेरे जो करो नेति विचारी ॥ विश्व रूप हरि हेरि नयन सों हंसि दीन्हो बनवारी ॥ ३ ॥ होरी ताल जलद ॥ कान्हा खोरि में करत रंग बोरिरे ॥ जात रही हम कुंज भवन महं जहां रहत पिय मोरिरे ॥ बीचहि महं अस हाल कियो सखि यदुनन्दन वर जोरिरे ॥ १ ॥ मुख में दियो है गुलाल लगाइ

रतन हार लियो छोरिरे ॥ काह कहों मैं नन्द नगर महं होत धूम चहुं ओरिरे ॥ २ ॥ अति उत पात करत ब्रज बालक कर गहि देत मरोरिरे ॥ विश्व रूप मोहन मतवारे रंग मचावे ब्रज होरिरे ॥ ३ ॥ होरी ताल चलद ॥ कान्हा चोरि सो हरत पठ मोरि रे ॥ जाय सखी हरि यमुन पुलिन में नागर बाल बटोरिरे ॥ सब ग्वालिनि पट छीनि लियो हरि गर भूषण दियो तोरिरे ॥ १ ॥ जल में कियो है कलोल कन्हाई संग सोहत बल जोरिरे ॥ काह कहों मैं नट नागर सखि धूम रचो हरि होरिरे ॥ २ ॥ कबहुं कदम चढ़ि जात कन्हाई जल बिच परत झकोरिरे ॥ विश्व रूप सखि यशुमति बारे हंसि हंसि हाथ मरोरिरे ॥ ३ ॥ होरी काफी ॥ वृन्दावन पावन श्याम लोभाये ॥ चहुं दिशि गुंजन पुंज भवंर को सुख सागर धुनि मोद बढ़ाये ॥ १ ॥ कर पिचुकारी अबिर कुम कुमा भरि कानन रंग नभ चहुं छाये ॥ विश्व रूप के प्रभु हंसि हेरत बसत बाग होरि कान्ह मचाये ॥ २ ॥ होरी काफी ॥ वृन्दावन लालन फागु मचाये ॥ चलो सखि देखन नन्द कुवंर को छवि सागर शत काम लजाये ॥ १ ॥ उड़त अरगजा गुलाल कुम कुमा मन भावन सुख अमित सोहाये ॥ विश्वरूप के प्रभु मन मोहन चहत साथ मोहि नाथ बोलाये ॥ २ ॥ होरी जंगला ॥ काहे को नेह लगाइ रे माई नन्द के बाना ॥ नेह लगाई मोहनी डारे कान्ह कान्ह चित छाई ॥ १ ॥ नेह बढ़ाई सांवरो मोहि विश्व रूप बिसराई ॥ २ ॥ होरी जंगला ॥ काहे को प्रेम बढ़ाई रे माई नन्द के बाला ॥ प्रेम बढ़ाई द्वारिका बैठे श्याम बाम अरुझाई ॥ १ ॥ घर न सोहाई बावरी कीन्हो विश्व रूप सुखदाई ॥ २ ॥ होरी ॥ लाल कुचाल न धारो ॥ अब बोलो न निलज देहों गारी फोरि देहों घट भारो ॥ नन्द बारोन नजरि लेहों तोसे लूटि लेहों धन प्यारो ॥ १ ॥ रंग बोरो न बिगरि जैहे सारी छूटि जैहे रंग सारो ॥ विश्वरूप प्रभु पैयां गहत हों चंचल दृगन निहारो ॥ २ ॥ होरी ॥ लाल कुचाल न प्यारो ॥ संग जोरो न बिछुरि जैहो मोसे छोड़ि देहो मतवारो ॥ रंग डारो न नजरिला बो मोसे खेंइ दे हो पटसारी ॥ १ ॥ हंसि बोलो न बिगरि जैहे माधो मोहि देहो दुख भारो ॥ विश्वरूप प्रभु अरज करत हों मोहन हंसि न निहारो ॥ २ ॥ होरी धीमाता ॥ होरि खेले रि मोहन धायधाय ॥ खेलत रंगसंग ग्वालन ले ब्रजवासिन सो जाय जाय ॥ १ ॥ डारे अबीर तीर यमुना के पिचुकारिन रंग लाय लाय ॥ छीनत विश्वरूप भाजन को दधि ग्वालिनि के खाय खाय ॥ २ ॥ होरी धीमाता ॥ प्यारि अबीर मोहन पांय पांय ॥ हेरत श्याम

बाम नयनिनकों, बनमालन को लाय लाय ॥ १ डारत रंगसंग सखियन्ह के घने वुन्दन सों छाय छाय ॥ हेरत बिश्वरूप लालन को सखि रागन को गाय गाय ॥२॥ होरी ताल जलद ॥ कान्हा तोरि भारि नजरिया कवन बिधि टारों ॥ तोरि नजरिया अंग में लगोरि, मोरिहाल निहारो ॥ १ ॥ नन्द किन- गरिया रंग से भरोरि मेरी काह पियारो ॥ विश्वरूप प्रभु संग में वसोरी चेरीश्याम तुम्हारो ॥ २ ॥ होरी ताल जलद ॥ कान्हातोसे हारी नगरिया कठिन नन्द चारो ॥ तजब नगरिया भवन बसो रि घेरी राह हमारो ॥ १॥ चटक चुन्दरिया रंग सो भिजोई मेरी सान बिगारो ॥ बिश्वरूप प्रभु हंसि के मिलोरी दे दृग श्याम निहारो ॥२॥ होरी जंगला ॥ आजु नारंग लालरे मै तो छांडोंगि अबिर गुलाल सैंयां ॥ पिय तोरे बैन सोहावन लागे चाहे चित निशबार ॥ जारो काम मिलि होरी खेलो राखो नाथ करार ॥१॥ अपनो भवन सोहावन लागे ज्योतिन्ह की उजियार ॥ बिश्वरूप हरि होरिमचायो छूटी लाज हमार ॥२॥ होरी जंगला ॥ छाडिदे जंजाल रे जो पेवाहो रि लालगुलाल सैंयां ॥ आवो भवन पिया फागुन आयो होरीके दिन चार ॥ डारो रंग संग होरिखेलो लागी आस हमार ॥१॥ केस सवांरि सिंगार बनायो लाखों की गल हार ॥ बिश्वरूप प्रभु मिलिरंग खेलो लागे फागु बहार ॥२॥ राग होरी जंग- ला ॥ नाहकरे मोहि रंग से भिजोई। आवन सुनिके श्याम डगरिया हो छाडि मिलेहिय नाहकरे ॥१॥ आजु चले हो श्याम नजरिया हो देहो नयनाजिय डांहकरे ॥२॥ विश्वरूपप्रभु न जैहों संगियातू ग्वालिनिचित चाहकरे ॥ ३ ॥ राग होरी जंगला ॥ सांवन रे मोरिअंखियां लगोई ॥ मोहन चितवो हंसि के नजरिया हो किये जियराके बावलरे ॥१॥ बैरिन घरमें मोरिननदिया हो करि देहे जगमें रावलरे ॥२। बिश्वरूप तेरो दृगभर छबिया हो हम सरबस धन पावलरे ॥३॥ राग होरी जंगला ॥ होरिखेलत रंगिली श्याम संग छबि सद- न सोहाबन बदनरंग ॥ मोहित सकल निरखि ब्रजबासी सुनत राग मोहनि उमंग ॥१॥ खेलत रंग रुचिर कुंकुम सो रोरी भालरमनी सुअंग ॥ २ ॥ गावत श्याम ललित गत छाये बजत बीन मुरलीमृदंग ॥ ३ ॥ बिश्वरूप सुख घन अबिनाशी तरनि कोटि दुति छबिअनंग ॥ ४ ॥ होरीजंगला ॥ होरि खेलत रंगीली रास संग ॥ रचि सुभग सिंगार बिहार रंग ॥ १ । डारतरंग, लपन पिचुकारी सजत रंग जलनिधि तरंग ॥ २ ॥ बालक वृन्द अवध नर नारी खेलत संग जिमि रति अनंग ॥ ३ ॥ गावत रागसकल मनहारी बाजत डफ ढोलक मृदंग ॥ बिश्वरूप त्रिभुवन पति प्यारी सजलमेघ दामिनि सुअंग ॥

४ ॥ होरी काफी ॥ मोहि भावे संवलिया कि चालरी कैसि सोहै छवि रोरी भाल ॥ वांकेभौंह नयन रतनारे पंच रंग सोहै वन मालरी ॥ १ ॥ भरिभरि रंग कनक पिचुकाले भुकि डाले नन्द लालरी ॥ अंवर लालगुलाल वदन भरे संग लीन्हें व्रज वाल री ॥ ३ ॥ विश्वरूप मोहन विनुदेखें जलविनु मीन कि हालरी ॥ ४ ॥ होरी काफी ॥ मोहिलागी संवलियाकी चालरी ॥ अव न जियों मैं नन्दलाल ॥ भूषन भार भवन नहिभावे नींद नयन नहि आवरी ॥ १ ॥ मोहन मधुपुर जाय लोभाने शोच अधिक उर छावरी ॥ २॥ फागुन राग रंग नहि भावे शोक विरह उर दावरी ॥३ ॥ विश्वरूप मोहन नहि माने नाहक नेह लगावरी ॥ ४ ॥ होरी तालजलद ॥ हम नही खेलव तोसे होरि पुरजनक्रसंग व्रज खोरी ॥ वरजोरि कहत गहत कर यदुवर वे सर मचले मगु छोरी ॥ पांय परो श्याम तोरिसंग न खेलोंगी होरि चुन्दरि विगरि गइमोरी ॥ १ ॥ मुखमोरि हंसत वसतलरिकन्ह संग वेदरद खेलेरंग होरी ॥ छांडो व्रज विश्वरूप कैसे के वसोंगी सइ सुंदरि छिनत वरजोरी॥ २ ॥ होरी तालजलद ॥ तुम दई विरह मोके होरि सवछन कि हाल नइतेरि ॥ संग जोरि करत हरत सव करमन वे चलनचले चहुं ओरि ॥ भावे करो सोइ सोई मान न करो रिहोई गुजरि मलतमुख रोरि॥ १ ॥ दधि मोरि हरत उरत नहि नटवर वे कहल सुने नहि मोरि॥ छाड़े वने ओर संग विश्वरूप होरिरंग कुवंर करत वरजोरि ॥ २ ॥ होरी ॥ छयल गही करमोरी हो होरी ॥ मैंजो सुनी मोहन गये वनको लरिकन्ह संग लियेरी ॥ चपलन चोरि करि नेह लगायो छवि छायो सो हियेरी ॥ एरिये कंज नयन मोहि मगुमें मिलोरि मैं लखि के भई भोरी होहोरी ॥ १ ॥ कुंडलझलक अधर रतनारे केशर तिल कियोरी॥ ॥ अपनो हार मोहि पहिरयो चित भायो सो दियोरी ॥ एरिये नन्द छयल मोहि मन मैं वसोरि मैं इनके संग जोरी हो होरी ॥ २ ॥ कर पिचुकारी कंचन केरी छवि अपनो लवनोरी ॥ विश्वं रूप मन सों छवि भायो पायो सो जियोरी ॥ एरिये मन्द हसनि मोहि उर में लगोरी मैं घर कोदई छोरी हो होरी ॥ ३ ॥ होरी जंगला ॥ होरी खेलत श्रीअवधेश ॥ देवन्ह संग लिये ॥ चतुरानन लावत मुखरोरी डारे गुलाल गणेशरे ॥देवन्ह सं० ॥ १ ॥ गिरिजा नाथ लिये पिचुकारी ॥ झोरि अवीर सुरेश ॥ देव० ॥२॥ गावत नाचत किन्नर गण सव छिरकत रंग जलेशरे ॥ दे० ॥ ३ ॥ विश्व रूप प्रभु जनक किशोरी रघुवर शरण हमेश रे ॥ दे० ॥ ४ ॥ होरी काफी ॥ घर कैसें कजैहों वीच खड़े अवधेशरे ॥ नयन शयन करि भेजत लरिकन्ह घेरि लेत चहुं देशरे ॥ १ ॥

जिमि दामिनि घन ललित बिराजे कोटि काम रुचिबेशरे ॥ २ ॥ बिश्वरूप लखि जलज बदन छबि मोद सिंधु परवेशरे ॥ ३ ॥ होरी जंगला ॥ यमुना कैसे जैहों भुकि डारत हरि रंगरे ॥ फोरत गागरि भूषण तोरत राखिलेत निज संगरे ॥ १ ॥ हंसि हंसिरारि मचावत मोहन गारी देत बड़बंगरे ॥ २ ॥ ग्वाल सखा सबचौहट ठाढ़े बिश्वरूप भरेरंगरे ॥ ३ ॥ होरीजंगला ॥ होरी कैसे मचैहों राग द्वेष दोउ संगरे ॥ फागु साज सब छीनलियो है फौज घनेरो जंगरे ॥ १ ॥ किये पैसार नगर महं बलते ममता मोह अनंगरे ॥ २ ॥ सब कहं भयो है अगम दुख सागर नेक नहींत उमंगरे ॥ ३ ॥ बिश्व रूप यह अवसर नीके नहिं मन होत उमंगरे ॥ ४ ॥ होरी काफी ॥ सोहत आजु नई श्यामा श्याम की जोरि ॥ कुंज भवन में माधो आये राधे संग लई ॥ करत केलि भरे प्रेम रंग दोउ रस बस मगन भई ॥ १ ॥ गावत ग्वालउमंग छाव उर बाजत बीन रई ॥ बिश्वरूप ब्रज श्याम सिधारे गोपन्ह मोद दई ॥ २ ॥ होरी काफी ॥ होरी कुंजन आजु भई श्यामा श्यामसो ॥ बाल यूथसंगमोहन लीन्हो करिकरि साज नई ॥ ग्वलिनियूथ सिंगार साजिकै राधे साथ लई ॥ १ ॥ नाचत श्याम नचावति राधे हंसिहंसि तालदई ॥ बिश्वरूपछबि हेरत हरिके सबसखिश्याम भई ॥ २ ॥ होरी काफी ॥ खेलतलछमन रामफागरी ॥ आए सुरेश सहितसुरमुनिवर छबिनिरखतमानोअमिय पागरी ॥ १ ॥ छायो उमंग अवध पुरजन कहं होतसरस धुनिसुभग रागरी ॥ २ ॥ सरयू गंभीर तीर छबि घन अति रंग रुचिर मानो बहन लागरी ॥ बिश्वरूप छबि निरखत पुरजनरंक धनद जिमि अमित भागरी ॥ ३ ॥ होरीकाफी ॥ तूमेरे श्याम लियोरी ॥ कुंजन फागखेलत सखिहरि सों देखत करक हियोरी ॥ १ ॥ सब को भाग अधर मोहन के छीनि अकेलि पियोरी ॥ २ ॥ चपल अमल दृग टोनालाई निज बस प्रभुहिं कियोरी ॥ सिलति राधिका हंसि मोहन सो दृग मुखचन्द्र दियोरी ॥ २ ॥ बिश्वरूप भइ मगन बारि जिमि तलफत मीन जियोरी ॥ ३ ॥ होरी ठुमरी ॥ नृपति सुतन नर लगायो मेरि ओर ॥ सकुचानी जानी हरिभेटे होरि खेलेवर जोर ॥ १ ॥ बिश्वरूप रघुवर रंग डारत भई चूंदर सर बोर ॥ २ ॥ भैरो ॥ होरी खेलत जनक नन्दनी रघुवर ओर निहारी ॥ केसर अविर गुलाल उड़ावती छिरके कनक पिचुकारी ॥ १ ॥ देव वधू सबनाचत गावति सुरगतिताल संवारी ॥ २ ॥ होत उमंग रंग खोरिन्ह मह रुचि बहैं विविध बयारी ॥ बिश्वरूप भयो फागु सुफल अब तन मन प्रभु पद वारी ॥ ३ ॥ रागभैरो ॥ नन्दकुवर बलराम श्याम

दोउ खेलत व्रजमें होरी॥ अपनो अपनो यूथ बांधि कैसखि सब खेलरचोरी ॥ कोउ गावत कोउ राग सराहति कोउ नाचति चित तोरी ॥ १ ॥ कोउ मोहन कहँ पान खवावति कोउ चूमति मुख मोरी ॥ कोउ वसन भेवति पिचुकारिन्ह ननु दिशि रंग चुवोरी ॥ २ ॥ कोउ कहै हरि जाने न पावैं घेरि लेहु चहुं खोरी ॥ विश्वरूप मोहन छबि सुन्दरराधे नयन लगोरी ॥ ३ ॥ राग भैरो ॥ काशी पुरि गिरिराज किशोरी सहित खेलत हरि होरी ॥ विघन हरण गण-पति गुण सागर रुचि कर साज कियोरी ॥ डंफ बजावत नाचत गावत फणि पति ताल लियोरी ॥ १ ॥ करि शृंगार अमर तिय निरखत हर मुख नयन लगोरी ॥ गावत रुचिर सुनत सुख दायक सब उर उमग बढ़ोरी ॥ २॥ छोलक बीन बजावत तुंबुर वरुण रंग छिरकोरी ॥ अविर गुलाल उड़ावत धन पति सुरपति हरप भरोरी ॥ ३ ॥ चतुरानन बोलत धुनि जय जय हरि लावत मुख रोरी ॥ विश्वरूप विश्वेश नगर की उपमा काको करोरी ॥ ४ ॥ होरी ॥ सब जाइरे आजु सेइ सजि आभरण छायो मन में ठाठ सुनि सुनि के धावत पगु डारि झुंकि झुंकि ॥ १ ॥ जोइ आवे तेहि संगहिं जोरे यूथिया बटोरे बाल-नारि चल जावें मुकि मुकि ॥ १ ॥ आये तुरंत जनकजा कंत के देखि रही दृग डारी रुकि रुकि ॥ राम सिया अस खेल रचो है बाट न सूझै बाजि रही घुघुकारी घुंकि घुंकि ॥ छाये उमंग सबन के अंग में डारि देत पिचुकारि ठुकि-ठुकि ॥ ग्वाल बाल सब संग सखा लिये विश्वरूप गारी गावै लुकि लुकि ॥ ३ ॥ होरी काफी ॥ तन में व्रज आई वनोरी इन्द्रिय गण सब सखिय बनो हेसम भूषण पहिरोरी ॥ रुचिर बिचार पहिरि अंबर शुचि जग मग ज्योति जगोरि काम मद सकल भगोरी ॥ १ ॥ विमल विराग बनो विन्द्रावन यमुना सुरति बढ़ोरी ॥ ज्ञान सुरंग प्रीति पिचुकारी सब सखि मिलि छिरकोरी खेलो आतम संग होरी ॥ २ ॥ अनहद शब्द उठत निशि वासर बहु विध धुनि गरजोरी ॥ विश्वरूप खेलो अस होरी आनन्द रंग मचोरी प्रीति प्रीतम सों करोरी ॥ ३ ॥ होरी काफी ॥ व्रज में जिन आजु बसोरी ॥ ग्वाल सखा सब संग लियो है ढूंढ़त फिरत मुरारी ॥ जेहि पावत तेहि रंगहोमे बोरत बहियां पकर झक झोरी खोल-दृग उतचित ओरी ॥ १ ॥ घेरि लियो हरि सब सखियन मिलि राधा मलत मुख रोरी ॥ विश्व रूप छबि देखि श्याम की अति आनन्द बढ़ोरी भलो यह खेल मचोरी ॥ २॥ होरी काफी की ॥ व्रज में हरि फागु मचाई ॥ करि सिंगार राधिका बहु बिधि गज गामिनि रुचि

राई ॥ यूथ यूथ सखि संग आपनी लइ यदुपति पहं आई ॥ जलद दामिनिछवि छाई ॥ १ ॥ भूषण बसन विविध पहिरे सखि वरण अनेक सोहाई ॥ सकल भुवन की सकल संपदा प्रति प्रति अंग लगाई ॥ धनद लखि बहुत लजाई ॥ २ ॥ उड़त अबीर भरी नभ माँहि चहुं दिशि भइ अरुणाई ॥ मोहन पर छिरकत पिचुकारी रोरी वदन लगाई ॥ श्याम मुख निरखि लोभाई ॥ ३ ॥ बीन सितार ताल डफ बाजे सुनत उमग अधिकाई ॥ विश्वरूप राधे मोहन दोउ होरी खेलें हरषाई ॥ सिंधु जिमि सरित समाई ॥ ४ ॥ काफी की होरी ॥ हरि होरी अवध में मचाई ॥ महा राज शिरताज भूप मणि दशरथ सुत सुखदाई ॥ राम लषन अरु भरत शत्रुहन जोरी अतुल सोहाई ॥ अमित रति पति छवि छाई ॥ १ ॥ डारत रंग राम पर लछमन रोरी भरत लगाई ॥ रिपु सूदन हाटक पिचुकारी भरि भरि रंग चलाई ॥ पीत पट हरि को भिजाई ॥ २ ॥ मारुत नन्दन बीन बजावत झालर लिये कपिराई ॥ ढोलक रुचिर बजावत अंगद सुनि मन हरत लोभाई ॥ पथिक कह लेत बोलाई ॥ ३ ॥ कपि दल करि सब साज मनोहर गावत अबिर उड़ाई ॥ विश्वरूप रघुनाथ सखा सब आनन्द दधि न समाई ॥ रंक जिमि सब निधि पाई ॥ ४ ॥ होरी काफी की ॥ नित हेरि खेलो हरषाय प्रभु पहं जाइके ॥ सुरति निरति पिचुकारि करो यह ज्ञान को रंग बनाइ छिरकु चित लाय के ॥ शम दम तोष अबीर उड़ावो दसहुं दिशा में छाई ॥ काम क्रोध मद लाज छोड़ि के मिलु निज रूपहि धाई ॥ कपट बिसराई के ॥ २ ॥ अहमिति भेद तजो निशि वासर प्रेम प्रीति उरलाई ॥ विश्वरूप गुरु चरन फगुआ गहु आवागवन नसाई ॥ भुलो इत आई के ॥ ३ ॥ होरी ॥ सैयां हमारे बिदेश सिधारे कासे मैं खेलोंगी होरी ॥ सम्भु ननद दुख देति है दारुण सवति करै बरजोरीरे ॥ दुख को मूल परोस मिलो है कैसे मैं बासबसोरी ॥ ॥ १ ॥ खान पान मोहि कछु न सोहाई भूषन भार लगोरी ॥ चिन्ता अनल दहत निशि बासर नैनन नीर बहोरी ॥ २ ॥ नहिं आए नहिं पाति पठाये केहि विधि धीर धरोंरी ॥ फागुन मास बिते ऐसे सखि कवन उपाय करोंरी ॥ ३ ॥ गुरु के वचन सोहावन मगु वर तूं धनि बेगि चलोरी ॥ विश्वरूप सहजहि पिय पैहो मन करहिरिसि टरोरी ॥ ४ ॥ होरी काफी ॥ मैं न खेलों तोसे होरीरे ॥ नाहक मोसे करत बरजोरी ॥ १ ॥ लरिकन साथ हाथ पिचकारी भिजइ चुनरि सब मोरीरे । घाट बाट मंह रोकत टोकत बरबस हाथ मरोरीरे ॥ २ ॥ नन्दबबा जिसी नायकहोंगी ऐसो हालकियोरी ॥ विश्व-

रूप ब्रज राज निरखि छवि बिहंसि सखी मुख मोरी ॥ ३ ॥ होरी काफी ॥ रघुवर जनक किशोरीरे यूथ यूथ मिलि खेलत होरी ॥ बढ़ो है उमंग तरंग भरोहै, रंग अवधि की खोरीरे ॥ जिमि वरवेष परम रुचिकर धरि रति मन सिव सोहै जोरीरे ॥ १ ॥ सब तिय चढ़ि चढ़ि निरखैं अटारिन सुरतिय सरिस बनोरी ॥ विश्व रूप महराज राम के भाल तिलक सोहै रोरीरे ॥ २ ॥ होरी काफी ॥ अंखियां लगे बनवारि सखिरे ॥ कल न परे बिनु देखे मुरारिरे ॥ १ ॥ चपल नयन चित वनि अति सोहै हास मनोहर कारीरे ॥ चाल सोहावन ग्वाल हाल संग कोटि काम छवि धारीरे ॥ २ ॥ भूषन पट धारे रुचि कारे मनहुं तड़ित उजियारीरे ॥ विश्वरूप प्रभु नट नागर संग होरी खेले रंग डारीरे ॥ ३ ॥ होरीकाफी ॥ अब न कान्ह संग मति कोइ जारे यमुना नागरि मोरि छीन लियेरे ॥ आये अचानक चीर हरत हैं मानैन सखि यशोमति के बारे ॥ विश्व रूप येरि नन्द छबीलो मनमोहन सब पर रंग डारे ॥ २ ॥ होरी काफी की ॥ यदुवर संग खेलोंगि होरी ॥ कोमल बालु पुलिन यमुना के छवि रमनीय बनोरी ॥ अमित काम सम श्याम मनोहर लै सखि संग चलोरी वेगि चलि विलम करोरी ॥ १ ॥ कोउ कहै कंचन तें सुन्दर कुसुम सुगन्ध भरोरी विविध बयारि बहै रुचिकारी मिलि जुलि फगु रचोरी ॥ बिहंसि बोलैं ऐसो गोरी ॥ २ ॥ ब्रज मोहन पहं सखि सब चलि के साज संवारि गहोरी ॥ विश्वरूप प्रभु होरी खेलो मो सों विनय करोरी ॥ सखी सब पांय परोरी ॥ ३ ॥ होरी भैरों ॥ ज्ञान भवन पिय होरी खेलै लखि फागु अनाहद बाजे ॥ निज निज रंग न डारति सखिं सब बैठि दशों दरवाजे ॥ १ ॥ तुरिया रूप भालक अति सोहै उजियारी चहुं छाजे ॥ निरखत रस बस रहहै मगन सखि पुरुख फागु विराजे ॥ २ ॥ जगको लाज काज सब तेरो कर्म कुटिल सब भाजे ॥ विश्वरूप लगो नेह पियासों रंग अजरज साजे ॥ ३ ॥ होरी काफी ॥ राम लषन सिय होरी खेलैं आजु उमंग चहुं छाजे ॥ धाईं सखी निज यूथ बनाई पहुंचि सबै दरवाजे ॥ १ ॥ रतन जड़ित आसन पर बैठे भूषन अमित विराजे ॥ होरी कीच मची चहुं ओरी बरषत धन जिमि गाजे ॥ २ ॥ सकल भूति मूरति धरि धरिके करों तिलक शिर ताजे ॥ विश्वरूप सतगुरु परचे बिनु होत न दृग अनुरागे ॥ ३ ॥ होरी भैरों में ॥ मुनि समाज मिलि चित्रकूट मह रघुवर खेलत होरी ॥ सब तीरथ निज निज विभूति युत रूप अनूप धरोरी ॥ आये जहां रघुवीर जानकी रघुकुल चन्द चकोरी ॥ १ ॥ आये सुरेश शेष विधि शंकर सहित

नगेश किशोरी॥ बनचर वृन्द सखा सब आये विशद समाज भरोरी॥२॥ सुर बनिता सब बनि बनि आईं बसन-तड़ित छबि छोरी॥ तेहि समाज शोभा को बरने शारद मति सकुचे री॥३॥ केसरि रंग अबीर उड़ावति ढोलक बीन बजोरी॥ विश्वरूप जग भूप राम छबि जिमि रबि उदय भयोरी॥४॥ होरी॥ सोई फागु मन भावे ललारे होरि खेले पै रंग न लावे॥१॥ आवति सखि सब साज बनाइ निज निज भाव दिखावे॥ ता महं नेकु नजर नहिं लावे त संग खेल मचावे ललारे॥१॥ अंबर ओढ़ि दिगम्बर होवे मुख रोरी न लगावे॥ बिश्वरूप अस फागु लागु जेहि युग युग अमर कहावे ललारे॥३॥ होरी॥ होरी खेलो पिय संग आपने फागुन समय भलोरी॥ प्रति चुंदरिआ चटक रंगनि कीनिशि बासर पहिरोरी॥ इन्द्रिय समन सिंगार बनावो जग मग ज्योति जगोरी॥१॥ बिमल विवेक बिराग सोहावन सिंदुर भाल करोरी॥ सुमति सखिनको साथ मिलावो कुमति सवति को तजोरी॥२॥ हे पर पुरुष मोह परि पंथी जनि इन कहं निरखोरी॥ ज्ञान अमल पिचुकारी बनो है पुरण रंग भरोरी॥३॥ हंसि छिरकति आतम सुख घन पर भेद भाव बिसरोरी॥ बिश्वरूप जग शोधनि नीकी जो अस फगु रचोरी॥४॥ होरी काफी॥ ऐसो भैरव खेले होरी॥ करिसमाज सुर राज देव गण निज निज यूथ बटोरी॥ आये सबै महराज सभा में चहुं दिशि भीर भयोरी॥ सकल मुनि वृन्द भरोरी॥१॥ आये विष्णु चतुर मुख शंकर ज्योति सभा पसरोरी॥ जिमि राकेश दिनेश अमित शत युगपत उदय कियोरी॥ रुचिर अति ज्योति लगोरी॥२॥ भूत बेताल साज़ करि सुन्दर करि निज यूथ खड़ोरी॥ छिरकत रंग अबीर उड़ावत बाजा अमित बजोरी सुनत सुख सिंधु बढ़ोरी॥३॥ डारत रंग परस्पर सब कोइ आनन्द रंग मचोरी॥ बिश्वरूप भैरव दरबारहि भुवन भूति निवसोरी॥ अचल नहिं नेकु चलोरी॥४॥ होरी॥ देखो सखी ब्रज धूम मचोरी॥ बाहरनहिं कोई निकसन पावे नन्द लला अस कोट रचोरी॥१ रंगन बोरत छोरत पटको ऐसो हाल करोरी कोउ इत नाहि बचोरी॥२ विश्वरूप ब्रजराज सांवरो ग्वालिनि कर गहि आपुन चेरी॥३॥ होरी काफी की॥ सैयां होरी खेलो मोसों जात है फागु बहार॥ कान्ह तुम्हेबिन कछु न सोहाई लागत भूषन भार॥१॥ डारो रंग प्रभु पैयां परतहौं बीती जात बहार॥२॥ बिश्वरूप प्रभु चतुर शिरोमणि राखो लाज हमार॥३॥ होरी बंगला॥ तू मेरे श्याम लियोरी॥ कंजन बाजति हरि अघ-

रन में देखत कर कहियोरी ॥ १ ॥ सबको भाग अधर मोहनके छीनि अ-
केलि पियोरी ॥ चपल अमल दृग टोना लाइ निज वस प्रभुहि कियोरी ॥
२ ॥ मिलति राधिका हंसि मोहन सों दृग मुख चन्द दियोरी ॥ विश्वरूप
भइ मगन वारि जिमि तलफत मीन जियोरी ॥ ३ ॥ होरी जंगला ॥ सखी-
री मन मोहन कों होरी आज खेले हों ॥ आज कहूं भागन नहिंपैहैं बांह
पकरि विनमैहों ॥ १ ॥ डारोंगि रंग अंगपर हरिके मुखमें गुलाल लगैहों ॥
विश्वरूप अब रसिक लाल संग कुंजन घूम मचै हों ॥ २ ॥ होरी जंगला ॥
तू सखि वत न मानत मेरी मैं हारी कहत वहुतेरी ॥ यमुना तीर रहत
वनमाली रार करत हठिहे री ॥ डारत रंग पिच कारिन भरिभरि गारी
हंसि हंसिदेरी ॥ १ ॥ पनियां भरन तेहि घाट जाहु जिनि मग वट पार
बसेरी ॥ विश्व रूप ब्रजनाथ सखा संग वर वस लेत है घेरी ॥ २ ॥
होरी काफी ॥ तनमें अस रंग रचेरी ॥ पिचुकारी रुचि कारी सुमति की
ज्ञान रंगते भरेरी ॥ मिलि मिलि ऐसो फागु मंचायो चहुं दिशि कीच
कारेरी अमल पट रंग सचेरी ॥ १ ॥ वायु विचार बहत रुचिकारी भरम
अबीर उड़ेरी ॥ युक्ति साज करि सखि सब आवति समता भाल पुरेरी
झलक छावैं चहुंओरी ॥ २ ॥ गुरु गम अगम समाज संगले अनहद ताल परे
री ॥ विश्वरूप विसरी सुधि तनकी भेद लाजको तोरी उमंग उमड़े चहुंओरी
॥ ३ ॥ होरी जंगला ॥ घर कैसेक पैहो चोन गहो गुरु रंगरे ॥ ताकहं फा-
गुन दूर बसेहे फागु रंग रस भंगरे ॥ १ ॥ होरी विना जीवन नहिंनीको
झूंठ सांग दुख संगरे ॥ २ ॥ विश्वरूप जोई निजरंग बसे फूलफाग उरदंगरे
॥ ३ ॥ होरी जंगला ॥ संगति सो भलो जहां आतम रूप विचार ॥ कुमतिकु-
संग तजो निशि वासर केवल नाम अधार ॥ भरम अबीर उड़ाउ तुरित
सब कर्म रंग जनि डार ॥ १ फागुन मास महामद बाढ़ो धनि वनिता परि-
वार ॥ इनके हेतु भूलो जनि कवहूं अंत महा दुख भार ॥ २ ॥ सम्मत मन
को चाह बनोहे सुख दुख मूल अपार ॥ अमल ज्ञान गत भेद विशद अति
प्रबल अनल तेंजार ॥ ३ ॥ केवल ब्रह्म निरंजन पूरण गुणा तीत गोपार ॥
विश्वरूप सोइ रूपगहो निज तजि सब भेद विकार ॥ ४ ॥ राग वसंत ॥ श्री
गंगेरुचि करतवतरंग ॥ निरखत व ढ़े उरमहं उमंग ॥ १ ॥ कलि कोश कलिल
हर सलिल धार ॥ मुनिवृन्द मनोरथ पूर करार ॥ सुरधेनु देव तरुसम उदार
॥ अघ ओघमहा तरु तर कुठार ॥ २ ॥ सब सिद्धि दानि गुन भवन नीर ॥
सुख मूल दानि पद अजर थीर ॥ सुन्दर सुरेश सुयोगि धीर ॥ शिव विश्वरूप

तव भवन तीर॥ ३ ॥ राग वसंत ॥ जय जय हरि वाहनि जगत मात ॥ भय शोक हरणि दुति भानुगात ॥ १ ॥ जय नन्द सुते कुरु मति बिशाल॥ हरु मोह मान मद काम जाल ॥ अघ मूल हरणि बर दानि दानि ॥ २॥ जन इच्छित फल वर अमित खानि ॥ जगदीश्वरि वदन विशेष चंद ॥ वर-हास मोदकर रुचिर मंद ॥ सब सिद्धि सदाकर जोरि जोरि॥ ३॥ पदकंज बसत चपलाइ छोरि ॥ तव चरित भानु जनु मनु सुकोक॥ दुख शूल हरण करता बिशोक ॥ जगतारणि कारणि सकल लोक ॥ अबबिश्वरूप तबशरण ओक ॥ ४ ॥ राग बसंत ॥ को शंकर सम जग महं उदार ॥ देखिदीन नहिं ढरत बार॥ १ ॥ मथेउ सुरासुर उदधि जाय ॥ प्रगटेउ दारुण बिषनिकाय॥ जरत भुवन करै त्राहि त्राहि ॥ शरण टेरि परे चरण मांहि ॥ १ ॥ अतिदयाल प्रभु अभय दीन्ह ॥ जलकण सम बिषपान कीन्ह ॥ सुखिय भये अति जन समूह ॥ तपत मीन जिमि बारि व्यूह ॥ २ ॥ साधन हीन मलीन दीन ॥ अघ अवगुण मदमोह पीन ॥ प्रभु ऐसो कलिजन कहं बिचारि ॥ मुक्ति जननि काशी सवांरि ॥ ३ ॥ निवसत नितगिरिजा समेत ॥ अगजग मरतहि मुक्ति देत॥ बिश्वरूप प्रभु बिनय मोर ॥ चरण युगल शशिचित चकोर ॥ ४॥ रागबसंत॥ खेलत बसंत रघुराज राम ॥ संग भरत लषण रिपुसुदन नाम ॥ १ ॥ फुलेउ फूल बहु बिपुल जाति ॥ भांति भांति सोहे अमित पांति ॥ लटपट खटपद करैगुंजार ॥ सुरभि सोहावन बहै बयार ॥ २ ॥ बालकेलि करें सहित बालु ॥ सरयू तट शोभा बिशालु॥ कंचन मय जहां बनेउ घाट ॥ बीचबीच मणिनि कर ठाट ॥ ३ ॥ सुचिरुचि दायक मालपोय॥ छवि अनुपम बहु रंग जोय ॥ हरषि सबे प्रभु कंठ डारि ॥ मानहु रवि शशि सिमिटि धारि॥ ४ ॥ सब के उरअति भयो उमंग ॥ जैसे पर्व शशी उदधी उमंग ॥ बिश्वरूप धनि अवध लोग ॥ योगी अलाभ सुख करत भोग ॥ ५ ॥ रागबसंत ॥ डारत अबीर खेलत वसन्त श्री अवध राजसुत सीय कन्त ॥ बाजत मृदंग ढोलक सितार अति भीर भई महराज द्वार ॥ सब नृपन कियेबहु रंग साज करि आये जहां है भूपराज ॥ १ ॥ सुरशेषसिद्ध मुनिवर सुरेश छवि देखि चकित भये बिधि धनेश ॥ चहुंगान करत किन्नर उमंग लखि बिश्वरूप सत्रुचे अनंग॥ २ ॥ रागबसंत ॥ मनचेतो केवल हरि स्वरूप॥ अजहुं तजहुं भवजालकूप॥ ममता बश जेहि कहत मोर ॥ सो नहिं ऐहे काम तोर ॥ दारा धन सुत बिषय रंग ॥ हाट पथिक जनसरिस संग ॥ १ ॥ काल उरग सिर बैठुआय॥ ग्रास करैगो समय पाय ॥ नाम सजीवन रस अगाध ॥ गहत दहत सब

सोह बाध ॥ २ ॥ आदि अंत जग लेशनाहिं ॥ रवि कर जल समबीच आ-
हि ॥ देखत सो नहिं नयन हीन ॥ मृग सम चाहत प्यास छीन ॥ ३ ॥
अबकी अवसर बने है आई ॥ पायो है साधन साज भाई ॥ विश्वरूप सोइ
धरु अधार ॥ जेहते न चौरासी अगार ॥ ४ ॥ राग वसन्त ॥ करु मेरो
मनुवां हरि की आस ॥ जेहतें नशै जग दुसह त्राश ॥ १ ॥ जाके शरण ब्र-
ह्मादि शेश ॥ निशि दिन सेवत रुचि हमेश ॥ लहत परम सुख पुलक
छाव ॥ लहै जिमि सुरेश पद रंक पाव ॥ २ ॥ जो छन छन रहे नाम ली-
न ॥ बिषय हेतु नहिं होत दीन ॥ जिमि अगाध जल माहं मीन ॥ नहिं
निदाघ तप होत खीन ॥ ३ ॥ शुक्र शारद नारद वालमीक ॥ चरण सरो-
रुह चंचरीक ॥ पिवत मधुर रस स्वादु सार ॥ रहत मगन तजि भेद भा-
र ॥ ४ ॥ विपुल नृपति तजि सकल राज ॥ जात बिपिन लखि सुख समा-
ज ॥ विश्वरूप प्रभु रूप ध्याउ ॥ अगम ज्योति घर बास पाउ ॥ ५ ॥ राग
वसंत ॥ बोलो निशि वासर गुरु के नाम ॥ सुख सागर गुण बल तेज धाम ॥
१ ॥ हरि रूप ज्योति मय गुरु सरूप ॥ फागु बसंत अनूप भूप ॥ पावन पद
रज फूलो है फूल ॥ मन मधुकर मोद अखंड भूल ॥ २ ॥ गन्ध सुहावन
भरो है देश ॥ सुख खानि दानि सेवत हमेश ॥ गन विश्व रूप गुरु चरण
आस ॥ रवि कोटि ज्योति तम हरण भास ॥ ३ ॥ राग वसंत ॥ आये बसंत
ऋतु पुलक छाव ॥ नित नेह राम पद रज सुभाव ॥ १ ॥ फुलेव फूल बि-
रहत अलिन्द ॥ तप ज्ञान सिंधु मुनि वृन्द वृन्द ॥ अबभोग रोग दारुण बि-
योग ॥ मदमानकुमति हर अचल योग ॥ २ ॥ सुख धाम राम पुर छवि अपा-
र ॥ सुख दानि खानि सोहे सरयु धार ॥ लखि होत चकित चित देव रा-
ज ॥ पुर विश्वरूप नृप मुनि समाज ॥ ३ ॥ राग वसंत ॥ खेलत बसंत शंक-
र कृपाल ॥ सोहै छवि अनूप दुति चन्द भाल ॥ १ ॥ शिर श्वेत कुसुम सोहै
गंग धार ॥ कर पूर गौर शोभा अपार ॥ कर सोहै डमरू व्याल माल ॥ भसम
अंग सोहै दृग विशाल ॥ २ गिरि राज सुता सोहै वामवाम ॥ भय शोक ह-
रणि गुण तेज धाम ॥ जग विश्वरूप हर सम को आन ॥ तम रैनि द्वन्द
घन तरुण भान ॥ ३ ॥ राग घाटो ॥ सजनी कठिन दुख छायो होइ गैले
हरिसें दुरावरे ॥ कुमति सवतिया वसलि परोसवां निशि दिन झगरा
लगायो ॥ १ ॥ वहत अनिय रस धार अंगनवां वाहर नाहक धायोरे ॥
कांच गहत जैसो छोड़ि रतनवां पारस को बिसरायोरे ॥ २ ॥ विश्वन हे-
रत मूढ़ नयनवां विषय न नेह लगायोरे ॥ ३ ॥ राग घाटो ॥ भूलि गैलो शहर

संभारिया हो रामा ॥ ना कोइ दीखत सांचइ नरिया हो ना रुचि रंग नथरिया हो ॥ १ ॥ ना भव आइब विश्व बजरिया हो॥ नापुर पति सों जुहरियाहो ॥ २ ॥ राग घाटो॥ झूठ रंगे मनुआंरहे अरुझाइहो रामा॥भजन करत वादिये बिसराई॥ भव रसपरले भुलाई रामा ॥ १ ॥ कपट कलेवर रुचिर बनाई॥ खरसम रहेव लेभाई होरामा ॥ २ ॥ सुमति संवतिया डरन सुहाई ॥ कुमति संवतिया बढ़ाई होरामा ॥ ३ ॥ बिश्वबिना रघुबर शरणाई ॥ नहिछुटे जगदुख दाई होरामा ॥ ४ ॥ रागघाटो ॥ कुंज बन राधिका कन्हैया हो रामा ॥ करत बिहार सुहावन यदुवर ॥ कुसुमित तरजुड़ि छैयां हो रामा ॥ १ ॥ सब बन चैत फुलाने रुचिकर ॥ अलिगन घुनिसुख देया हो रामा ॥ २ ॥ फुलवा लोढ़ि लोढ़ि मोहन राजत ॥ मंगिया गूंथत रुचिरैया हो समा ॥ ३ ॥ बिश्वरूप प्रभुकी यहजोरी। यमुनातर सोहैया होरामा ॥ ४ ॥ राग घाटो ॥ पिया मोरे बसले बिदेशवा होरामा॥ कवनि समैया पिया मोरे ऐहैं निशिदिन रहत अंदेसवा होरामा॥ १ ॥ कवनि बिरहिनी पिय भिलमाये-अजहुं न पाये संदेश-वा हो रामा ॥ २ ॥ कुमति संवतिया देति दुख दारुन केहि बिधि सहिहों कलेसवा हो रामा ॥ ३ ॥ विश्वरूप गहु गुरु शरना अति सहजहि होई उप-देशवा होरामा पिय मोरे ॥ ४ ॥ रागघाटो ॥ पिंजरा लोभाई गइले सुगना नहिं जानमोरे रामा हो ॥ १ ॥ चारि रे पिंजरदा रंगनहिं करे पहिचान मोरे ॥ २ ॥ पनियां अगिनि मिलि धरति बई बनोहै निशान मोरे ॥ ३ ॥ छन-वांमेंटूटि जैहे सब की लिहें पुरान मोरे ॥ ४ ॥ अपनो न कोउ विश्व एक बिना भगवान मोरे ॥ ५ ॥ रागघाटो ॥ धनिसो अजबरे कुअवां जल भरे मुसुकाय मोरे रामाहो ॥ १ ॥ बिलुरे कलसवा डोरिया भरे विजु बार पांय मोरे ॥ २ ॥ सखियां सहेलियां मिलि गये सुख उदधि समाय मोरे ॥ ३ ॥ पनियां अमिय रस छाके दुखदुंद्व तनसाय मोरे ॥ ४ ॥ विश्व अगम यहगति-यांबिनु गुरु न लखाय मोरे ॥ ५ ॥ रागघाटो ॥ जियरा उदासी भैलो नाहिं आयें यदुराय मोरे रामाहो ॥ १ ॥ कुबजा सवतिया बाड़िरे लिये हरि बेल-माय मोरे ॥ २ ॥ घरवां न नीको लागे कुंज बन न सोहाय मोरे ॥ ३ ॥ ढरत नयनवां जलरे दुख कहि नहिं जाय मोरे ॥ ४ ॥ विश्व कवन बिधि सखिरे यह विरह नशाय मोरे ॥ ५ ॥ रागघाटो ॥ सजनि कहांलों सुनावों सैयां क बोलना कठिन भैलो ॥ सैयां कहत हम जैहैं बिदेशवा केहिबिधिते बिल-मावोरे ॥ १ ॥ केहि बिधि रहिहों अकेलि भवनवां कैसे विरह बितावोंरे ॥ २ ॥ जेमोरे यहिहै नयन कमनियां कैसे मैं दरद बुझावों ॥ ३ ॥ विश्व

कवन विधि रहिहो भवनवां जेहते वियोग न पावैरे ॥ ४ ॥ रागघाटो ॥ मलनि बड़ादुख पावों हरि बिनु मिलना कठिन भैलो ॥ १ ॥ नाकछु आये हरिके संदेसवां केसेके विरह बितावों रे ॥ २॥ चौन कन्हैया ऐहें भवनवां कैसके रैन बितावैरे ॥३॥ विश्वसें लगिहो केहिके मोहनवां केहि बिधि शोच मिटावैरे ॥ ४॥ घाटो ॥ सखिनि कहलों बुझावों बगियामें भंवरा लुभै लोरे ॥ १ ॥ बगिया लोभाये जबते भंवरवां तबते सोहागन पावों रे ॥ २ केरे भंवरवा ऐहे भवनवां फुलवा कि सेज बिछावैरे ॥ ३ ॥ विश्व अगम घर वारि हो भवनवां झिलि मिलि ज्योति जगावैरे ॥ ४ ॥ राग घाटो ॥ रामा बाजि गैलो बाजि गैलो मधुर मुरलिया हो ॥ १ ॥ ना अब भावत सखियां नगरिया हो ना घरकी टकमरियाहो ॥ २ ॥ ना अब भावत यमुना कछरिया हो नाकुंजन कि डगरियाहो ॥ ३ ॥ नाअब भावत चटक चुन्दरियाहो॥ नाग-लहार मुंदरिया हो ॥ ४ ॥ विश्व बिना अब सांवरि सुरतिया हो ना कहुं बात नगरिया हो ॥ ५ ॥ राग घाटो ॥ रामा लागि गैलो लागि गैलो विषय बयरियाहो ॥ नाकोइ आपन लखत नगरिया हो ना प्रीतमकी डगरियाहो ॥ २ ॥ नाकोइ बातन विश्व बसरियां हो नाहक लागै नगरिया हो ॥ ३ ॥ रागघाटो ॥ जियरा उदासी भैलो लागि विरह कमान मोरे रामाहो ॥ १ ॥ चितरे संवलिया रंगेसुख छबि सुख खानि मोरे ॥ २ ॥ विछुरे कन्हैया जब सें भयोतन बिनु प्रान मोरे ॥ ३ ॥ विश्व भवनवां कबरे ऐहैं यदुकुल भान मोरे ॥ ४ ॥ रागघाटो ॥ सैयां सुरतिया लगि गर भल बनेहै सोहाग मोरे रामाहो ॥ १ ॥ सबरे महल पिय पाये छुटि गये दुखदाग मोरे ॥ २ ॥ प्रेम लिलटरिया गिरिवरे भयो पिय अनुराग मोरे ॥ ३ ॥ नियम गहनवां सतके सोहै सेंदुर मांगमोरे ॥ ४ ॥ विश्व सोहागिनि कोई पायो अविचलि भाग मोरे ॥ ५ ॥ रागघाटो ॥ मोतियन्ह मंगिया संवरतिउं माधो ॥ १ ॥ जोमैं जनतिउं मोहन मोरे ऐहे काहेको नेहिया लगवतिउं माधो ॥ २ ॥ जो मैं जनतिउं विछुरि जैहे मोसे काहेको सेजिया संवरतिउं माधो ॥ ३ ॥ जोमैं जनतिउं विरह मोहिं देइहैं काहे को बतियां भुलवतिउं माधो ॥ ४ ॥ विश्वमैं जनतिउं जोहरि नहि ऐहैंकाहे कोपतियां पठवतिउं माधो ॥ ५ ॥ राग मलार ॥ व्रज में श्याम नये ये छबि घन छाई श्याम घटा प्यारि रैन रुखोसे आयो ॥ १ ॥ मेघ घटा घहुं जल घन वरसे श्याम सुधा भरे नयन ॥ २ ॥ तड़ित छटा छवि चमकं सोहावन सुपन सोहै मुद दैन ॥ अति गंभीरगगन घन गरजे सखि मोहन मोहे दैन ॥ ३ ॥ जलद घटा शिर

रहत न निशि दिन श्याम सदा छवि ऐन ॥ बिस्व रूप घनश्याम पियारे अंग अमित सोहै मैन ॥ ४ ॥ मलार ॥ जबते श्याम गये ये बिछुरनि मेरी शोचहिंयां सारी रैन सखीरि मधुवन ॥ १ ॥ सघन घटा लखि अहिरिपु मृग से चरन चपल महि दैन ॥ १ ॥ चपल चकित चपला चहुं धावति सजन बिरह कैसे चैन ॥ अबतो सखि भये युगल प्रगट घन यक जलधर दूजे नैन ॥ २ ॥ दुख सागर तन छीन रैन दिन चित मोहन छबियेन ॥ बिस्वरूप रसना नहिं दुखलखे ओलखे ताहिन बैन ॥ ३ ॥ मलार ॥ पुलकि पुलकि यदुवर सखि ललकि ललकि झूले ॥ १ ॥ मारत बुन्द बहत धार चपल चमक बार बार च-ढ़ो चढ़ो सखि कहि कहि कहि रस रस हिय भूले ॥ २ ॥ बिस्वरूप कहि न-जात पवन वेग नभ सोहात झमकि जात लटपटात नभ सर चहुं फूले ॥ ३ ॥ मालर ॥ गरजि गरजि जल धर घर सखि चमकि चमकि आवै ॥ १ ॥ य-दुवर जबतें बिदेश पाये नहिं कछु संदेश ॥ सुनो सुनो सखि रहि रहि रहि धक धक हियछावै ॥ २ ॥ बिस्वरूप नहिं सोहात समुझि समुझि पिछिलि बात सुरति जात श्याम गात घर नहिं मोहि भावै ॥ ३ ॥ राग मलार ॥ प्र-फुलित दल अमल कमल चपल नयन हेरे ॥ १ ॥ तरज लरज काछुकि नचावे मधुर बचन टेरे संग संग बालक लेइ करते कंज फेरे ॥ २ ॥ दरज परज काछुकिन भावे कृपा उर घनेरे विश्वरूप निरखत सोई दृगन टरत मेरे ॥ ३ ॥ राग मलार ॥ हरि बिगसित राजीव नयन वै मधुर टेरे ॥ १ ॥ गगन स-घन बादर छाये घटा चहुं घनेरे ॥ गरजत उप घोर पवन सिथकि शोचमेरे ॥ २ ॥ बिपिन सघन सुधि न पाये निशिचर बहुतेरे ॥ विश्वरूप लखन संग मुनिके भवन हेरे ॥ ३ ॥ मलार ॥ छयो बदरारे मोहि बिरह बढ़ायो ॥ १ ॥ घहरि घहरि झरि करि चहुं दिशवां अंधियरिया बहु छायो ॥ कड़कि कड़कि चपला नभ धावे शोच उदधि अधिकायो ॥ २ ॥ कोइलरिया धुनि करक जि-यरवां सोवत मोहि जगायो ॥ विश्वरूप उर अधिक अंदेशो हाल न श्याम पठायो ॥ ३ ॥ मलार ॥ आयो छदरारे नाहिं रघुबर आयो ॥ १ ॥ लटकि लटकि वन घन चहुंओरवां गह बर लता सोहायो ॥ टपकि टपकि घन बरसन ला-गे कोहिंविधि बास लगायो ॥ २ ॥ कड़कि कड़कि आवत छन छनवां बिधि वियोग दरशायो ॥ बिखरूप सियवर देखेबिनु रजनी घन युग छायो ॥ २ ॥ मलार ॥ आयो बदरारे नाहिं भवन छवायो ॥ १ ॥ अबघन गरजि गरजि चहुंओरवां बरषत झरी लगायो ॥ चुवत भवनवां कोहि घरजैहो कुसमय शो-च बढ़ायो ॥ २ ॥ झहरि झहरि चहुं बहत बयरिया जल थल जल भरि

आयो ॥ विश्वरूप एक श्याम मिले बिनु पल पल कलप सनायो ॥ ३ ॥ मलार ॥ घूमि घूमि घूमि घेरेरे बदरवा ॥ आलिनि पकरि बदन चूमि छीनले चदरवा ॥ बाट साथ कोउ न मेरे तड़पै बदरवा ॥ १ ॥ जामिनि फिरिके अंगना धाये बड़ोरे निठरवा ॥ विश्वरूप मोहि लेत सांवरो लंगरवा ॥ २ ॥ मलार ॥ हेरि हेरि हेरि लायोरे नजरवा ॥ आमिनि कारि मखिरि घेरे कारि रे बदरवा ॥ मोहन हंसि मुरलि टेरे मोहिले जियरवा ॥ १ ॥ काछनि काछे मधुर बोले नन्द के पियरवा ॥ विश्वरूप श्याम निठुर मोहेरे सहरवा ॥ २ ॥ मलार ॥ आगम भदोवां भैलि रतियां हो प्रभु मोरे बस लें बिदेश ॥ १ ॥ पांच एवति बसे शिर पर कलह करति निशि वार ॥ निज निज स्वारथ धावति जीवन कैसे हमार ॥ १ ॥ देति ननद दुख दारुन निलिहे परो खिनि जाई ॥ काल न परत सखि मोकह अबका करउं उपाई ॥ २ ॥ बिश्वरूप गुरु पतियां हो पठवों सुरति सुधार ॥ तबहि पिया घर आइ हैं पुनि न वियोग बिकार ॥ ३ ॥ मलार ॥ आगम भइलि भव जल नदिया हो कैसे के उतरब पार ॥ १ ॥ घन बरसत घन बुंदहि सिमिटि मिलें बहुधार ॥ लहरि अपार चहुं दिशि सूझत वार न पार ॥ १ ॥ केवट गरबी सुनत नहिं हारे वारिके पुकार ॥ नहिं कोउ साथी खरच नहिं सांभ भइलि अंधिआर ॥ २ ॥ विश्वरूप गहु अनुछन के बल गुरु के अधार ॥ अवर उपाई न तरिहो हो कोटि करो उपचार ॥ ३ ॥ मलार ॥ बिभुबन सैयां भुलइ ले हो कैसे सहब दुख भार ॥ १ ॥ वनरे सघन चहुं ओरहि तहां न पवन पैसार ॥ केहि बिधि सुधि हम पाइब यह चिन्ता निशि वार ॥ २ ॥ कारका सु जंतु बसत चहुं सब कहं करत अहार ॥ बाट नहीं कहुं दीखत चहुं दिशि कांट करार ॥ ३ ॥ बिश्वरूप जग महं कोउ दीखत नहीं न हमार ॥ जा वे शरन सुनावों हों सुनत करे उपकार ॥ ४ ॥ राग मलार ॥ सखि रघुबर बिन नहिं कछु भावत ॥ १ ॥ कुसमय लिखि बनबास देआयो धीरज उर नहिं आवत ॥ २ ॥ अति सुकुमार चरण सियवर को महि अंकुर चहुं छावत ॥ बिश्वरूप घन निशि दिन बरसे दादुर दरद बढ़ावत ॥ ३ ॥ मलार ॥ चहुं दिशि घन गरजत डर पावत ॥ १ ॥ घन घमंड महि तब नियराने श्याम नजरि नहिं आवत ॥ २ ॥ कब देखब नयनन्हते प्रभुकाहं सोच अधिक उर छावत ॥ अंधियारी भई भानु छपित भयेबुंद गगन भरि लावत ॥ २ ॥ दामिनि दमक दरद उर महं अति दादुर विरह जगावत ॥ विश्वरूप दुख सिन्धु बिना हरि को जग मांह बचावत ॥ ३ ॥ मलार ॥

बटोहिया हो हरिसों कहियो संदेश ॥ श्याम घटा घन चहुं दिशि छायो दृग चल झरत हमेश ॥ १ ॥ कि घों घनश्याम निरखि छवि हरि गयो घन न गयो तेहि देश ॥ विश्वरूप कियों श्याम हरो है आवत उरमें अंदेश ॥ २ ॥ राग मलार ॥ बटोहिया हो जैहो अपने देश ॥ आवत घन बरषत कित रहिहो भारी भयो है अंदेश ॥ १ ॥ अजहुं विदेशि समुझन करि हो पैहो तु कठिन कलेश ॥ बिजुरि चमक चहुं गगन गरज भरे डरपे जियरा हमेश ॥ २ ॥ नाचत घन लखि मोरवा मगन भये दादुर धुनि चहुं देश ॥ विश्वरूप घर जो न फिर जैहो पावस भल ना विदेश ॥ ३ ॥ राग मलार ॥ परि हो श्याम शोच विधि दई है आजु री रैन सवाई होय ॥ कासों संदेश पठावों इहां के हित नहि आपन कोय ॥ १ ॥ श्याम लखे नहि हाल हियाको तड़ित चमक चहुं ओय ॥ दादुर शोच बढ़ावे हियामें हरि मधुपुर रहे सोय ॥ २ ॥ अबतो जोरि सोहायो सखिरे कुबरी मोहन दोय ॥ विश्वरूप प्रभु भलन कियोरे श्याम सरम दियो खोय ॥ ३ ॥ राग मलार ॥ परिहो मोह फांसमें फसिहो आयरी नैन नसाये दोय ॥ सुन्दर आतम रूप हियेमें नेकु सुरति नहि होय ॥ १ ॥ ज्ञान विचार सुदृग श्रुति गावे सो सुधि लखत न कोय ॥ भटकत आवत जात चरखमें नरक सरग दुख जोय ॥ २ ॥ अजहुं संभारो सुरति गरभको सहव कठिन दुख रोय ॥ विश्वरूप लखु राम हियामें जनम वृथा दियो खोय ॥ ३ ॥ मलार ॥ भलोछबि वृन्दावन घनघोर ॥ शाखा रुचिर फूल चहुं फूले जंतु रमत चहुं ओर ॥ तरुवर सोहत मोहत श्यामहि चित मोहत धुनि मोर ॥ १ ललित सुरंग पटल से घनकी सजल सघन चितचोर ॥ विश्वरूप परसत घन बूंदन दामिनि चमक अंजोर ॥ २ ॥ मलार ॥ लगो मन श्रीमोहन की ओर ॥ ललक झलक कुंडल छवि कानन अरुण ललित दृग कोर ॥ मुरली हाथ साथ गोपियन्ह के सखि मोहि परत न भोर ॥ १ ॥ ब्रज तजि हरि जबसों मधुपुर गये जलधर गये तेहि ओर ॥ विश्वरूप सखि मेघ न वरषे विरह बाधा कियो जोर ॥ २ ॥ मलार ॥ करि हारी श्याम निहोरा रे नेकु बचन मन नाहि धरे ॥ १ ॥ मृदु तन वारि डारि नजरि लगाये लखे दरद नहि मोरारे ॥ २ ॥ ब्रज बिसराये छाये घन मधुवन घोर गरज चहुं ओरारे ॥ ३ ॥ झरत नयन वरषत जलधर चहुं सखि चहुं पवन झकोरारे ॥ ४ ॥ विश्वरूप वंस भयो गोपिन्ह के चित कियो कान्ह कठोरारे ॥ ५ ॥ राग मलार ॥ मनभावे नन्द को छोरारे ॥ नयन सुछबि दृग मांहि भरे ॥ १ ॥ धुनि सुख कारि प्यारि

मुरलि बजावे ॥ चित कियो चन्द चकोरारे ॥ २ ॥ एक घनश्याम श्याम-घन दूजे वन सोहे चहुं ओरारे ॥ ३ ॥ लसत हंसत मुख मधुर बैन सोहे ॥ मणि गण भानु अंजोरारे ॥ ४ ॥ विश्वरूप प्रभु मधुबन छाये ॥ सखि अटको चित मोरारे ॥ ५ ॥ मलार ॥ बोले कोइलिया प्यारे ॥ प्यारे गरजत मेघस-घन चहुं ओरे ॥ १ ॥ ग्वाल सखासंग बनमों सिधारे ॥ घटा मनोहर नन्द दुलारे ॥ २॥कासों दरद सुनावों हिया के दादुर बोलिया दुख को टारे ॥ १ ॥ व्रज चित चोरवा चितमों हमारे शोच हेतु विधि दिवस सवारे ॥ विश्व-रूप पल युग सों हियामों श्याम मुरलिया जो न निहारे ॥ २ ॥ मलार ॥ १ ॥ झुलत सैयां परिजे कुसंग हिंडोल ॥ अगम अपार खम्भ दुइ लागे गुणमय गुण अनमोल ॥ १ ॥ पांया चारि सोहावन चमकत राचत रुचिर खटोल ॥ मणि गण जड़ित तड़ित सेम सुन्दर छवि अति बनो है अतोल ॥ २ ॥ बिनु कर पांय झुनावति पिय कहं वचन मनोहर बोल ॥ हंसति हंसावति रागहि गावति बहु बिधि करति कलोल ॥ ३ ॥ रैनि दिवस पेठत नभ माहीं कबहुं न होत्त मझोल ॥ विश्वरूप अब भूल झुलोरे पुनि जिन चढ़हु मचोल ॥ ४ ॥ मलार ॥ हिंडोलना जो भूले तेरो रंग ॥ झुलि झुलि मांति रहत सो निशि दिन छूटत कर्म कुसंग ॥ १ ॥ झुमि झुमि जात न हारत मंहि पगु वाढ़ो अजब उमंग ॥ विश्वरूप गुरू मोहि झुलावो सोहं झूल अभंग ॥ २ ॥ राग मलार ॥ सखि नहि श्याम संदेश पठाये ॥ आशा दिये श्याम आवनकी कौन हेत विसराये ॥ १ ॥ कारी घटा छटा बिजुरिन की निरखि शोच डर छाये ॥ धार अपार वहत यमुना की नीर नदी भरि आये ॥ विश्वरूप प्रभुश्याम मिलन कहं दैव कुयोग बढ़ाये ॥ २ ॥ मलार ॥ सुरपति कीन्हेउ क्रोध घनेरो ॥ जगलयकर घन बंधन छोड़े व्रज पहं तु-रितहिं प्रेरो ॥ १ ॥ करिवर कर समवरषत धारहि व्रज व्याकुल बहुतेरो ॥ प्रभु करुणा निधि आरत मोचन कहि व्रज चन्दहि टेरो ॥ २ ॥ सुनतहिं गिरि कंह कर पर धारो दीन्हो अभय बसेरो ॥ विश्वरूप जगदीश दया जेहि सो न परत दुख घेरो ॥ ३ ॥ राग मलार ॥ अंधियारि आये बरसा-ति ॥ घेर सघन चहुं ओर मेघकी चपला चमक दिन राति ॥ १ ॥ मधुपुर नेह किये युवतिन सों गोप बधून सोहाति ॥ २ ॥ भवन भोग सखिमोहि नहि भावत अब जीवन केहि भांति ॥ ३ ॥ मलार ॥ देखोरी काम घटाघन घेरो ॥ विषय बूंद वरषत निशि वासर साहस वाद घनेरो ॥ १ ॥ प्रबलघि-राग वसन अति हाँचि धर तेहि भेदत चहुं फेरो ॥ समता भूमि नजरि नहिं

आवत वारि भरेउ बहुतेरो ॥ २ ॥ ले गुरु वचन सुसाज रुचिर अति छावो भवन सवेरो ॥ विश्वरूप सुख सो विहरो अब आन उपाइ न हेरो ॥ ३ ॥ राग मलार ॥ हरि बिना जियरवा तरसे ॥ रैनि दिवस अनुछन दृग बरसे ॥ १ ॥ बरषत घन मन चपल करत सोइ ॥ दामिनि दमक विरह उर सरसे ॥ २ ॥ सुरति करत मन हरत तुरित सो छवि रमणीय रुचिर जल धरसे ॥ विश्वरूप सुख रूप अलख सो चरण कमल कब परसब करसे ॥ ३ ॥ राग मलार ॥ देखो सखि कारेकीर मिताई ॥ कारे कृष्ण प्रीति करि हमसों कीन्ह दुराव कन्हाई ॥ १ ॥ कारे मेघ घटा डरपावत घुमड़ि घुमड़ि घहराई ॥ तड़पि तड़पि उर साल बढ़ावत बिरह के बाण चलाई ॥ २ ॥ कारे घन घन मगु नहि दीखत जंतु विपुल सखि मोहि नेकु न भावत ॥ ३ ॥ मलारबिहाग ॥ सखि नहि मधुपुर से कोइ आवत ॥ तन इत मन जहां श्याम पियारे भवन काम नहि भावत ॥ १ ॥ निरखि सघन बन मोर मगन मन दाण युवतिन दुख छावत ॥ दादुर कोकिल केलिमचायो दै कुबियोग सहावत ॥ २ ॥ सखि अचरज पावस ऋतु आयो बरषत अगिन बढ़ावत ॥ विश्वरूप मति बाम श्यामको कुबरी आस पुरावत ॥ ३ ॥ मलार विहाग ॥ संदेशन मधुबन कूप भरे ॥ लिखि लिखि पाती श्याम पठाये कउल न सांच करे ॥ १ ॥ जैसे दाव अनल बन भीतर बिरह ते देह जरे ॥ कवन आस जल देहि दुझावों मन न भरोस धरे ॥ २॥ अबतो आवन दूर बात सखि मोहन दूर परे ॥ विश्वरूप उर एक शोच उर मुख छबि दृगकों हरे ॥ ३ ॥ मलार बिहाग ॥ देखो सखि हरि अजहुं नहि आये ॥ बरषा ऋतु अब आय तुलाने मेघ घटा नभ छाये ॥ १ ॥ बोलत बैन मयूर कोकिला नाचत मोद बढ़ाये ॥ दादुर धुनि चहुं ओर करत अति ऋतु आगमन जनाये ॥ २ ॥ कठिन बिरह कछु कहि नहिजाई हरि न संदेस पठाये ॥ विश्वरूप एक श्याम दरश बिनु नीर नयन भरि लाये ॥ ३ ॥ राग कजरी ॥ ऐसेहरि जिबिताये न पठाये पतियां ॥ एक बोर घन बरषत जल धारा दूजे दूजे रे भरत नैना रतियां ॥ १ ॥ एक दुख सून गहन अंधियारी जाने जाने रे कवन दूजे दुख बतियां ॥ २ ॥ विश्वरूप मन मोहन मोही देखो देखो रे सबनकी भुलाई बतियां ॥ ३ ॥ कजरी ॥ ऐसे हरिको हिंडोल झुलावें सखियां ॥ कुसुम बाग तिय छत्रि सखि धारे गावें गावें रे सुराग कवन लखियां ॥ १ ॥ मोहन मुरली मधुर बजावे मोहें मोहे रे सुरेश सहस अंखियां ॥ २ ॥ विश्वरूप धन [illegible] देखो देखो रे अगम हरि रस चखियां ॥

३ ॥ कजरी ॥ ऐसे हरिके नयन मोरि मोहे मतियां ॥ चपलाई दृग टोना लाई कैसे कैसे रे लियो मोरि अस गतियां ॥ १ ॥ भइहों बिकल सखिकल न परत मोहि नहिं सोहात व्रज सुत पतियां ॥ २ ॥ विश्वरूप घन बरण शरणमोहि अवर सोहात न दूजी बतियां ॥ ३ ॥ कजरी ॥ देखो आगमंदरहु बरषत रतियां ॥ कालि रहैनि बदरा चहुं कारे कारे बरेरे ॥ करब हरि लिखि बतियां ॥ १ ॥ केतिक अवघ बिताये ऐसेझुठे झुठेरे मोहावै हरि मोरि मतियां ॥ २ ॥ विश्वरूप मगु सुरली घरके जोहे जोहेरे सकल बनचरजतियां ॥ ३ ॥ कजरी ॥ हरिगैया चरावैरे बजावै बंसिया ॥ मधुर मधुर मुरलि धुनिटेरे लगो लगोरे सबहिको विरह गसिया ॥ १ ॥ खग मृग मुख चारा लखि राखे दभो बभो रे सबै मोहन फसियां ॥ २ ॥ बिश्वरूप उर कागजहरिको लिखोलिखो रे प्रीति पिरीतम मसियां ॥ ३ ॥ कजरी ॥ बसे अजब महलरे हमारे पतियां ॥ दश दरवजवा बसे सब सखियां ॥ पियके मनाचे नहि सुने बतियां ॥ १ ॥ करति कलोल देखावति लोभहि नयन सखन दरसावै मतियां ॥ २ ॥ विश्वरूप यह नगरि न ऐहो मेटि रे गईलटुख बरसतियां ॥ ३ ॥ ॥ कजरी ॥ ६ ॥ रागसोरठ ॥ सखिरे कवन हरिको हाल ॥ सुरति ब्रजकि बिसारि दीन्हो कैसे गोपी ग्वाल ॥ कैसे यशुमति नन्द हूवै कैसे व्रजके बाल ॥ सखा संग जेकेलि कीन्हों कुंज मधुबन ताल ॥ विश्वरूप सनेह हरिको देत दारुण शाल ॥ १ ॥ सोरठ ॥ मनरघुनाथ पदरज धारु ॥ विषय परि हरि सुरति उरधरि कुटिल कर्म निवारु ॥ २ ॥ जाहि सेवत सिद्ध मुनिवर शंभु हृदय अगारु ॥ कागराज विहार्य निशदिन सेइ कालहि टारु ॥ १ ॥ सकल पदके दानि केवल हरण ममता भारु ॥ जनम मरण अनेक बंधन सघनबन कहजारु ॥ २ ॥ कहत वेद पुराण महिमा लहत अजहुं न पार ॥ शेषशारद कहत हारे शरण शरण पुकारु ॥ ३ ॥ सकल तीरथ भूतिनिवसत अगम ज्योतिसु चारु ॥ विश्वरूप बसेसदा डरछुटो जग टक सारु ॥ ४ ॥ सखिरे श्याम दुखमोहि दई ॥ बिरहगांसी लाई हरिगयो कठिन जोवनभई ॥ १ ॥ बितेउ केतिक दिवस सखिरे सुनेव बात ननई ॥ विश्वरूप वियोग दुखकोवेद विधि छिन लई ॥ २ ॥ सोरठ ॥ सखिरे आजु दुख मोहि भई ॥ राम बिनु मोहि कलन सखिरी पलकयुग समछई ॥ १ ॥ कहों केहि विधि शोच उरको निन्द दृगसों गई ॥ २ ॥ विश्वरूप बियोग छायो प्राण विधि हरिलई ॥ ३ ॥ सोरठ ॥ सखिरे प्रीति प्रभुजि खोगई ॥ झूठि पाति श्यामपठयो कपटकारधदई ॥ १ ॥ कवन पहिलो आवसखिरे शोच उरसेनई ॥ २ ॥

॥ विश्वरूप सनेह नीको भलन बिछुरनि भई ॥ ३॥ सोरठ ॥ सखिरे राज-कुंवरिहि भये ॥ लोक नाथ सनाथ कीन्हो सकल सुख विधि दये ॥ १ ॥ झूंठसवमन राज सखिरे मिलनको विनगये ॥ विश्वरूप चितेर जैसे मन सुरतिलिखि गये ॥ २ ॥ सोरठ ॥ चखोरे नाम रससुखमई ॥ नाम रस सुख धाम जानो अवररस दुखहई ॥ नारदादि मुनीश चाखो भेद मति दुरिगई ॥ विस्वरूप अलेख देखो आपु पूरणा भई ॥ २ ॥ सखिरे श्याम वसोहै विदेस ॥ रैन-दिन घन झरत जल कहं पवन सरस हमेस ॥ श्याम विरहते सुख तरिवर होत कठिन कलेस ॥ १ ॥ गोप गोपी हाल लखिके होत जियमें अंदेश ॥ विश्वरूप श्री द्वारिकाको आपु भयोहै नरेश ॥ २ ॥ लखुरे कामबंधन दई ॥ काम वसतें राम भूले सहज सुख दुरिगई ॥ १ ॥ कठिन जाल पसारि दीन्हो प्रीति निनिनितिनई ॥ २ ॥ विश्वरूप सुसाजपायो रीति हरिसो नभई ॥ ३ ॥ सोरठ ॥ जोपै कोई नेम अयसो धरे ॥ छूटति तुरितहि जगत फन्दा मोह ममिता टरे ॥ १ ॥ जैसे चातिक तृषा व्याकुल गंग जलमें परै ॥ वारि काया मुखमें न डारे चोंच वंधन करै ॥ २ ॥ वारिचर जिमि वारि बिहरत मोदउर में भरे ॥ पलक भरि होय जलसो वाहर प्राण कों परि हरै ॥ ३ ॥ विषय आशा सकल परिहरि प्रीति प्रभु अनुसरै ॥ विश्वरूप अपार भवनिधि सहज हीसो तरै ॥ ४ ॥ सोरठ ॥ विना प्रभु हिय दरदछाई ॥ रटतबीतेउ दिवस मोहिवहु दरशनहि पाई ॥ जलज जल विनु रहत नाहि तुरित कुंभिलाई ॥ १ ॥ सरितपति सर इंदु संगम वाढ़ि अधिकाई ॥ विरह चन्दहि पाई तैसे शोक बहुताई ॥ २ ॥ कल परत नहि एकछन जल मीन बिलगाई ॥ विश्व अवविनु दरश हरिके मोहि न रहिजाई ॥ ३ ॥ ८ ॥ राग विहाग ॥ कामना को तेज चाउंमानो कहाएहि दाउहों ॥ अपने रंगन्ह सुरति भिजाऊं असपे हो न उपाउं ॥ १ ॥ जगमग सुन्दर ज्योति जगाउं विनु पतंग दुति छाउं ॥ वरपत सुख हरपत जनतामह जेहि गुरुभेद लखाउं ॥ २ ॥ विश्वरूप निज सुख अरुझाउं ॥ जनमन विषय भुलाउं ॥ ३ ॥ बिहाग ॥ सांवरेके संगजाउं सखि मोहि घर न सोहाउं हो ॥ १ ॥ मधुपुर हरि गये सुधि नहि पाऊं ॥ सखिदुख उर मोहि छाऊं ॥ २ ॥ स्वाति घन चातिक चित चाउ हरि छवि चित अरुझाउ ॥ ३ ॥ विश्वरूप विधिगति को लखाउं हरिमोसे करिहे दुराउ॥ ४ । विहाग ॥ राघो हरत नपीर ॥ केहि कारण हरि देरीलगायो भय मो-चन रघुवीर ॥ १ ॥ दीन वंधु प्रभु नाम कहावत भवसागर भरेनीर ॥ २ ॥ जो महिमा नहि नामके राखिहो को लइहे मोहि तीर ॥ प्रभु कोतिक बल

मन चहंतारे गिनि न सके कोइ धीर ॥ बिस्वरूप प्रभु देहु दयाकरि बरसो स्रवन मोहि धीर ॥ ३ ॥ बिहाग ॥ कब ऐहैं यदुवीर सवन कहि रैनि दिवस दुखदन अति कायो टरत दृगन से नीर ॥ १ ॥ मृगहबिनु नीर ॥ रैनि बिनु शशिके मुख मन मणि बिनु धीर ॥ २ ॥ पति बिनु नारि बारि बिनु सफरी ब्रजजन को हियपीर ॥ ३ ॥ यमुना कोलि खेलि सखुजन किये नट नागर रनधीर ॥ बिस्वरूप प्रभु नट नागर बिनु मन न लहत कहुं धीर ॥ ४ ॥ बिहाग ॥ सेवर से जिमि कीर जगत सुख ॥ सेवत निशदिन आस लगायो चोंच लगत भयो पीर ॥ १ ॥ दीप शिखा लखि फेरत कहा बिसो जिमि रबिसों नीर ॥ २ ॥ वनिता राज भवन सुख तैसो मृगतृष्ना तोहि थिर नीर ॥ पाइ विषय सुख हरष बढायो बिछुरे होत अधीर ॥ बिस्वरूप तृण नुप भयो ठाढ ग- हंगुरु ज्ञान गंभिर ॥ ३ ॥ बिहाग ॥ भव सागर चहुं ओर अगम सखि ॥ नौ कहुं नावनि खेवन हारो ना सूझत कहुं तीर ॥ १ ॥ छन छन अगम लह- रि चहुं धावै पाइ कुसंग समीर ॥ रैनि दिवस स्वारथ ललचायो केहि बिधि ते धरो धीर ॥ २ ॥ बारंबार पुकार करत हौं बिनति सुनो यदुवीर ॥ बि- स्वरूप प्रभु जन के सुता वर राखि लेहु रघुबीर ॥ ३ ॥ बिहाग ॥ प्रभु भव जाल कब परि हरिहौ ॥ कवन यतन करिहौ सुख दायक कब हरि पद उर धरिहौ ॥ १ ॥ नरतन पाइ जो करत उपाइ न गर्भ अनल महं जरिहौ ॥ २ ॥ इत दारुण दुख विपुल लहौ ने बहुरि नरक पचि मरिहौ ॥ ३ ॥ बिस्वरूप बिनु गुरु सरणागति यम गण कह किमि टरिहौ ॥ ४ ॥ बिहाग ॥ जबते विषयन में अरु झाई ॥ तबतें चिदानन्द पूरण सुख सुरु दिये बिसराई ॥ १ ॥ कठिन त्रिगुण को फांस परो है परबस जहं तहं धाई ॥ सुख दुख लहत अनेकन्ह निशि दिन ऊंच नीच घर जाई ॥ १ ॥ कबहुंक देव द- नुज सुर पति भये कबहु को नरतन पाई ॥ कबहू राज भोग अरु झानो सु- मति बिचार बिहाई ॥ २ ॥ कबहुंक कीट पतंग भयोहैं सबल तिमिर उर छाई ॥ चलत उपाय कहा साधन को सुमति बिनुमति पछताई ॥ ३ ॥ ज- बगुरु बचन बिचार कुमति जन उर दृग मांह लगाई ॥ बिस्वरूप निजरूप लखै नय दोष तिमिर बिनसाई ॥ ४ ॥ बिहाग ॥ मधुबन सोम बाम बिसराई सातक पुंज सकल बिन बावत सुख सागर उर छाई ॥ १ ॥ तरेउ अजामि- ल आदि अधम बहु अचल लोक बसे जाई ॥ जो जो नर करे गिनती को शेष गिरा सकुचाई ॥ २ ॥ सकल बिभूति प्रताप जाहि को चरचन्हं भवस बनाई ॥ महिमा अगम पार को पावै बेद नेति नहि गाई ॥ ३ ॥ जो

भाटासि कल्याण काज तव तौ यह सुगम उपाई ॥ विश्वरूप हरि सरण गहो अब आवागमन नसाई ॥ ४ ॥ विहाग ॥ जनम हम हारे हरि लागी चरण कमल अनुरागि ॥ नांहि चहौं धन धाम विषय सुख नहि सुर पति पद मांगी ॥ नहि मत हर बड़ाई चाहौं नेह तुमहि सो पागी ॥ नहि तनको सुखसाध चहौं मैं नहि चाहौं बड़ भागी ॥ २ ॥ काहु दयाल दया जन जानौ छाड़ु शुभह दुख दागी ॥ केतिक अधम लिये अपनाई अब न नाथ मोहि त्यागी ॥ ३ ॥ तुम प्रभु मातु पिता सुत बंधु काम भवनवने भागी ॥ विश्वरूप मन मधुप पियत रस चरण कमल अनुरागी ॥ ४ ॥ विहाग ॥ अटिया डोलत मन दुख पावत रैनि ॥ जात बात भुलि गैनो महावन चेरन धरि बेन मावन रैनि ॥ १ ॥ विनय सुनत नाहि देत हरेरो बहु विधि चाम डेरावत रैनि ॥ २ ॥ बंनु घनेरे जहं तहं गरजहि निरखत धीर परावत रैनि ॥ ३ ॥ करत विषाद बहुत पछितावा कोउ नहिं डगर बतावत रैनि ॥ ४ ॥ खोजत खोजत गइलि न मिलवा सत गुरु राह मिलावत रैनि ॥ ५ ॥ विश्वरूप जबपिय घर आये ताप सकल बिसरावन रैनि ॥ ६ ॥ विहाग ॥ हियलागो दुख तीर मोहन बिनु ॥ मन मोहन कियो खेल पुलिनमें हरे युवतिन्ह के चीर ॥ १ ॥ यदुनन्दनसों ब्रज छवि छायो ज्योति बरै सिमिहीर ॥ सो ब्रज नेकु न भावत मनसों सर जैसे बिनु नीर ॥ २ ॥ काह कहौं गति ब्रज युवतिनकी मधुबन बंनु अधीर ॥ विश्वरूप प्रभु मनहरि लीन्हों सांवल छवि यदुवीर ॥ ३ ॥ विहाग ॥ आजु भयो विधि बामरी सजनी ॥ राज सुनाई विपिन कियो रामहि कैसे सहौं दुख धाम ॥ १ ॥ कब ऐहैं सियराम लषन घर ज्योति ललित घनश्याम ॥ यह चिन्ता मोहि रैनदिवस सखि नहि आवत सुख काम ॥ २ ॥ गृह अंधियार दीप बिनु जैसे तैसे भयो बिनुराम ॥ विश्वरूप शोचति हियजननी कोटिन्ह युगसम याम ॥ ३ ॥ विहाग ॥ जग जीवन केहि काम भजन बिनु ॥ काह भये गजरथके पाये का सुरपतिके धाम ॥ १ ॥ काह भयो गुरुता गुंथाये महि मंडलके ग्राम ॥ काह भयेतन भेष बनाये अंत विविध परिनाम ॥ २ ॥ काह भये बहुनेम बढ़ाये मन न लगो सियाराम ॥ विश्वरूप एकदिन चल ऐहै छूटि जैहैंघरदाम ॥ ३ ॥ विहाग ॥ ज्ञानकी ज्योति छाउं फेरिगरभ नहि आउं ॥ विषय भोग ईंधन चित चाउं महि गज बेगि जराउं ॥ २ ॥ क मक्रोध मदतम दुरि जांउ भानु प्रकाश मोहाउं ॥ विश्वरूप गुरु ऐसो लखाउं सहजहि द्वैत नसाउं ॥ ३ ॥ रागभैरो ॥ प्रात समय सुख निरखि रामको कौशिल्या हरषाई ॥

निज करतें प्रभुको मुख धोवति लेई भारी सचिराई ॥१॥ अंचल पोंछि गोद बैठावतिमन छवि रहेबलेभाई॥फल अरु फूलदेति प्रभुके कर मेवा विविधि मंगाई॥२॥ब्रह्मादिक समूह सुरजेते निज निज थलतें आई ॥ जय जय धुनि करिप्रभु यश गावत पूजत प्रीति बढ़ाई ॥३॥ चारिउ वेद रामगुण गावत निज निज वेष छपाई ॥ गान करत गंधर्व मनोहर नाना राग बनाई ॥ ४ ॥ शोभा खानि मदन छवि हारक उर धरि सबै सिधाई ॥ विश्वरूप प्रभु त्रिभुवन स्वामी हरो मोह ममिताई ॥ ५ ॥ राग भैरव ॥ श्री रघुवीर धीर जन पालक दानि अचल पद केरे ॥ वारिज नयन मोह मद खंडन जन मंडन हित हेरे ॥ १ ॥ बालापन ध्रुव कीन्ह महा तप असन बसन तजि जेरे ॥ दीनबंधु भगवन्त महा प्रभु तुरित गये तेहि नेरे ॥ २ ॥ सुर दुर्लभ वर देई शीस पर रघुवर निज कर फेरे ॥ जहं कालहुकी गति न परतु है सो पद दीन्ह बसेरे ॥ ३ ॥ सुर नर धरणि धरम बाधक खल अस रावण प्रगटेरे ॥ ताकहं मारि उबारि विभीषण कहं प्रभु तिलक करेरे ॥ ४ ॥ जय जय धुनि नभ सब मुनि गण करैं कुसुम समूह बखेरे ॥ विश्वरूप असप्रभु सरणा गति को नहिं जग उबरेरे ॥ ५ ॥ राग भैरव ॥ रमा रमण रघुवीर धीर भजु तजो मोह मद मायारे ॥ भूलि परेसि का विषय भोग में झूठे तनधन जायारे ॥ १॥ जासु प्रताप अखंड अनूपम भुवन चतुर्दश छायारे ॥ ताहि विसारि भ्रमसि कामी बस मिथ्या जन्म गवांयारे ॥ २ ॥ काकों मृग जल तृषा गयोको स्वप्नराज सुख पायारे ॥ उदधि पारचा हंसि गहि बीची हरि बोहित बिसरायारे ॥ ३ ॥ अर्थ अनर्थ रूप श्रुति गावत व्याध सरिस दुख दायारे ॥ तेहि नित मुख जोवत तुच्छनको अजहुं समुझ नहिं आयारे ॥४॥ जो सुख निधि चाहसि निशि वासर निराबाध चित भायारे ॥ विश्व रूप गहु राम कल्प तरु सबकर भूल सोहायारे ॥ ५ ॥ राग भैरों ॥ भजुमन रमा रमण भयहारी ॥ जगत बंधु जग जाल काल हर ममता भेद कुठारी ॥ कुमति कुसंग कुचाल कुमग तजु विषम रैन अंधियारी ॥ चण्ड भानु शत कोटि तेज धर अज अनीह अविकारी ॥ २ ॥ जनमन कुटिल कर्म दारुण वन लोभ मोह वनचारी ॥ जारत अनल अखंड अमित शत तरुण तेजवपु धारी ॥ ३ ॥ अभिमत दानि खानि सब सुखके करुणा सिंधु मुरारी ॥ अंतर गति जानत सब जनकी जल थल जीव अपारी ॥ ३ ॥ सबकोई ससुच घर केवल रघुकुल कमल तमारी ॥ विश्वरूप प्रभु आरत मोचन जो गजराज उबारी ॥ ४ ॥ राग भैरों ॥ अब मोहि शंभु दया करि हेरो ॥ जल अंगार

भव भाव हरण प्रभु देहु चरण महं डेरो ॥ १ ॥ जगत सघन वन पार न दीखत मोह गर्त्त बहुतेरो ॥ काम क्रोधके हरि द्वीपी वहु हठि घेरत चहुं फेरो ॥ २ ॥ खलको वचन कंठ उर वेधत सुधि न रहत तन केरो ॥ आसा नदी बहुत बाढ़ी है दीखत नाव नवेरो ॥ ३ ॥ वनचर बंधु सखा बालक पितु तिय गुरजन सब केरो ॥ इनके सुख दुख तें मानत उर हर्ष बिषाद घनेरो ॥ ४ ॥ धायउ सब दिशि कियेउ यतन वहु लगत उपाय न मेरो ॥ विश्वरूप अब शरण परो है नाथ करो निज चेरो ॥ ५ ॥ राग भैरों ॥ श्री रघुनायक जन सुखदायक द्विज सुर हित तन धारी ॥ कहत मंदोदरि विनय बहुत करि सुनु पति बचन हमारी ॥ राम बिरोध बहुत पछतैहो देखो नैन उघारी ॥ १ ॥ कालहुको भक्षक जनरक्षक जाहि नमत त्रिपुरारी ॥ तिनसों का पुरुषारथ करिहो काल वदन शिर डारी ॥ २ ॥ सुनि रावण असि गरजि तरजि अति कहत बचन भयकारी ॥ मो समको योधा जग माहीं जो सकिहै भुज टारी ॥ ३ ॥ लखि बिपरीत विधाता पियको शोच करति अति भारी ॥ विश्वरूप रघुवीर विमुखकों सकिहै कवन उबारी ॥ ४ ॥ राग भैरों ॥ जय महेश अखिलेश सनातन करुणा सागर शोक हरो ॥ कुंद इन्दुवर वरण सरिस तन अमित दिवाकर तेज धरो ॥ १ ॥ उदधि मथन संभव बिष दुर्जर जरत सुरासुर ताप गरो ॥ करिविष पान निमिष महं सबको अभय कियो यस भुवन भरो ॥ २ ॥ पर उपकार उदार काहि अस जाके प्रभु मैं चरण परो ॥ शिव केदार दानी उदारहो दानि चारफल देव तरो ॥ ३ ॥ अर्ज मानि जन जानि दयानिधि मन इच्छित फल दान करो ॥ विश्वरूप तव शरण परोहै आन उपायन काज सरो ॥ ४ ॥ रागभैरों ॥ यमपुर कौन वचैहै हो ॥ हरि बिन साथी नहीं कोइहोइ है मरणसमय जबऐहै हो ॥ मातु सुता सुत धन हित मानत सोतो इतरहि जैहैहो ॥१॥ देखु विचारि समुझ मन अपने जेसो पाप कमैहैहो ॥ सो जन तैसो अवशि लहैगो निज फल कवन दुरैहै हो ॥२॥ सावन हरित रहत नहि सब छन कछु दिन बीति सुखैहै हो ॥ देखतहू जग अंध भयो है अंत समय पछितैहैहै ॥३॥ साधन मूल पाइ नर तनं कहं जो तुम अबहि बनैहै हो ॥ विश्वरूप सोइ भाग पुंज नर अमर लोक घर पैहै हो ॥४॥ राग भैरों ॥ देखो कर्म रेख कठिनाई ॥ जोजस करत लहत तैसो फल ऐसोवेद हु गाई ॥१॥ कोउ जन असन वसन नहि पावत दुखतें दिवस बितई ॥ कोउ सुरराज भवन विहरत नित नमत सकल सुर आई ॥२ ॥ कोउ सब धरणी राज करतु है दल चतुरंग सोहाई ॥

॥ खंड खंड भूपाल जोगिकर पद रज शीस चढ़ाई ॥ ३ ॥ कोउ नर बाहन सरिस भयो है परम मोद उर छाई ॥ सकल भुवन विहरत कोउ निज रुचि कोउ यम गेह सिधाई ॥ ४ ॥ गहन कर्म गति लखि न परत यह टरत न आन उपाई ॥ विश्वरूप गहु हरि शरनागति तब यह जाल नसाई ॥ ५ ॥ राग भैरो ॥ सुनहु सिख वच रावण मेरी कहत बिभीषण बिनय करी ॥ जो जगदीश चराचर नायक रघुनायक को रूप धरी ॥ इनतें वैर कुशल नहि होइहै पछितैहो शिर आय परी ॥ १ ॥ हरन सुरेश शेस सुर जेते जेहतें निशि दिन काल डरी ॥ बंदत चरण शंभु अज जाको विनय करत उर प्रीति भरी ॥ २ ॥ जनकसुता जगदम्ब जानकी विन समुझे तेहि मूढ़ हरी ॥ लै सिय चरण परो रघुवर के और उपाय न काज सरी ॥ ३ ॥ सुनत बचन कोपेउ दशकंधर सकल अंग महं आगि बरी ॥ विश्वरूप विधि वाम जाहि कोटि यतन नहि काल टरी ॥ ४ ॥ रागभैरो ॥ जय रघुवीर दनुज कुल नाशन गरुड़ासन जन भय न गहे ॥ चौदह सहस प्रवल अति खल दल खर दूषण जो विदित रहे ॥ छनमहं कीन्ह बिनास सबन को जैसे पावक तून दहे ॥ १ ॥ रावण शकुन सेन सब मारे मोद उदधि चहुंओर बहे ॥ सुर नर नाग धर्मद्विज धरणी ह्वै प्रसन्न सुख अचल लहे ॥ २ ॥ होय अभय तप रत मुनि गणभये निज सरूप सुख अचल चहे ॥ विश्वरूप महराज रामको अति अगाध यश कवन कहे ॥ ३ ॥ राग भैरो ॥ सोई धीर सोई परम विवेकी रहे एक चितलाई ॥ द्वैत भाव कछु हृदय न दीखे ब्रह्म स्वरूप सोहाई ॥ १ ॥ अंतर बाहर भेद नहीं कछु सैंधव घन समुदाई ॥ लाभालाभ भाव नहि आवत समता सेतु नसाई ॥ २ ॥ पाप पुण्य को लेप न होवै ज्ञान अनल दहिजाई ॥ रहत सुखी दुख लेसन आवत सँग दोष तजि जाई ॥ ३ ॥ पवन अनल नभ भानु सरिस विचरत सबदिवस बिताई ॥ विश्वरूप सोइ गुणातीत है निज स्वरूप लखिपाई ॥ ४ ॥ राग भैरो ॥ प्रभु पालक सवकर आपैहो तव कृपा टरे भवतापैहो ॥ भक्तन को सतत प्रण राखत ऐसी रीति कहो कापै हो ॥ १ ॥ जानहु प्रभु तुम निज करि मानत धन्य भाग है वाके हो ॥ निर्गुण निर्विकार अविनाशी सुख स्वरूप चहुं व्यापेहो ॥ २ ॥ मैं अरु मोर तोर यह बंधन उदधि घटज हरि जापै हो ॥ बिश्वरूप बसो राम सदा हिय सहित बाण धर चापैहो ॥ ३ ॥ राग भैरो ॥ निशि दिन चेतो हरिको नाम जाको नाम असित खल तारे ॥ गुण सागर सुखधाम ॥ १ ॥ महिमा अगम कहत श्रुतिजाको हरण दुरित भ्रम धाम ॥

जननि जनक सम पालक जनके जल थल नभ सब वास ॥ २ ॥ जो जन प्रीति सहित लौ लावे घरी पलक छन याम ॥ सकल भुवन महं आगडदधि खेलहै अवल विश्राम ॥ ३ ॥ नहिं कलिमांह अवर कछु साधन केवल नाम अधार ॥ विश्वरूप रघुबीर रटो नित जीवन फल अभिराम ॥ ४ ॥ बिहाग ॥ मन अपने रूपहि अटको ॥ काया महं देखु बिचारी बाहर नाहक भटको ॥ १ ॥ अपने में सब खेल रचो है जैसे लाला नटको ॥ आपुहि में सब लीन रहत जिमि बीज मांह तरु बट को ॥ २ ॥ अमिलखनि पुतली कंचुक बहु होत मूत संघट को ॥ खोलि निहारो नजरि न आवे कछु न निसानी पटको ॥ ३ ॥ सुख स्वरूप आनन्द घन केवल दसंव दिसा में लटको ॥ विश्वरूप जोहि समुझ परो है सहजहि सब भ्रम सटको ॥ ४ ॥ बिहाग ॥ भरमत बीतेउ दिन सब तेरो ॥ पर अपवाद निरत निशि वासर कंचन प्रीति घनेरो ॥ १ ॥ रसना रस बस विषय बिबस भये नाम कबहुं नहिं टेरो ॥ पर तिय नेह गेह रुचिधारे नहिं हरि चरण बसेरो ॥ २ ॥ अमृत रस सुख नेकु पिवत नहीं भूलेउ झूठ झमेरो ॥ थोरे छिन महं समुझि परैगो जब करिहे यम घेरो ॥ ३ ॥ मानु कहा तजु अजहुं जागत सुख भजु रघुबीर सबेरो ॥ विश्वरूप यह अवसर नीको गरभ कठल मन हेरो ॥ ४ ॥ बिहाग ॥ करो मन ज्ञान भानु उजियारो ॥ ममता कुमति कुसंगति रजनी छूटत सब अंधियारो ॥ १ ॥ शमदम तोष सरोरुह सुन्दर बिगसेउ अति रुचि कारो ॥ काम उलूक लुकाने बहंतहं क्रोध कुमुद कांहं जारो ॥ २ ॥ तारा गण सब हम हमार यह कुटिल कर्म दुख भारो ॥ भये हत तेज टरत तुरितहि सब पुनि नहिं लहत पसारो ॥ ३ ॥ वेद सार उर प्रगट भयो है झलकत ज्योति अपारो ॥ विश्वरूप धनि भाग ताहिको जो निरखत निशि बारो ॥ ४ ॥ बिहाग ॥ ज्योति स्वरूप नयन बिनु हेरो ॥ कोटिन्ह रजनी प्रति दिन कर दुति सकुचि रहे तेहि नेरो ॥ १ ॥ भरत अगम सुख बरत रैनि दिन तेज पुंज छबि ढेरो ॥ शोक लोभ भय मोह सघन तम लेसन करत बसेरो ॥ २ ॥ करि बहु यतन रमत योगी जन परिहरि माया घेरो ॥ मगन रहत सुख सागर महं नित तजि सब इन्द्रिय फेरो ॥ ३ ॥ अजब वस्तु अति निकट सदा है ओट परेउ बहुतेरो ॥ विश्वरूप जो देखन चाहो गहु पद सत गुरु केरो ॥ ४ ॥ बिहाग ॥ मन तेरो लाज नसानी ॥ चलत कुपथ अभिमानी ॥ १ ॥ सचि सचि लछमी भवन संवारे पाछिल बात नजानी ॥ नारि नयनशर डुबके सागर अगहुंन

शठ पहिचानी ॥ २॥ काल कोलाहल करतरैन दिन चलन समय नियरानी विश्वरूप कब हरिपद भजिहो समुझत होत गलानी ॥ ३ ॥ बिहाग ॥ ऊधो हरि कब दरशन देइहै ॥ कौल किये सो वीति गयेउ अब कबधों यदुपति ऐहै ॥ १ ॥ नैनन नीर वहत निशि वासर कहु कब श्याम चितैहै ॥ शोक अनल जारत चहुंदिशिते कब होइ जलद वचै है ॥ २ ॥ कब प्रभु मधुर पियूष वचन वर मुरली टेर सुनै है ॥ विश्वरूप मोहनदेखे बिन यमपुर प्रायसिधै है ॥ ३ ॥ विहाग ॥ ऊधो हरि सों कहियो संदेसो ॥ कहिगये और करत हौ औरै यह मन वहुत अंदेसो ॥ १ ॥ रसना रटत थकितभइ निशिदिन मन रहै चपल हमेसो ॥ तुम बिनु जीवन प्रभुनहि होइहै बिनु जलमीन सरेसो ॥ २ ॥ आवन कहेउ वचन सोइ पालियका भूलेउ दुसरेसो ॥ विश्वरूप प्रभु प्रेम मगन सखी सुधि बिसरीतन कैसो ॥ ३ ॥ विहाग ॥ मधुकर ते सखि कहै मुसुकाइ ॥ ऊधव ते अस कहति सुनायके वचन माधुरीअति सुख दाई ॥ १ ॥ कारेते हम प्रीति करत नहि मधुर मुखर तव मोहि न सोहाई ॥ २ ॥ करितुम प्रीति अवशि बिछुरोगे जैसे यदुकुल नलिन कन्हाई ॥ ३ ॥ उड़ि उड़ि जात पलटि आवत पुनि बैठत अंचल प्रीति बढ़ाई ॥ ४ ॥ तुमरो कहा कबहुं नहिं करिहौं कोटि भांति जो करिहौ उपाई ॥ ५ ॥ कारे में गुण एक बड़ो है वरवस मन कहं लेत लोभाई ॥ ६ ॥ विश्वरूप बिन मोहन जीवन बिधि ने उलटी चाल चलाई ॥ ७ ॥ बिहाग ॥ ऊधो कब ऐहैं ब्रज राज ॥ हमसबकर सुधि जाइ बिसारेउ भूले राज समाज ॥ १ ॥ एक पलक शत कलप वितवुहै नहि सूझत कछु काज ॥ करि अति प्रीति मोहनी डारे प्रभु नटवर सिरताज ॥ २ ॥ इन्द्रिय गण गति भयेउ थकित अति जिमि वटेर लखि वाज ॥ विश्वरूप हरिसों कहियो असकरि- ये शरण की लाज ॥ ३ ॥ विहाग ॥ माता सोच करत मनमाहीं ॥ कोमल पद मगु उबट विकट अति वन घमंड चहु पाहीं ॥ १ ॥ अति सुकुमार गात रघुवर को कोउ पटतर जग नाहीं ॥ जनक सुता की काह कहों मैं सुनेउ न दुख परि छांहीं ॥२॥ रैनदिवस उर मांह विकल अति पलक कलप सम जाहिं ॥ यह दुख उदधि पार किमि जैहो कौन सुने कहौं काहि ॥ ३ ॥ काह कहों विधि की उलटी गति नहि विवेक कछु आहीं ॥ विश्व- रूप सिय राम विरहते प्राण अधम न नसाहीं ॥ ४ ॥ रागभैरो ॥ दशरथ राज दुलारे प्यारे करत सबै रखवारे हो ॥ कौशिल्या नन्दन जग वंदन हरत मोह मद मारे हो ॥ १ ॥ सबके प्राण प्राण पति जीवन दीनबंधु हित कारे

हो ॥ जो नित जपत टरत भव संकट काल कर्म दुख भारेहो ॥ २ ॥ जेहि अनादि अज श्रुति अस गावत भक्त हेतु वपु धारेहो ॥ सच्चित घन सुखसागर साहेब सब महं सबते न्यारेहो ॥ ३ ॥ लीला करत हरत मन जनके सुर नर होत सुखारेहो ॥ अस्तुति करत बिनय कर जोरे अशरण शरण उदारेहो ॥ ४ ॥ अवध पुरी बालक बड़भागी संगमें करत बिहारेहो॥ बिश्वरूप सोई बड़ भागी को कवि वरणै पारेहो ॥ ५ ॥ भैरवी ॥ बालक वृन्द लिये रघुबर करें केलि बिबिध फुलवारी ॥ करत गुंजार मनोहर मधुकर द्विज धुनि बहुरुचि कारी ॥ १ ॥ मानहुं मुनि जन रूप साज करि गावत प्रभु यश प्यारा ॥ आनन्द उदधि भरो उरअंतर तनकी दशा बिसारी ॥ २ ॥ फल अरु फूल लगे बहु भांतिन्ह भूमि नवे तरुभ.री ॥ प्रभु से बिनय करत बहुभांतिन्ह करिप्रणाम अनुहारी ॥ ३ ॥ कोउ गावत कोउराग सराहत कोउ नाचत दैतारी ॥ बाजत ढोल मृदंग बीन डफ होत उमंग अति भारी ॥ ४ ॥ प्रणत पाल करुणा निधि केशो अशरण शरण पुकारी ॥ बिश्वरूप प्रभु कृपा कीजिये सुनिये अर्ज हमारी ॥ ५ ॥ भैरवी ॥ सखियां उपमा प्रभु की नहीं ॥ ऐसो रूप नहीं जग कोई हारेउ खोजि मही ॥ १ ॥ जाइ जलज जल मांहि भवन करि अनछन सकुचि रही ॥ श्याम तमाल गरब निज परि हरि सघन गहन को गही ॥ २ ॥ बारिद जाइ सिधारेनिज थल ब्याज शरद को लही ॥ बिश्वरूप अनुपम सुखमा छवि दृग निधि बार चही ॥ ३ ॥ रागभैरो ॥ आस तोष हर नाम तुमारो ॥ जनपर दया करत तुरितहिं प्रभुहरत फन्द दुखभारो ॥ १ ॥ श्रवण सुखद अति परम मनोहर जो करै नाम उचारो ॥ अधि मादिक तेहि पांयन लोटै कर तल सुगति सुधारो ॥ २ ॥ अस दयालता श्रवण सुनेनहिं खोजेउं सब जग सारो ॥ बिनु श्रम योग यज्ञ बिनु साधन अग जग जीवहि तारो ॥ ३ ॥ फणि नायक सारद मुनि नारद गज मुख बुद्धि अगारो ॥ चरित सोहावन अमित कल्प सत गावत लहत न पारो ॥ ४ ॥ गुण अगार संसारभार हर जनहित परम उदारो ॥ बिश्वरूप प्रभु अंतरयामी जानत हाल हमारो ॥ ५ ॥ भैरवी ॥ माया में भुलाने मन हरि को न जाना ॥ निशि दिन करत बिषय कोलटिनी मोह जाल अरुझाना ॥ १ ॥ रबिकर निकर सरिस जग सुखहै तूसठ नांहिं कियें पहिचाना ॥ २ ॥ कहुं सपना संपति को धनिक भयेतेहि बस नाहक होत हैराना ॥ ३ ॥ नाव करु हेतु रघुबर ते धन जन बिभव जानु दुख थाना ॥ ४ ॥ धीर सुजान सोइ जगमांही जो हरिपद लपटाना ॥ ५ ॥ बिश्वरूप

यह अवसर बीते यम पुर में परि है पछितानां ॥५॥ भैरवी ॥ खपरी जग की चतुरैया ॥ अपने गये अवर को खोवत करत कुपथ में प्रीति सदैया ॥ १ ॥ सपनेहु नहिचित धरम धरतु है असत कर्म के नाव चलैया ॥ २ ॥ कब हुन हरि सों हेतु करतु है हेतु निरंतर सुत पितु मैया ॥ ३ ॥ विश्वरूप धिग राम शरण बिनु को सठ तो कहं पार लगैया ॥ ४ ॥ भैरवी ॥ सखि नियरैलो तेर गवनवां ॥ समुझ करो का गहसि मनववां ॥ १ ॥ नैहर गैले गर्व भुले ले बासन ऐवे पिय के भवनवां ॥ २ ॥ ॥ जवउहं स-ह्वे ताप त्रिविधि, विधि तब तूं लगवे केहिके गोहनवां ॥ ३ ॥ विश्वरूप पिय चेत सवेरे फेरि नहि ऐबे देश अवनवां ॥ ४ ॥ भैरवी ॥ भूलेसि कातन रहेउ लोभाई ॥ जिम विट भस्म अंत है जाको तो कह सो सुधि अवहुन आई ॥ १ ॥ गये कंचन के नृप न रहे कोउ अवर तुच्छ की कावन च-लाई ॥ २ पृथु गुरु गया गाधीनहु सगये और ययाति नृपति समुदाई ॥ ३ ॥ गये नमुचि संबर भौमासुर कनक कशिपु गये तजि ममताई ॥ ४ ॥ रावण गये जासों डरत सकल जग तिहं मारेउ बण महं रघु राई ॥ ५ ॥ विश्वरूप गहु राम अचल पद अवकी भूल बहुत दुख दाई ॥ ६ ॥ भैरवी ॥ हंसा करो सरोवर बास ॥ आनद जल तहं पूरिरहो है प्रेम कमल सोहेपर गास ॥ १ ॥ काई कपट रहत तहं नाहीं अति अगाध निशिदिन सुखरास ॥ २ ॥ घटत बढ़त कहूं मर नाहीं रहत येक रस बारह मास ॥ ३ तहं अंधि-यार लेश कछु नाहीं अमित भानु सम सदा प्रकाश ॥ ४ ॥ क्रूर काक तहं जात कबहिं नहिं उहां मिलत नहिं बिषय बिलाश ॥ ५ ॥ विश्वरूप सत गुरु शरणागत मोति चुगे मिटे जग त्रास ॥ ६ ॥ भैरवी ॥ हरिबिनु मोकहं कछु न सुहाई ॥ गयउ बहुत दिन सुधि नहि पाई ॥ १ ॥ काह भये कछु बूझि न परतुहै पर बस भये कि सुधि बिसराई ॥ २ काहे को हरि प्रीति लगायो अब हरि बिनु मोहि कछु न सोहाई ॥ ३ ॥ विश्वरूप ब्रज नाथ दरश बिनु पलक कल्प सम निशि दिन जाई ॥ ४ ॥ भैरवी ॥ गहिरि नदि-या कैसे पार लगो बहुत संदेशा चित में रहो ॥ आरत हरण सुनत हों नाम प्रभु सत्य करो जस वेद कहो ॥ २ ॥ अगम लहरि कछु सुझिन परतु है परेउ मांझ बहु ताप सहो ॥ ३ ॥ विश्वरूप प्रभु संकट टारो आपन जानि के बांह गहो ॥ ४ ॥ भैरवी ॥ गये बहुत दिन रहि गये थोरे ॥ अजहुं च-लसिना प्रभु की ओर ॥ १ ॥ विषय लहरि महं भूलि गये का आइ तुलाने काल कठोर ॥ २ ॥ किये भजन को कौल गर्भ में बाहर आवत परि गये

भैर ॥ विश्वरूप अंतहु पाछते हो हरि बिनुनाहि मिटे दुख हैरि ॥४॥

भैरवी ॥ चलना अके संग नही रे ॥ सुत बित नारि तु हित करि मानत सोतो के तजि इहांई रहोरे ॥ १ ॥ बहुत नृपनन्ह को राज गयो है रहत न धन मद को समही रे ॥ २ ॥ जाके संग बहुत दल सोभित सो सम छिन महं जात वही रे ॥ ३ सूर बीर केते ह्वै चलि गये जाको बल को संकत कहो रे ॥ सभ नर अंध भये नहि सूझत निशु दिन रहत कुपंथ गहीरे ॥ विश्वरूप गहु राम शरण अब भव जल अगम जो पार चहो रे ६ ॥ भैरवी ॥ भारि नदिया देखि बहुत डरों अब केहि भांतिनि बाह परों ॥ १ ॥ धार अपार नहीं ठहरावा ता महं जन्तु समूह भरो ॥ २ ॥ जो पै धत सो पलटि न आवत गाह मकर गहि ग्रास करो ॥ ३ ॥ नाव बेरा कछु बुझि न परतुहै केहि बिधितें अब पार तरों ॥ ४ होत चकोह भयंकर नाना सभ कर धीरज निरखि टरो ॥ ५ ॥ ऐसन हित कोइ बुझि न परतु है जासन मेरो काज सरो ॥ ६ ॥ राम नाम दृढ़ नाव करे अब कन हरि या गुरु चरण धरो ॥ ७ ॥ बिश्वरूप रघुनाथ कृपा तें सह-जै भव जल पार तरो ॥ ८ ॥ भैरवी ॥ रघुवर अजब तमासा तेरो ॥ नट-वर सम प्रभु खेल कियो है जोव फसे तेहिफेरो ॥ कोउ भूले राजभोग सुख कोउममता फन्द घनेरो ॥ १ ॥ नारि पियारिबहुत मानत उर भयोहै काम को चेरो ॥ परबस भ्रमत सदा कपि समनित नहि थिरता छनकेरो ॥ २ ॥ तृष्णा उदधिबढ़त छनछन अतिलाभ शशिहि जब हेरो ॥ बढ़ो तरंग ढगे सब दृग चहुंदिशि भयो अंधेरो ॥ ३ ॥ गारुड़ि तब स्वरूप श्रुति संमत जब उर करै बसेरो ॥ बिश्वरूप भव जाल छुटै तब मुनि जन सबै निबेरो ॥ ४ भैरवी ॥ गहुशरणागति मन रघुबरकी काभूलेसि जग नातारे ॥ ताहि बिसारत मूढ़ मोह बसि तजि अमृत बिषखाता रे ॥ १ ॥ रिपुके बंधु विभीषण आरत परे चरण जल जाता रे ॥ रिपु मति उरन गहे करुणानिधि दीनबंधु जनत्राता रे ॥ २ ॥ कीन्ह अस कलं ॥ पति कहं प्रभु सजल नयन मुसुकाता रे ॥ ३ ॥ भेटत करि सतकार बार बहु हर्ष न हृदय समाता रे ४ ॥ कोमल चित जनअघ न गहत हरि जिमि जननी शिशु साता रे ॥ विश्वरूप अस प्रभु उदार भजु मन बांछित फल दातारे ॥ ५ ॥ भैरवी दानि शिरोमणि राम सुजान प्रणत कल्प तरु कृपानिधान ॥ १ ॥ अभिमत दाता भव भय त्राता पालन करता सम समान ॥ जन सुकंठ कोप प नेवारो बालि अधम हति एके बान ॥ राजविभिष दियो है लंको रावण जीति समर मैदान ॥ बिप्र सुदामा किम्रो अयाचक सभ

भुवनमें यश प्रगटान ॥ विश्वरूपप्रभु कृपा करो अबहरो मोहममता अज्ञान॥४॥ भैरवी ॥ त्रिगुण तनीया सबै अरुझान ॥ आपन रूप नहीं पहिचान ॥ आवत जात भ्रमत बहु भांतिन्ह काम क्रोध मदमें लपटान ॥ १ हरि पद प्रीति करत नहि कबहूं विषय चाह दिन दिन अधिकान ॥ परमारथ हिय नांहि गहतु है स्वारथ में सब दिवस सिरान ॥ ३ ॥ भक्ति प्रभाव लखत नहि कबहूं माया मोह को हित करि मन ॥ इन्द्रिन के वसि भूलि गयो है निज करनी नपरत पहिचान ॥ विश्वरूप भ्रम त्यागि भजो हरि सो जन जग महं चतुर सुजान ॥ ४ ॥ विहाग ॥ सोई गवंवले मनुवां मोर ॥ १ ॥ राखि सकै जासकोउ जग नाहीं इहा न बस गति होइ है तोर ॥ २॥ जाना दूर नही कछु सामर कैसे जैबे राह कठोर ॥ निर्दय दूत कहा नहि माने कितनो विनय करों करिसोर ॥ ३ ॥ अवर उपाय नही बचिबे की बेगिजाहु तुम हरि की ओर ॥ विश्वरूप प्रभु शरण गहहु अब तब मिटिहै भव भयदुख घोर ॥ ४ ॥ विहाग ॥ मस्तानो मन मत वारे रहा निरंतर एकता रे ॥१॥ जिमि उन्मत फिरत है जहं तहं सुधिन रहतहै तनकारे ॥ जो कछु भये बहुरि जो होइहै जो वर्त्तत नहि चित धारे ॥ २॥ काम क्रोध का तार कठिन हे ज्ञान अनलते तेहि जारे ॥ प्रेम पियाला पियो मगन होय सकल वस्तु महं यह सारे ॥३॥ है यह अगम मिलत सुधि नाहीं खोजत जोगलसब हारे ॥ सतगुर कृपा कोउ जन पावतपियत छूटेजग व्यवहारे ॥ विश्वरूप घर अचल बैठिरहु आवा गवनते भयेन्यारे ॥ ४ ॥ परज ॥ सून भवन मन करो बसेरा ॥ जहवां चन्द सूर कोउ नाहीं राति दिवस नहि सांझ सबेर ॥ स्वर्गनरक तहं लोक नहीहै धर्मअधर्म न कछुक निबेर ॥ नहिं छितितेज पवन नहि पानी नहि माया कर लागत घेर ॥ २ ॥ चर अरु अचर कोउ तहं नाहीं नाहि सुरासुर कर्मके फेर ॥ ऊंच नीच तहंवां कोउ नाहीं नहि है साहिब नहि कोउ चेर ॥ ३ ॥ विश्वरूप हय अलख पुरुष एक सोहि समुझे भ्रम मिटि है अंधेर ॥ ४ ॥ परज ॥ भजुमन दशरथ नन्दकुमार ॥ भूमीद्विज सुर भार हरण हरि लिये जनहित अवतार ॥ १ ॥ रावण सकुल सदल मारे इत करो उते लीना रुचिकार ॥ उत खल कठिन कंस काहं मारे टारे इत मही सुर भार ॥ २ ॥ उग्रसेन कहं और विभीषण इत उत कीन्हसुधार ॥ पावनि नीर वहति सरयू इत भानु सुता उत धार ॥ ३ ॥ इत चरित्र वन हतेउ ताड़िका उत बक भगिनिही मार ॥ गौतम तिय तारे इत प्रभु उत धन पति तनय उद्धार ॥ ४ ॥ राम कृष्ण वर वेष मनो-

हरसिय राधा वर प्यार ॥ विश्वरूप प्रभु भक्त हेतु करे मथुरा अवध विहार ॥ ५ ॥ भैरवी ॥ ऊधो येहें की नहि ब्रज लाल ॥ एक पलक सत कल्प वितनु है हमसब प्रभु विन रहत बिहाल ॥ १ ॥ कोउ सखि कहत अबहि नहि येहें भूलेउ धन मद राज बिशाल ॥ २ ॥ हम सब ग्वालिनि कवन पुछन्नु हे जेहि सेवत अज शिवधन पाल ॥ ३ ॥ लक्ष्मी जेहि पद नाहिं बिसारत रहति निरंतर तजि निजचाल ॥ ४ ॥ प्रीति करत थिर नहि नन्द नन्दन छन में बिछुरे छन में दयाल ॥ विश्वरूप हरि प्रेम मगन भई सुत वित बंधु भुलेउ जगजाल ॥ ५ ॥ भैरवी ॥ राम ब्रह्म व्यापक निरधार ॥ सदाप्रशांत अभय निशि बासर जंहवां द्वैत नहीं व्यवहार ॥ १ ॥ बोधसरूप शुद्ध सुख सागर सब कारज कारणते न्यार ॥ २ ॥ वेदहु की जहां गति न परतु है भेद प्रपंच करे पैसार ॥ विश्वरूप जेहि संमुखि परो है छूटेउ साधन कर्म अपार ॥ ३ ॥ भैरवी ॥ भूलेमनुवां भटका खात तेहिते जनमि जनमि पछितात ॥ १ ॥ आवत जात चखें चौरासी भ्रमत सदाई नहीं थिरात ॥ कर्म कठिन भरभेट देत है शिर परसहत महा दुख घात ॥ २ ॥ बिश्वरूप हरि शरण अजहुं गहु भली भांति सबबनी हेवात ॥ ३ ॥ बिहाग ॥ अब मोहि निज जानो रघुवीर ॥ प्रणत पालकरुणा निधान हरि सेवक बस श्रुति सेतु शरीर ॥ १ ॥ सकल सुर शुरनमतसदा जेहि कोउ संमुख न परत असधीर ॥ पालत मातु पिता जिमि बालक पालन करत हरत सभपीर ॥ इन्द्री गणदुख घोर नेवारो चरण कमल मन देहुगम्भीर ॥ २ ॥ अवकी विनय मोर मति डारो अर्ज सुनो प्रभुचित होय थीर ॥ विश्व रूप प्रभुदीन बंधु हो अशरण शरण हरो जनपीर ॥ ४ ॥ बिहाग ॥ सखि छियगहि लेपिय के शरणवां ॥ चेतु सबेरे फेरि न अवन वां ॥ १ ॥ सेंदुर सत्य सोहाग बनो हे पहिरो सुन्दर भक्तिगनवां ॥ ज्ञान बिराग बसनझलकावो निशिदिन होइरहु पियके मगन वां ॥ २ ॥ लोक कानि यह सवति बड़ी है तेहि के ओचका ताप सहन वां ॥ विश्वरूप यह समय चूके तें मेटिहे नहि जगजन्म मरणवां ॥ ३ ॥ भैरवी ॥ को दयाल रघुबर समभाई ॥ मुनि जन हेतु गवन किये बनके अवधराज सुख सब बिसराई ॥ १ ॥ देखि राज सुरपति मन चाहत तिया समान सो मनहि न आई ॥ सकल मुनिन कहंदरशन दीनो निरखत नेनन नाहिं अघाई ॥ २ ॥ निरखि मगन भए सुधि सब बिसरी जैसे रंक सकल निधि पाई ॥ तप फल भएउ गयेउ ज्ञतन को जैसेवर्षातरु समुदाई ॥ ३ ॥ अस्तुति करत भरत उर आनन्द

जयकृपाल जयजन सुखदाई ॥ फल अरु फूलदेत भरि दोनन्हलेत राम अति प्रीति जनाई ॥ विश्वरूप गहु रामचरण अवके डु सकल मनकी चतुराई ॥ ५ ॥ परज ॥ वादिन भजन बिनु जन्म कियेरे ॥ ना सतसंग न साधु की सेवा ना विप्रन के दानदियेरे ॥ १ ॥ तीरथ वरत नहीं कछुकीन्हो पर उपकार न कबहुं कियेरे ॥ २ ॥ कथा सुधारस धार वहतु है नाहि श्रवण पुट कवहुं पियेरे ॥ ३ ॥ विश्वरूप रघुवीरशरण विनु कीट सरीखे जगमें जियेरे ॥ ४ ॥ विहाग ॥ गहुरे निजसरूप मन भावन ॥ तजु प्रपंच सब आगम मोह कर दारुण शोक बढ़ावन ॥ १ ॥ अलख अगोचर नेति नेति जेहि कहत है वेदसिखावन ॥ अगम अनादि सनातन सुख घन शुद्ध निरंजन पावन ॥ २ ॥ जैसे रविप्रतिबिंब अमित घटदीखत अमित रूप छवि छावन ॥ नहिं परमारथ भेद वस्तु कछु केवल एक सोहावन ॥ ३ ॥ लवण पुतरी परेउ अगम जल सकै कवन बिलगावन ॥ विश्वरूप अपने पूरण भये फेरि रहत नहिं आवन ॥ ४ ॥ विहाग ॥ विनु हरि मन सुख कतहुं न पैवे ॥ कोटि यतन करि जो जग धैवे ॥ सुर तरु आकछाकी सम तो कहं अमिय भोजन विखसम खैवे ॥ १ ॥ करतल विभव बिरानें होइ है नरक सरिस स्वर्गहु जो जैवे ॥ २ ॥ हित अरि होइहै गुण अगुण सम विविध भांति सेवा जो लैवे ॥ ३ ॥ विश्वरूप येकरास भजन बिनु पर बसहोय अंतहु पछितैवे ॥ ४ ॥ ठुमरी ॥ जग सुख जन्म क्या खोयारे देखाने वाहवा ॥ नजीरी कूचकी गाजे क्यों गाफिल होतरे काजेगरभ तो फेरसो लाजे ॥ १ ॥ रैनदिन सैन के राजे जो वालुन घेरि के छाजे जियय सुख मे हसो टाजे ॥ २ ॥ समुझि जब जगत सो भाजे जो कानन दाव को लाजे लखोरे विश्वमे आजे ॥ ३ ॥ खेमटा ॥ छ्ड़ो नेहियां रसीले छवीले हरि अपने सुख भवन वातु कहि नागर रंग रंगीले ॥ १ ॥ ब्रजललना दृग चपल वाण गहिमारत मोहि गसीले ॥ विश्वरूप मन मोहन प्यारे कोकरिहारे छवीले ॥ २ ॥ भैरो ॥ हरो क्योन मानरामोहो ॥ अपनो जन हरि जान ॥ भय हरि लीजे सुख पद दीजे देहु ज्ञान के बान ॥ १ ॥ अगजग कर्ता सब को हर्ता मोह तिमिर को भान ॥ प्रभु मुखतेरो मुनि हित हेरो विश्वरूप के ध्यान ॥ २ ॥ भैरो ॥ राम कृपाल दयानिधि के शो पतिराखो प्रभु तुमहि बड़ाई ॥ एक भरोस आस हरितेरो अवर नहीं मोहि द्वितिय सहाई ॥ १ ॥ गति मति भुक्ति दानिसवही कहपालत यथा भाग समुदाई ॥ सकलचराचर कर्ता केवल इन्द्रजाल मयजग दरशाई ॥ २ ॥

ऐसी प्रतीति भई प्रल्हादहि सुखी भये सब भय बिसराई ॥ पितु कृत ताप दाप नहिं व्यापेउ जिमि अनीशअत्तंत्र टरिजाई ॥३॥ जल थल सरिस मगन होय सोवत बिष अमृत पावक शितलाई ॥ मंहा मत्त कुंजर पगुतन पराई सम नहिं भारबुझाई ॥४॥ मारण मंच किये सबद्विज गण भये बिपरीत गिरे मुरछाई ॥ बिश्वरूप जेहि प्रभु रखवारो काल प्रचंड निकट नहि आई ॥ ५ ॥ परज ॥ देखो देखो मुरलिया श्याम को ॥ अमित चन्द रवि दुति उजियारी निरखत मन बिश्राम को ॥ १ ॥ सकल निगम तें पूरि रही है आनन्द कर छवि धामको ॥ त्रिभुवन मन मह पटतर नहिकोउ हारी सब शशि आन को ॥ २ ॥ विश्वरूप मोहति मन मोहन करत अधररस पानको ॥ ३ ॥ भैरो ॥ अद्वय ब्रह्म सनातन पुरुष केवल एक अधारो ॥ स्वगत सजाति बिजाति भेद ते रहित शुद्ध सुख सारो ॥ १ ॥ निजगत भेदरहत जिमि तरुमहं पातफूल फल डारो ॥ भिन्न भिन्न तरु भेद सजाति गिरि बिजाति देवहारो ॥ २ ॥ त्रिविध भेदनहि घटत अकलमहं असमत वेदबिचारो ॥ अचल अमलअजव्योति अनूपम बुद्धि बचन मन न्यारो ॥ २ ॥ जिमि माला महं अहि वपु भाषत पाइ कछुक अंधियारो ॥ तिमि निगु णमहं नाम रूप दोउ गुण मयभेद अपारो ॥ ३ ॥ तजि त्रिपुटीरति भेद जनित मति होति सब बिषय बिकारो ॥ बिश्वरूप निज बोध आत्मा सोऽहरूप हमारो ॥ ४ ॥ बिहाग ॥ माधव मनकृत जग व्यवहार ॥ जोमन जीति कियो वस अपने सोजन भव तेन्यार ॥ १ ॥ जेइ जेइ गुणत होत सोइवपुनट वर सम टका सार ॥ छन महं भुवन सकल फिरि आवत जिमि सबठौर अगार ॥ २ ॥ नारि नयनअति प्रबल सिलीमुख जब बेधत उरपार ॥ तासु सरूप होत आतुर तब भूलत सकलबिचार ॥ ३ ॥ रसनाते रसस्वाद पाई बहु धावत करतअपार ॥ पाये हर्ष विषाद मिलेबिनु अरिहित गहतबिकार ॥ ३ ॥ तबस्वरूप सुखरूप भानु जब हृदय करै उजियार ॥ बिश्वरूप मन दोष अमित तम नसत न लागे बार ॥ ४ ॥ बिहाग ॥ रघुवरजो से आदर चहुरे ॥ जेह आदर तें सब घर आदर पुनि न अनादर लहुरे ॥ १ ॥ जाको भूति भुवन महं व्यापी कलअखंडित वहुरे ॥ आज्ञा करत सुरासुर जाको कर बांधे सिरमहुरे ॥ २ ॥ जाके बलतें शेष शीस पर सरस धराम महिरहुरे ॥ येकालिकाल कठिन पातक दल नाम अनलते दहुरे ॥ ३ ॥ निर्बल कोवल श्रीकरुणा निधि जो दृढ़ पद रज गहुरे ॥ मानुष देह साज भल पायो परबस दुख जनि सहुरे ॥ ४ ॥ कमल नयन जनत प बिमोचन तासे बिनय निज कहुरे ॥ बिश्वरूप प्रभु अम

उधारण केहि अपराध तजहुरे ॥ ५ ॥ बिहाग ॥ माधव मनकी मेलिहरो ॥ बिनु तव कृपा कटाच महाप्रभु कवहुन फन्दटरो ॥ १ ॥ मुकुर मलीन नहि मुख दीखत जो सनमुखहि धरो ॥ तिमिउर बसत दीखत नाही हरि ऐसो ओट परो ॥ २ ॥ मनकृत वेग अनेक बिबिधि विधि सहस प्रबाहभरो ॥ जीवनिकाय व्रहतन लहत थिति कोटि उपाई करो ॥ ३ ॥ सबको पतिहित मतिदायक असदीखत नहि दुसरो ॥ सिंधु अगममहं उपल तरणि चढ़ि कहहु कवन उबरो ॥ विश्वरूप प्रभुगहु शरणागति को भवजल न तरो ॥ मेरिबेर प्रभु देरिकिये का मन अतिशोक गरो ॥ ५ ॥ भजन ठुमरी ॥ काहभये बहु भेप बनाये जो दिल रामन आयारे ॥ लोभ बिबस मन छोभ बढ़ावत रसनावस नित धायारे ॥ गहत कुसंगकुचाल कुमारगक्रोधके कोशभयारे ॥ १ ॥ परतिय परधन प्रीति निरंतर परअपकार बढ़ायारे ॥ निगमागम गुरुमत नहिमानत कल्पित मतठर भायारे ॥ ॥ २ ॥ पूजा हेतु दंभबहु विधि करे देखरावत बहु मायारे ॥ एकोछन हरि भजन करत नहिकपट बजार बसायारे ॥ ४ ॥ देखतहु भये अंधनैन दोउ नहि समुझत समुझायारे ॥ विश्वरूप जन यम गणऐहें भुलिहे सकल उपायारे ॥ ५ ॥ परज भजन ॥ देखोरे जग चीन्हत नाही ॥ अकल अनीह जाहि श्रुति गावत सोबैठे अपनेघट माही ॥ १ ॥ शुद्ध सनातन व्यापक चेतन कोटि चन्द रविद्युति समुहाही ॥ २ ॥ रविकरनीर निरपि नितधावत तृषा न मिटे अधिक अधिकाही ॥ भयेदृग अंध बंधनहि सूझत जैसे हठि कपिकीर बंधाही ॥ ३ ॥ चिन्तामणि तजि कांच गहतुहे भटकत फिरत नकबहुं थिराही ॥ तजि आत्मा सुखसिंधु मे हृत्रस पिवत ओसकण कैसे अघाही ॥ ॥ ४ ॥ सुतवित देहनेह अति बाढ़ो सपन बिभव मानत थिरताही ॥ विश्वरूप गुरुघट संभव विनुभव दुर्गम जलनिधि नसुखाही ॥ ५ ॥ साम कल्याण ॥ मेरेहिये बसोघनु पानी ॥ चितनहि टरत हरत दृगदृग बरकर सर लसत बसतमनहि नितकंज नयन छवि ऐनबैन कहि मतियां हरत मुसुकानो ॥ १ ॥ गति चतुराई चित लेतहे चोराई चहुं चमक छटाईं तड़िताई पटछाईहे ॥ विश्वरूप चित लज्जित मदन भयेनिरपि वदन छवि खानि ॥ २ ॥ साम कल्याण ॥ हमभले तुम्हैं पहिचानी ॥ थिर नहि रहत गहत कर यदुवर रसवस चपल हरत चितवनि चितकंज वदन छवि सदन शिरोमणि मन मोहन छविखानी ॥ १ ॥ नन्द कीदोहाई तोहि कहत कन्हाई अवछोड़ु चपलाई लरिकाई न भलाईहे विश्वरूप व्रजजन वसकिये काहिवयन सरसरस खानी ॥ २ ॥ भजनठुमरी ॥

मनचेतो राम सुजान सपने समजगरे ॥ काम कुटिल दुखमूल शूल प्रटतेहु वसि अधम भुलानि विषयारस मगरे ॥ १ ॥ कनक कामिनी क्रोश लोभ घरे भटकत जन्म सिरान छूटे चितपगरे ॥ चेतनतन मानुष को पायो सोनहिं ममुझ अपान जैसे जडगनरे ॥ २ ॥ बिश्वरूप शिरकाल बैठुहहिं अवशि ह्वै गेप्रान बचिहो कोहिलगरे ॥ ३ ॥ भजन ठुमरी ॥ मनभजिले राम उदार ॥ निशि दिन छनछनरे ॥ मातुउदर दुख लहेउ विविधि विधि कीन्हें भजनकरार ॥ भूले तन धनरे ॥ १ ॥ अजहुं कुमग तजुशुभ मग पग सजु जग सुख टरत न वार जैसे रजकनरे ॥ २ ॥ करिवहु यतन कहेउ गुरुहित मति बेधत नाहिं पहार जैसे सर घनरे ॥ ३ ॥ बिश्वरूप प्रभु एक शरण विनु सुनि है कवन पुकार जब गहे यम गनरे ॥ ४ ॥ भजन बिहाग ॥ अब जिन बिछुरो राम दृगनतें ॥ गुण निधान करुणा को सागर ममता हरु बिपशनतें ॥ १ ॥ तव मुख चन्द्र चकोर होउ मन प्रीति पपीहा घनतें ॥ तेरो चरित अगाध बारि मन मीन पीन निशि दिनतें ॥ २ ॥ दृग भरोस आशा दृढ़ तेरो दूसर आस न मनतें ॥ हसनि चलनि बोलनि मन भावनि निरखौ प्रभु अनुछनतें ॥ ३ ॥ काम कुटिल तव भय दुख दाई बेगि टरो यह तनतें ॥ बिश्वरूप रघुवर सुर तरु तजि याचो काहि कृपिनतें ॥ ४ ॥ परज ॥ करि सुर काज अवध प्रभु आये ॥ सहित लषन सिय राम बिराजत अगणित रति पति छबि सकुचाये ॥ १ ॥ पुर जन कंज राम रवि निरखत बिगसे मोद सरस उर छाये ॥ निरखत भरत परे प्रभु चरणन्ह मगन भये तन सुधि बिसराये ॥ २ ॥ मिलत सप्रीति भरत से प्रभु जिमि राका शशि जल निधि पकठाये ॥ ३ ॥ एकहिं बार मिले सबतें प्रभु धरि प्रति रूप न कोउ लखि पाये ॥ गुरु वशिष्ठ मुनि वृन्द सबै मिलि रामहिं तिलक दिये हरषाये ॥ बरषत कुसुम देव मुनि हरषत ब्रह्मा नन्द मगन समुदाये ॥ बिश्वरूप प्रभु राम राजतें सकल भुवन के शोक नसाये ॥ ४ ॥ परज ॥ राधिका हरि रास लोभाये ॥ कुंज लता बन सघन सोहावन तरु फूले दल हरित सोहाये ॥ १ ॥ राधे केश कुसुम रु चिकासे निज कर रुचिर हार पहिराये ॥ कुमुद बंधु कर रुचि कर सोहे बन प्रकाश चहुं ओरहिं छाये ॥ २ ॥ मुरली टेर कियो मधुवन हरि सुनत सखी मन मोद बढ़ाये ॥ बिश्वरूप मोहन संग बिहरति सब सखि छन सम रजनि बिताये ॥ ३ ॥ बिभास ॥ अवध पुरी सरयू तट बिहरत रघुराई ॥ सघन बन सोहावन अति सुन्दर सुर पुर समान निरखत मन खैंचि लेत मोद हिय बढ़ाई ॥ १ ॥ मनोहे सुगन्ध अ-

मित लहत नाहि कोउ प्रमित सुमन फल अपार लगे महि तरु नेह छा-ई ॥ अलि गन गुंजार करत विविध विधि प्रमोद बढ़त पीवत रस मधुर खानि रहत नित लोभाई ॥ २ ॥ निर्तत हैं मोर जाति गान करत कोर पति कोउ द्विज राम चरण निरखि ध्यान लाई ॥ ३ ॥ पंछी फल रुचिर खात हर्ष नाहि उर समात कंचन मय भूमि सकल सोभा निधि छाई ॥ बिश्वरूप राम धीर बिचरत कर धनुष तीर सीता लछिमन समेत आनन्द अधिकाई ॥ ४ ॥ ठुमरी ॥ बिनु रघुवीर न जरनि नमाई ॥ यह जग जाल कराल साल प्रद छुटै न अवर उपाई ॥ १ ॥ ध्रुव प्रहलाद अंब ऋषि ना-रद सनकादिक समुझाई ॥ राम नाम रस अमिय पान करि विहरत शोक विहाई ॥ २ ॥ वालमीक घट संभव मुनिवर जपेउ नाम मनलाई ॥ ज्ञान भवन सुख रूप भयो है चहुं दिशि कीरति छई ॥ ३ ॥ अवहूं मनु जानु हित अपनो छोड़ो आश पराई ॥ बिश्वरूप सुख सिंधु टानि हरि केवल गहु शरनाई ॥ ४ ॥ भजन ताल जल्द ॥ जय जय अवधेश सुवन रघुवर सुखदाई ॥ जगत जाल तिमिर हरन दीन दानि सकल शरन नटवर सम खेलकरन लीला दर्शाई ॥ १ ॥ रावणारि असुर मारि द्विज सुर महितापटारि मुनिजन होय अभय ध्यान चरण में लगाई ॥ अस्तुति सभ देव क-रत सुमन वृष्टि सुभग होत बाजत बाजा अनेक दिशि दिशि धुनिछाई ॥ २ ॥ नाचत सब देव वधू मुनिजन मिलि गान करत निरखत हिय मगन होत आनन्द अधिकाई ॥ ३ ॥ कपि दल सब निकट ठाढ़ चरण कमल प्रीति बाढ़ लंका पति भूषण पट सब के पहिराई ॥ ४ ॥ बिश्वरूप रामदास करत नाहि जगत आश रिद्धि सिद्धि बिभव सबै आपुहि चलिआई ॥ ५ ॥ राग टोड़ी ॥ हरहु राम काम घोर मोरके घटासे ॥ रैनिवार चित चकोर विषय चन्द प्रेम कीन्ह चरण कमल छाड़ि दीन्ह मोह मंद फांसे ॥ १ ॥ तड़ित चमक सघन गेह तासों प्रेम अधिक कीन्ह आपनो निहारि लीन्ह मूढ़मंद आसे ॥ २ ॥ जात कुपथ करि कुसंग निगम बोध चित न दीन्ह कोटि भांति रोय कीन्ह योग युक्ति पासे ॥ ३ बिश्वरूप प्रभु रमेश कमल नयन नयन कोर हेरि हरो कुमति घोर सकल शोक त्रासे ॥ ४ ॥ राग टोड़ी ॥ रवि ललाम श्याम चोर भोर के छटासे ॥ ग्वाल बाल संग बटोरि कुंज भ-वन केलि कीन्ह अमित मोद सबै दीन्ह प्रेम पुंज प्यासे ॥ १ ॥ झलक रु-चिर ललित केश कमल कोस भवर पांति मणि समूह भांति भांति तड़ित घन घटासे ॥ २ ॥ वमन कमन कटि सुदेश लजित हार देव छन्द ज्योति

भानक सूर चन्द मन्द मन्द हासे ॥ ३ ॥ विश्वरूप छवि अपार चकितहोत मदन हेरि सकुचि सकुचि दृग न फेरि सरिस कहां कहांसे ॥ ४ ॥ खेमटा ॥ नाहकरे चितात सब दिनवां ॥ नहि हरि भजन शरण नहि गुरुके छूवे हैयम गण गांहकरे ॥ १ ॥ कुमति कुसंग सनेह बढ़ाये मोह भार शिर वाहकरे ॥ विश्वरूप पुनिपुनि पछितैहो पैहोदुख डर दाहकरे ॥ २ ॥ मलार ॥ देखोरी मायाघन चहुंघेरे ॥ कपट कुसंग कुभाव कुमतिजल आठयामबसेरे ॥ ज्ञान ध्यान छवि चांद सुरवर ज्योति ढपैचहुं फेरे ॥ भयो अंधियार विचार नसानो सूझत रूप नसेरे ॥ २ ॥ सूखेव धर्मजवास आश दुख लतालनित बहुतेरे ॥ विश्वरूपगृहगुरुको शरण गहोतब यह दुःदकटेरे ॥ ३ ॥ मलार ॥ देखोरे बिगरि गईसबबात ॥ जहां मनोराज साजसुख कैसो भूठो भ्रानकनात ॥ १ ॥ गहुगुरु चरण कंज सुखसागर सोभन रितु वसंत ॥ सहज सुभाव ज्ञानघन बर्षत आनन्द वारि सोहात ॥ २ ॥ मनोराज दुखदुन्द फन्द भ्रमतपन धूरि बहि जात ॥ विश्वरूप जिनको सुधरो है जोगुरु शरण समात ॥ ३ ॥ छन्दमधुकर ॥ रघुवीर धीर कृपाल गहु मन शरण सुखवन कारणं ॥ अवधेश बाल दयाल नरहरि गहन अघदल जारणं ॥ १ ॥ मुनिकंज षटपद सवणारि रमेश राजित भूषणं ॥ खरदूषणारि मुरारि जगरुचि तेज अगणित पूषणं ॥ २ ॥ श्री रावणारि रमेस माधव पुरारि नरहरि श्रीधरं ॥ सर्वेश शेष सुरेश मुनिवर सेव्य चरण सुखावहं ॥ ३ ॥ नरकारि ईश ब कारि प्रभु गोपाल नन्दन चिद घनं ॥ वसुदेव नन्दन नन्द सुतगो गोपी जीवन मुनि धनं ॥ ४ ॥ शिरछत्र धरमुख मुरलि धर भगवन्त भक्त भयापहं ॥ शरचाप धर रघुबंश बर श्रुति गेय सुयश सुखा वहं ॥ ५ ॥ बल विश्वरूप नगारि रिपु सनकादि व्यास सनातनं ॥ मिथिलेश नंदिनि नंदकर हर नाथ भवभय घातनं ॥ ६ ॥ राग कल्याण ॥ चित्रकूटि पावन थल हरण सकल पातक मल निवसत रघुवंश वीर भक्तन सुखदाई ॥ मुनिजन समूह धीर राम चरण प्रीति थिर प्रभु के आगमन सुनत दर्शनको आई ॥ फूलनकी अमित जाति माला गुथि बिबिधि भांति प्रभुके पहिरवत उर आनन्द अधिकाई ॥ २ ॥ निर्गुण हरि निर्विकार अज अनादि जगअधार महिसुर महिभार हरण बपुको प्रगटाई ॥ ३ ॥ गावत गुण सहित प्रेम भक्तिभाव अचल नेम जोरिकर बिनय करत बचन बर सुनाई ॥ ४ ॥ बनचर सबजीव जाति पक्षीसब बिबिध भांति निरखत मन सुखी होत बिहरत हर्षाई ॥ ६ ॥ सबकर सबहीसों प्रीति काहुसन कछुना भीति साधुभाव सरिस सबै बयर के बिहाई ॥ ७ ॥ बिश्वरूप प्रभु उदार

त्रिविध ताप हरनि हार खंजन हति विषम द्वन्द अभय मुनि बसाई ॥
८ ॥ भैरवराग ॥ याछबि बनी ननरियां संचनी मोहन दृग सोहेरे ॥ चपल अमन कुंडल कचकारे वदनकंज अलि घेरे ॥ १ ॥ श्याम कंज तन मंजु मनोहर भूषण रुचिर घनेरे ॥ कोटि काम छबि धाम श्याम को निरखि सकुचि मुख फेरे ॥ २ ॥ तिरछि चाल बाल संग विहरे दे मुख मुरली टेरे ॥ पद पराग अनुराग निरन्तर विश्वरूप मन मेरे ॥ ३ ॥ मलार ॥ मोहन रहत नेकु न थोर ॥ घन समान चंचल सखि मोहन जैसे दीप समीर ॥ कबहुं भवन कबो बनहि सिधारत कबो यमुना के तीर ॥ १ ॥ युग सम न युवता जन को छिन कौन लखै यह पीर ॥ विश्वरूप सखि हरि बिनु देखे हात नयन झरिनीर ॥ २ ॥ आसावरी ॥ नन्दलाला हो भव दुख मोचन नाम ॥ शरद सरोरुह दृगयुगल शोभा सब सुखदानि ॥ दशन प्रीति दाड़िम घनो अरुणअधर छबिखानि ॥ निरखत चितविश्राम ॥ १ ॥ भृकुटि मलके सोहावनी निज कर रचे सुचान ॥ कुसुम चाप धर चाप के छबि धन गर्व हेरान ॥ सुमिरत एगुण काम ॥ २ ॥ कुंडल छबि कवि को कहे चहुंदिशि ज्योति निधान ॥ मरकत मणि गिरि पर उदित प्रात युगल जिमि भान ॥ वनत महाछबि धाम ॥ ३ ॥ कुटिल केश मनको हरे मुखबारिज कहुंपास ॥ जैसे मधुकर प्रेम सो करत सरस रसवास ॥ मुनिजनचित अभिराम ॥ ४ ॥ कंठरुचिर बनमाल छबि मणि माला छबिदेत ॥ नाभि रुचिर गंभीरतर त्रिबेनी चित हरिलेत ॥ हेरत पल छनयाम ॥ ५ ॥ भुज विशाल जगजाल हर अंगद कटक अनूप ॥ अंगुलीय अंगुरिलसेजड़ित नगीनो रूप ॥ निज जन वांछित दाम ॥ ६ ॥ जानु मनोहर चिन बसे संकोच अरु छबि ऐन ॥ चरण युगल की चन्द्रिका युगल नयन सुखदयन ॥ भव भय टारत वाम ॥ ७ ॥ वसन पीत सोहेभली तड़ित चमक चहुंठाम ॥ विश्वरूप वशो रुचिर बसि कीन्हो ब्रजबाम ॥ ब्रज धन जीवन श्याम ॥ ८ ॥ आसावरी ॥ श्री महाराजा हो भव भय भंजन राम ॥ कंज वदन छवि चित हरे चितवनि चित हरिलेत ॥ बेनसुधारस छबि भरे सुनत श्रवण सुखदेत ॥ कलि दुख मोचन नाम ॥ १ ॥ भृकुटी छबि सब छबि सिमिटि कीन्हो अपने पास ॥ उतपति लय जगत को छनमह करत विनास ॥ सबघट कीन्हो विसराम ॥ भाल तिलक रवि बाल छबि कुंडल तरुण दिनेश ॥ मंद मंद मुसुकात प्रभु सोहत कुटिल सुकेश ॥ हेरत मोहत काम ॥ ३ ॥ दाहिने छाव घन लषन प्रभु धर धनु परम सुजान ॥ करजोरे आगे खड़े मारुत सुत बलवान ॥ सीता

सोहति बाम ॥ ४ ॥ सोहत कंठ बिशाल छबि माल सुभूषण अंग ॥ जगमग जगमग ज्योति अति चहुँ दिशि उदित पतंग ॥ कलितम टरत भान ॥ ५ ॥ भुजा विशाल वर चाप धर श्रीपति कृपा निधान ॥ कहना निधि त्रिवली निरखि टरत तीनि गुण मान ॥ पीत बसन छबि धाम ॥ ६ ॥ दरश युगल नख ज्योति अति मणि सुज्योति की प्रीति ॥ मोह मान अज्ञान हर सजल कंज रुचि कांति ॥ हेरत आठो याम ॥ ७ ॥ रतन सिंहासन ज्योति घन सोहत राम सुजान ॥ लषन सहित श्री जानकी बिश्वरूप को ध्यान ॥ मंगल मूरति श्याम ॥ ८ ॥ खेलता ॥ बिना रघुबीर छबि देखे कठिन सखि शोच उर छाये ॥ कहाँ ओह चैत दिन सजनी अवधपुर सकल सुर आये ॥ कहाँ बैशाख दिन पहिलो निरखि सुर राज सकुचाये ॥ १ ॥ कहाँ ओह जेठ दिन सजनी तपत दुख नेकु नहि पाये ॥ कहाँ आसाढ़ ऋतु सजनी प्रीतम निज धाम बिसराये ॥ २ ॥ कहाँ ओह मास भादों की उमड़ि जल धार महि छाये ॥ किये चहुँ ओर धुनि दादुर गयो सावन न सुख पाये ॥ ३ ॥ कहाँ आसोज वह सखि रे धवल सरयू अमिय छाये ॥ कहाँ सो मास कातिक के बसन मुनि तीर तपलाये ॥ ४ ॥ कहाँ अगहन सो हावन खेल सकल महिपाल पुर आये ॥ गयो सो पूष ओह दिन के लषन सिय राम बन पाये ॥ ५ ॥ कुसुम ऋतु माघ नहि भावे निरखि जिय मोह अधिक ये ॥ बड़ो फागुन कठिन सखि रे भवन रघुनाथ नहि आये ॥ ६ ॥ सकल पुर प्राण रघुनन्दन विधाता बाम बिछुराये ॥ कवन विधि विश्व जीवन रे जलज जिमि मीन बिलगाये ॥ ७ ॥ बारहमासा ॥ विहरैं रघुबीर आंगसुत्त दशरथ केरो ॥ चैत चतुर सखि मंगल गाउ ॥ परम मोद सब को उर छाउ ॥ रास श्याम छबि अति रुचिकारि ॥ निरखत सकल अवध नर नारि ॥ नयन नहि फेरो ॥ १ ॥ बैशाखे मास ललित बरबेन ॥ परम मनोहर श्रुति सुख देन ॥ सुनत हर्ष अति सकल समाज ॥ जैसे पीक सुचिर ऋतु राज ॥ बचन वर टेरो ॥ २ ॥ जेठ जननि प्रभु छबि सुख दाय ॥ निरखत प्रीत न हृदय समाय ॥ दुर्लभ सुख अनु छन अधिकाय ॥ रङ्क निधि जिमि सागर पाय ॥ बढ़त बहु तेरो ॥ ३ ॥ असाढ़ आस होय सब की पूर ॥ जो याचक होय जात हजूर ॥ अचल राज संपति समुदाय ॥ पाइ सुखी सब दुख बिन साय ॥ शोक नहि नेरो ॥ ४ ॥ सावन श्रुति कुंडल झलकार ॥ पीतवसन दामिनि डांजगार ॥ अंग अंग भूषन बहुभाँति ॥ जैसे चाँद सूरज की पाँति ॥ कियो है बसेरो ॥ ५ ॥ भादों भक्त हेतु धरि रूप ॥ लीला करत सकल जग

भूप ॥ बेठ चरित गावत निशिवार ॥ सुनत लहत सुख सिंधु अपार ॥ परै न भव घेरो ॥ ६ ॥ कुवांर कुमति छोड़ो जग जाल ॥ प्रीति करो मन दशरथ लाल ॥ अयसो नर तन उतम पाई ॥ नाहक घरणी धाम लो भाई ॥ करत हे अवेरो ॥ ७ ॥ कातिक कामिनि करके शिंगार ॥ मंजन करि सरयू सुचि थ्यार ॥ दिन मांगि ले मांगति कर जोरि ॥ राम रूप बसे मानस मोरि ॥ नयन हित हेरो ॥ ८ ॥ अगहन अगणित जन की भीर ॥ आये जनक पुर श्री रघुबीर ॥ हर धनु तोरि जनक दुख टारि ॥ सीता ब्याहि अवध प्रभु धारि ॥ मोद बहु तेरो ॥ ९ ॥ पूष परस प्र प्रीति अपार ॥ करति सखी सब सीय शिंगार ॥ सेवा करति बहुत मनलाय ॥ छबि निरखति नहि नयन अघाय ॥ पुलक उरठेरो ॥ १० ॥ माघ मुनीश शेष सुरराज ॥ विधि सुरबाणी बीणा साज ॥ गावत रुचिर सहित बरतान ॥ मंगल तोरण दीप वितान ॥ लगे चहुं फेरो ॥ ११ ॥ फागुन फल देखें सियराम ॥ पाइ अवध पुर जन विश्राम ॥ विश्वरूप सुख धरे चहुं ओरि ॥ उड़त अबीर रंग भरे खोरि ॥ देव जय टेरो ॥ १२ ॥ राग भैरों ॥ यशोदा नन्दन जग वंदन मन मोहन मुरली वाला ॥ बंशी बजावत चितहरि लीन्हों अजब मोहनी सबकों कीन्हो ॥ प्रभु नन्द लाला कमली वाला ॥ पंचरंग सोहे बनमाला ॥ १ ॥ बारिज कर बारिज छबि छावत बारिज नयन शयन दर गावत हंसत हंसावत खेल मचावत विहरै संग ब्रजवाला ॥ २ ॥ विश्वरूप गिरधर छबि नीको दिन मणि दिन शशि मुख फीको अजब कला जो इकाल को काला दृग हेरत गोपाला ॥ ३ ॥ राग परज ॥ प्रभु बिन कवन करै मेरो भाव ॥ बिन प्रभु शरन मिटै नहि कबहूं यह दारुण जगके दुख दाव ॥ १ ॥ जासु कृपा तें लहत सकल सुख छनमें करत रंकते राव ॥ २ ॥ जो कछु करों सो प्रभुहि समर्पो छोड़ि देहु मन अब अपनाव ॥ ३ ॥ विश्वरूप सब आशराम के दूजो नाहि अधार नित आव ॥ ४ ॥ विहाग ॥ शरण गति राम कृपालकी ॥ मिटै सकल जग जालकी ॥ आनन्द घन प्रभु जनहित कारक जन उरबसत मराल की ॥ १ ॥ श्याम सरूप अनूप सोहवन शोभा घटत तमाल की ॥ २ छनछन की सबबात लखत प्रभु जानत सब उर हालकी ॥ ३ ॥ ज्ञानध्यान करि कोउ जन पावत छूटत सब डर सालकी ॥ ४ ॥ विश्वरूप प्रभु द्रवत जाहि पर सोन परत मुख कालकी ॥ ५ ॥ राग भैरो ॥ अवध पुरी मधुमास सोहावन श्री नवमी कंहभीर भयोरी ॥ अज अनादि मन बुद्धि अगोचर श्रुति जेहि नेति कहोरी ॥ महाराज दशरथ तप बलतें सुर हित जन्म लियोरी

॥ १ ॥ बाजु बधाव मोद जिमि बाढ़ो चन्द सिंधु निरखोरी ॥ मणि तोरन घरघर कंचन घट मनिमय ज्योति जगोरी ॥ २ गज बाजी गोधरणी धाम बहु पट भूषण बहु जोरी ॥ महा राज दियेदान सबनो कहं भुवन अयाच किजोरी ॥ ३ ॥ गिरा अमर तिय उमा सहित बिधि सुरहर नन्द किशोरी ॥ आए रिद्धिसिद्धि जुत गणपति रविरथ नभ बिलमोरी ॥ ४ ॥ नारद सनक सनन्दन मुनिगण स्तुति गणरूप धरोरी ॥ करि उतशाह साज सुर नायक सची सहित पहुंचोरी ॥ ५ ॥ देवसरी यमुना विधि तियमिलि सर सागर सगरोरी ॥ सरयु सोहावनि शोक नशावनि सब तीरथ बटुरोरी ॥ ६ ॥ परम मनोहर शोभा पुरकी रचना अलख बनोरी ॥ शारद की मति भूलि गईहै बरनि सकै कवि कोरी ॥ ब्रह्मा नन्द मगन सबकोई भये देहदशा बिसरोरी ॥ सकल भुवन के पाप तापगये सुखघन पुण्य भरोरी ॥ ८ ॥ सबजन सबछन रत सुकर्म मंह कुपथ बिचार टरोरी ॥ तजि चपलाई रमा सोहावनि तेहि पुर आइ बसोरी ॥ ६ ॥ कौशल्या मुख कंचराम को निरखि न पलक परोरी ॥ विश्वरूप सर्वेश दयानिधि उर पुर बास करोरी ॥ १० ॥ भैरवी ॥ मनरे गहिले नाम निसांनी ॥ झूठे जाल कालके फन्दा अजहुंनही पहिचानी ॥ १ ॥ इन्द्रिय गण सब दुखके सागर निज निज विषय सयानी ॥ धोखा अंत करेंगे तोसों जिमि ठग झूठी बानी ॥ २ ॥ लहि बर साज भजन को आय अरुभेउ सुत पुरानी ॥ लाभ अधिक कछु नजार न आवै मूलहुकी भइहानी ॥ ३ ॥ चेतो निशि बासर गुरु मगुको जो सब सुखकी खानी ॥ विश्वरूप अब जान बनेहो पछतेहो अभि मानी ॥ ४ ॥ भैरो ॥ राम भजनकी सुधि बिसराये नाहक तू सठ जनम गंवाये ॥ विषय बिबस परि लम्पट गयो है स्वान सरीके घरघर धाये ॥ १ ॥ काम क्रोध मद लोभ महाबल रैनि दिवस तेहिमांहि बिताये ॥ जो सुख अगम दियो बिसराई ओस चाटि जिमि चाह अघाये ॥ २ ॥ ज्ञान नयन ते अंधे भयो है केहिबिधि साहेब रखहिं लखाये ॥ विश्वरूप अविगत अविनाशी विनुहरि कृपा शरण नहिं पाये ॥ ३ ॥ परज ॥ लाजकरो हरि अपने जनको ॥ राम कृपानिधि करुणासागर अंतर गति जानत सब मन को ॥ १ ॥ गज जल मगन नगन भइ द्रौपदि लीन्हउबारि विदितहै भुवनको ॥ वेद पुराण संत संमत मत पालन करत सदा जन प्रनको ॥ २ ॥ कमल नयन चित चयन दयन प्रभु तुमसम नहिं भव तापस मनको ॥ अघ बारिधि नासन सब समरथ दायक परमारथ सुखघन को ॥ ३ ॥ जन मन कामदेव तनसुन्दर जनद प्रबल अति मोह दहनको

विश्वरूप शरणा गति दायक अभय देहु जन जानि वराको॥ ४॥ भैरवी॥ रघुवर तुमबिनु कवन उबारे॥ पंकतें पंक छुटत नहिं कबहूं दुखिया दुख किमि टारे॥ बिनुरवि रैनि नसै कैसे जो उदय अमित शशि तारे॥ १॥ सब जगदीन दानि प्रभु तुमहो वेद विदित मतसारे॥ पाहि करत अव-लम्ब देत हरि ऐसो विरद तुम्हारे॥ २॥ बालक बनिता बंधु सहोदर स्वारथ विवस बिचारे॥ तासन चहत निज कुशलाइ छारमहो दृगद्वारे॥ ३॥ तुम सर्वज्ञ चराचर नायक अगनित पतित सुधारे॥ विश्वरूप प्रभु वेगिद्रवो अब करुणा सिंधु उदारे॥ ४॥ विहाग॥ मन अब कारिले वेगि सँभार॥ जोसुखके धावत निशिवासर सोनहि पैबे बिनु करतार॥ १॥ गृह धनदेह देहसुख मानत येह विनसत नहि लगिहै वार॥ करिअधर्म जे हितू पालतहो सोनहि संगीहो इहै तुम्हार॥ २॥ यमकर दूतबांधि तोहि लैहैं तबनाही कोउ रोक निहार॥ कहूं अनल कहूं तपत वालुहै कांट विषम अति राह कुरार॥ ३॥ शिरपर मुद्गर बहुत परतहै मूर्छित जाय गिरे यमद्वार॥ तपत नरकमहं सहत बहुत दुख समुझत अपनो कर्म अपार॥ विश्वरूप अबइन्द्र जाल तजु राम चरण हिय करो अधार॥ ४॥ विहाग॥ गुरु नोहि रूपदियो दरशाई॥ जहां वाणीकी गति नपरतुहै मन गतिनहि ठहराई॥ १॥ जोजन लखत चखत अमृतरस विविध दोषदुरि जाई॥ हम हमार यहभेद गयो सबपूरण सुख उरछाई॥ २॥ अचल अमल चंचल सचराचर पूर्ण एक समाई॥ कारज कारण भेद उभय जहं सोप रूप समताई॥ ३॥ अगह अगोचर अज अविकारी चितसुख रूप सदाई॥ सतगुरु परम दयाके सागर सो घट मांह लखाई॥ ४॥ यह चौरासी चखे कठिनहै बंधन अति कठिनाई॥ विश्वरूप गुरु कृपा करत जोहि छिनमें देत छोड़ाई॥ ५॥ ठुमरी॥ श्याम अबहम तोसन राते॥ नहि सोहात घरवासु नेकु मोहि न ह सोहात हितनाते॥ १॥ जाहु भवन फिरि आय कहत मोहि सुनि येह वचन दहत सबगाते॥ २॥ जीवन धनप्रिय प्रान हमारे तुमबिनु पक कलप सम जाते॥ ३॥ विश्वरूप ब्रज जीवन सुख निधि भई मगन सुनि कहि असबाते॥ ४॥ ठुमरी॥ ऐरि कुवरीने जादु लाई॥ जाके बस परिश्याम मनोहर हम सबकोंह बिसराई॥ १॥ माला गूंथि प्रभुहि पहिरावति बहुविधि गंध लगाई॥ चारु बचन कहि हरिहि सुनावति करि निजबस वरिआई॥ २॥ कहीं बहुत पैश्याम न आवत नहि कछु लहत उपाई॥ विश्वरूप मन मोहन यदुवर सुन्दर देखि लोभायगई॥ ३॥

ठुमरी॥ कुवरी पटरानी भईरे॥ कूबर देखि हंसत सब जाको अब सेवतो दिन गईरे॥१॥ जानहि सुनेदेखेउ नहि नैनन सो बिधि प्रगट कईरे॥ केहरि नारि अहार छीनिकै गीदरि वदन दईरे॥२॥ जेदासी नित नीच कारमरतसोपद ऊंच पईरे॥ विश्वरूप ब्रज राजराज महं अब सब होतनईरे॥३॥ ठुमरी॥ रघुबर जाइहोंकेहि पाहीं॥ जनममरण दुखफन्द हरणको अभयकरणको आहीं॥१॥ कमल नयन छवि भवन तुमहि बिनु कौन दीनको चाहीं॥ बिश्वरूप बहु हेरि थकित भये प्रभु तुम सम कोउ नाहीं॥२॥ ठुमरी॥ देखो सब यहएक समानी॥ करि मतिभेद खेद जनपावत लखतनहीं अभिमानी॥१॥ विषय मांह करै चाह घनेरो सुख मेथा उर आनी॥ बाहर बाहर धाइ मरतनित नहि अंतर हरि जानी॥२॥ जिमि गिरिवर सागरमहं मणिगण रतनखानि सुख दानी॥ विनु उपाइ ते नजरि न आवत दीखत पाहन पानी॥३॥ जब गुरु ज्ञान उदय रवि होवे खोवे भरम निसानी॥ विश्वरूप तब अज अविकारी प्रभुपूरण पहिचानी॥४॥ रागविभारा॥ मेरो महाराज रामप्रीति भजन सोई॥ जासों निज हेतु काहों ऐसो कन जोई॥ हारे हम खोजिस-कल भुवन नाहिं कोई॥१॥ करिवर कर गाह्नहे बारि नाकलेई॥ हारेप-रिवार खींचि एक एक होई॥२॥ जय जय हरि आरत हरटेर कीन्हयेोई॥ तुरितहि प्रभु मनको वेगिशत्रु बटन खोई॥३॥ द्रोपदि पनपालि लियेोपाल-न जन तोई॥ जाके पद बारि गंग जगत पाप धोई॥४॥ गावत यश स-हस वदन शारद मति गोई॥ ब्रह्मा सनकादि ईश शीस चरण मोई॥५॥ जानत सब बाल हाल पिता मातु दोई॥ विश्वरूप कर्त्ता प्रभु करिहैं सोइ होई॥६॥ राग बिभास॥ सुरसरि तव विमल नीर सेवत मुनि वृन्दधीर मिटत भव दुसह पीर मोनस दुरिताई॥ राजित तिहु पुर तरंग निरखत चित होतरंग होवै तिहुं ताप भंग कलिमल दुखदाई॥ पातक तरुअति प्र-चंड होवै शत खंड खंड अतुलित ब्रह्मांड भूति सिमिटि आरआई॥२॥ शंकरके जटाजाल अतुलित छबि राशि भासै जैसे रवि अमित बीच अमित चन्द छाई॥३॥ शम दम संतोषदानि निर्मल सुख ज्ञान खानि अर्थ धर्म काम मुक्ति करतल जनु पाई॥४॥ बिधि कमंडलू विचित्र धारतामहं प-वित्र तपोराशि निखिल सिद्धि सिमिटि जनु भराई॥५॥ विष्णु चरण कंज मंजु द्युति अनूप भूति गंज तेहतें प्रगटानी सही वेद सुयश गाई॥६॥ ब्रह्मद्रव बहत नीर निरखत मन होत धीर मज्जन अनुराग बढ़त छन छन अधिकाई॥७॥ विश्वरूप अर्ज भानु मातु शरण लाज मातु हंसहंस

कोउ हंस रामउर सोहाई ॥ ८ ॥ विहाग ॥ अगम घर ज्योति बरै निशिवार ॥ होत प्रकाश अपार ॥ होत नहीं ठहराव नयनकी कोटिन दिनकार सम आकार ॥ १ ॥ आनंद नदिया बहत सोहावन पियत है कोउ कोउ संत पियार ॥ २ ॥ पियत मगन जग खबरि भुलानी जैसे रहत सदा मतवार ॥ ३ ॥ त्रिगुण कर्म सब दुरित पराने निर्मल हृदय भयेउ उजियार ॥ ४ ॥ विश्वरूप सतगुरु शरणागति अलख पुरुष जन गहो निरधार ॥ ५ ॥ ठुमरी ॥ मन कबहुं आसरा लगहोगे ॥ रघुबर पद में प्रीति निरंतर जग के सुख कछु नाहिं चहोगे ॥ १ ॥ पर अपकार धरो हिय नाहीं पर निन्दानहि एकबन लहोगे ॥ २ ॥ काम क्रोध मद विषय वास तजि राम शरण नहं मगन-हहोगे ॥ ३ ॥ पुण्य समूह बसे हिय माहीं पाप अनलतें नाहिं दहोगे ॥ ४ ॥ गुरु सेवामें प्रीति निरंतर सम अस्तुति निन्दाहि सहोगे ॥ ५ ॥ विश्वरूप हरि कृपा करि जब तब भवजालतें पारपरोगे ॥ ६ ॥ राग विभास ॥ परब्रह्म रामचन्द्र श्रुति समूह गावै ॥ अलख पुरुष निर्विकार सकल विश्वके अधार सगुण रूप भक्तन हित जगमें प्रगटावै ॥ १ ॥ धाता होय सृष्टि करत विष्णु रूप भवै भरत शंकर होय सकल हरत उदर निज समावै ॥ २ ॥ साहेब प्रभु एक रूप पूर्ण अजब भवै भूप नाम रूप विविधि भेद माया दरशावै ॥ ३ ॥ काम क्रोध दूरि करै प्रेम भक्ति हृदय धरै विषय वास तजै आश आनन्द उर छावै ॥ ४ ॥ मगन रहत आठ याम मेटेउ मति विषम काम चारि खानि जीवपक आतम ठहरावै ॥ ५ ॥ विश्वरूप सेइ धार त्यागि बेगि होहु न्यार कीट भृंग सदृश राम निज स्वरूप पावै ॥ ६ ॥ रागविभास ॥ हरि हर प्रभु एकरूप गावत श्रुति चारी ॥ भेदभाव कर दुराव आनन्द तब हृदय छाव दिव्य दृष्टि उदय भई मिटि गई अंधियारी ॥ १ ॥ जन्म मरण शोक गये ब्रह्मरूप मगनभये इन्द्रीगन जोर नसेउ काल कर्मटारी ॥ २ ॥ आनंद रस पियत नित्त दूसर न गहत चित शत्रु मित्र त्रिगुण भाव सबतें भये न्यारी ॥ ३ ॥ जीवन सन मुक्त भये देह दशा दूरिगये विचरत निर्लेप होइ विधि निषेध जारी ॥ ४ ॥ धन्य पुंजको समूह जेहिको अस दशा जूह सुखी जग माहिं सेइ अवर सब दुखारी ॥ ५ ॥ विश्वरूप गुरु प्रसाद मेटत मनके विषाद अपर न उपाइ कछू खोजि सकल हारी ॥ ६ ॥ ठुमरी ॥ भजन बिनु काहेको देह धरी ॥ बिना भजन भव नाहि तरी शठ कोटि उपाइ करी ॥ १ ॥ आवत जात भ्रमत निशि वासर कबहुं न समुझि परी ॥ २ ॥ सुत वित हित मानत शठ अपनो सोतेसे दूरि टरी ॥ ३ ॥ विश्व-

रूप रघुवीर शरण बिनु कबहुं न भवतें तरी ॥ ४ ॥ ठुमरी ॥ चेतु सवेरो अपनो देश ॥ छन छन घरि घरि समय टरतुहै भूलि परेसि का बिषय ह-मेश ॥ १ ॥ इहां कोई तेरो संगी न छोड़हे दिना चारिके सकल सुबेस २॥ काल कठिन को फन्द परोहै लखत नहीं कोइ रंक नरेश ॥ विश्वरूप रघु राम शरण गहु छोड़ सकल जग नाना भेष ॥ ३ ॥ ठुमरी ॥ ममता मन-तोहिं नाच नचावत ॥ बाल कुमार युवा पन बीतेउ चौथे पन शिर श्वेत जनावत ॥ १ ॥ बिषय बिवस होइ भूलि गये शठ मोहि निशा सब दिवश बितावत ॥ २ ॥ अजहुंन जागु हेतु कर हरिसों मानुष तनका बिफल गं-वावत ॥ बिश्वरूप रघुबीर शरण बिनु यमपुरतो कहं कवन बचावत ॥ ३ ॥ राग भैरो ॥ माया पुरी अघ ओघ नसावनि जन पावनि सुखराशी ॥ परम तपी ध्यन मुनिजन निशि दिनते हृदयलकेर निवाशी ॥ अचल समाधि मुक्ति अन पायनि दायिनि अति सुख मासी ॥ १ ॥ अप कीरति कुवृत करिणी सब प्रबलसिंह जायासी ॥ मोह सघन तम बिपुल चंड दुति रवि शशि अनल प्रभाशी ॥ मेख मास याची जन आवत जो जन यश अभिलासी ॥ ता कहं दानि खानि सब गुण की काम धेनु विदितासी ॥ ३ ॥ अणिमादिक दासी निशि वासर महिमा बेद प्रगासी ॥ विश्वरूप जग जननि कृपा करि राम रूप बरदासी ॥ ४ ॥ राग बिहाग ॥ सब सुख साहेब के घरे जहां गये जन मे न मरे ॥ ब्रह्मादिक जहां सेइ रहे हैं कर जोरे निशि बासरे ॥ १ ॥ ऋद्धि-सिद्धि सब विपुल बड़ाई लक्ष्मी जाके चरण तरे ॥ ध्रुव प्रह्लाद बिभीषन जेते अस्तुति करत शरणमें परे ॥ २ ॥ सनकादिक जेहि रटत निरंतरशारद नारद शेष बरे ॥ ४ ॥ हय प्रभु सकल अनीह निरंजन निज जन हेतु स्वरूप धरे ॥ बिश्वरूप अवि गति करुणा मय शरन गये सब ताप हरे ॥ ५ ॥ भैरवी ॥ प्रभु तजि याचि हौं अब काहि ॥ अब ढर ढरन दीन को दानी अशरण शरण को आहि ॥ १ ॥ अति कृपाल भव जाल हरण हर तोरो यश कहुंअहो नाहिं ॥ करुणा करहु हरहु भय संकट जानि शरण गहुबांहि ॥ बिस्वरूप वर देहु दया करि चरन शरण गुरुमांहिं ॥ ३ ॥ भैरवी ॥ समैया गेली बीति रे हरि से करत ना प्रीतिरे ॥ बालापन खोय अजान महं स-हत दुसह दुख शीतिरे ॥ १ ॥ भये कुमार खेलत बालक संग मौत पिता महंरीतिरे ॥ २ ॥ भये युवा युवती संगराते करत है बहुत अनीतिरे ॥ ३ ॥ बिरध भये इन्द्री गण थाके चलने की भई भीतिरे ॥ ४ ॥ यम गण आय मुद्गर मारे बिकल परोहै चीतिरे ॥ ५ ॥ सहत नरक महंताप बिबिध

ब्रिधि अवन मिटावै भीतिरे ॥ ६ ॥ विश्वरूप का भूलि अधम पथ रामनाम करु चीतिरे ॥ ७ ॥ राग भैरो ॥ अचल सुतापति अविचल गति मति दारुण हर त्रिपुरारी ॥ सेत कंज शशि वरण विशद लसि गंग तरंग जटारी ॥ शेष माल बिधु बाल भाल पर शोभा अमित बनारी ॥ १ ॥ नमत सुरासुर परत चरण महं चाहत चरण भयहारी ॥ होत अशोक शोक सब छूटत जैसें कोकतमारी ॥ २ ॥ अग जग भवन दवन सब दुख के दीनबंधु हितकारी ॥ अति उदार सुख शारदानि प्रभु केतिक अधम उधारी ॥ ३ ॥ निकटहि वसत लखत नहि कोउ माया तिमिर पसारी ॥ विश्वरूप गुरु बचन तरणि बिनु होय न उर उजियारी ॥ ४ ॥ भैरो ॥ बिश्वेश्वर नगरी सुख सगरी भूलि जाहु जिनि अवर घरे ॥ अणिमादिक जहांरहे कर जोरे भुक्तिमुक्ति जहसकल भरे ॥ १ ॥ ब्रह्मादिक सेवत कर जोरे यको छन पै लखत न परे सुर सरि पावनि परम सोहावनि काशीते कबहूं न टरे ॥ २ ॥ चार खानि के जीव चराचर होय मुक्त काशी जो मरे ॥ पातक पुंज प्रचंड तूलहै काशी निरखत तुरत जरे ॥ ३ ॥ विश्वरूप गहु चरन शिवा शिव काम क्रोध मल सकल हरे ॥ ४ ॥ राग बिभास ॥ काशी कैलाश भवन बरनि नहीजाई ॥ निरखत अति आनन्द होय प्रीति हृदय छाई ॥ १ ॥ शंकर नित करत वास गिरिजा युत हिय हुलास सेवत ब्रह्मादि चरण पंकज चित लाई ॥ अस्तुति सनकादि करत आनन्द उर माझ भरत टारत नहि नेकु दृष्टि निरखत चितलाई ॥ २ ॥ गावत यश शेष जासु पावत नहि पार तासु कवि जन सब हारे कछु उपमानहि पाई ॥ विश्वरूप भाग्य राश शंभुपुरी करत वास मेटत यम त्रास मुक्ति करतल में आई ॥ ३ ॥ राग बिभास ॥ जय जय शंकर कृपाल दीन बंधु प्रणत पाल बेगि हरो जगत जाल दीजे शरनाई ॥ सच्चिद घन निर्विकार सुख स्वरूप अति उदार अलख प्रभु अखंड एक व्यापेव समुदाई ॥ १ ॥ नारदादि गावत यश पावत हिय आनन्द रस लगी है समाधि अचल मेटेव दुचिताई ॥ २ ॥ उमा रवन ज्ञान भवन मोहि मारताप दवन देवन हित त्रिपुर हनेव भूतल यश छाई ॥ ३ ॥ जर जर विषपान कियो अभैदान सबै दियो पर के उपकार हेतु निज सुधि बिसराई ॥ ४ ॥ ब्रह्मा जो लिखेव भाल नरक भोग अति कराल फेरि अंक देइ डंक स्वर्ग तेहि पठाई ॥ ५ ॥ निरखि महा तेज सदन चकित भये चतुर वदन शंभु के प्रताप सकल सभा जाके गाई ॥ ६ ॥ दास शिरताज माज भुवन ख्यात महाराज वचन मन अगोचर गति पारकोउन पाई ॥ ७ ॥

विश्वरूप शिव कृपाल तुरित हरो मन कुचाल शरण लाज करोनाथहृदय बसोआई ॥ ८ ॥ राग परज ॥ जय महेश जन आरत मोचन ॥ उरमालाराजित अति सुन्दर कुंद इन्दु दर बपुख बिरोचन ॥ १ ॥ रहत अखंड समाधि सदा जेहि राम चरण बारिज चित दोचन ॥ २ ॥ हय निर्लेप अमाननिरंजनजेहि मदमोहकामभय मोचन ॥३ ॥ सदांमगनसुखअजअविनाशीहर्षविषाद लाभदुख सोचन ॥ ४ ॥ हरिपद कमल जपै उरमोही भवजल काम गहेतेहि बोचन ॥ ५ ॥ विश्वरूप प्रभु दानि शिरोमणि राम भक्ति बरदेहु त्रिलोचन ॥ ६ ॥ रागपरज ॥ जयमहेश जयजय त्रिपुरारी ॥ दीनबंधु प्रभुजन हित कारी ॥ करत सदा उपदेश शिवाके तत्वज्ञान बरभव भयहारी ॥ १ ॥ पर उपकार निरत निशिवासर करि बिष पान बिबुध भयटारी ॥ कर डमरू शिरजटा बिराजे भसमअंग रतिपति सतकारी ॥ २ ॥ अहिमाला उरमांह बिराजे तेज पुंज रविसत उजियारी ॥ गोरबरण सुख भवन दयानिधि गावत सुयश सदा अति चारी ॥ ३ ॥ जासुनाम सभताप नसावन द्रवो बेगि प्रभुशिर शशिधारी ॥ बिश्वरूप प्रभु हर दयालहो देहु रामपद प्रीति अपारी ॥ ८ ॥ भैरो राग ॥ जयसोमेश्वर प्रभु निखिलेश्वर उमा रवनभय हारी ॥ तीरथ प्रतिके अक्षय कोशको हमाराज अधि कारी १ ॥ जाको जो फल अमल सोहावन तपसो ताहि बिचारी ॥ देत दयानिधि देरि करतनहि दरदवंत हितकारी ॥ २ ॥ दर्शनतें मति बिमल करत अतिज्ञान रूपवपु धारी ॥ याची जनमन शोक हरण हरअमित भानु उजियारी ॥ ३ ॥ इहभव अगम अपार सिंधुको तरणि चरण तुमारी ॥ बिश्वरूप प्रभु अधम उधारण काहि शरण नहितारी ॥ ४ ॥ रागभैरो ॥ कर्दमेस सर्वेस त्रिपुरहर शोकहरण जनत्राता ॥ कलि मल दोख रोख हरशंकर अभय मुक्ति पददाता ॥ तेरी चरित अगाध पारनहिं पावत अहिपति धाता ॥ १ ॥ शंकट तरुउन्मूलन करहर गहत नजन अघबाता ॥ अति उदार मुनि चरित श्रवण पुटहोत पुलक सबगाता ॥ २ ॥ याची जन अघसिंधु अगमतर सोखक जिमि घटजाता ॥ ज्योति सरूप अनूप महाछबि अमित दिवाकर भाता ॥ ३ ॥ अरजसुनो करुणाके सागर सब घट के तुम ज्ञाता ॥ बिश्वरूप प्रभुचरण शरणदेह हरहु सकल जग नाता ॥ ४ ॥ राग भैरो ॥ जयजग जननी शंकट हरणी भवजल तरणी नन्दसुते ॥ छबिअतु- लाई बरणि न जाईबल प्रताप गुणसिंधु जुते ॥ हर कमलासन प्रभु गरुड़ासन सिद्धासन सुरशक्र नुते ॥ १ आरतहरणी आनद करणी भ्रमतम तरणी अघ धूते ॥ गतिअन पायिनीं शुभ मति दायिनी अभय बिधायिनि श्रुति ब्रूते ॥

२॥ जगथिति हरणी उदभव करणी सुयश वितरणी बिदितहुते ॥ जनमन रंजिनि कलिदुख गंजिनि शोक बिभंजिनि वहुश्रुते ॥ ३ ॥ याको तरणी सुर गौ शरणी भीम चंडिके अघ अच्युते ॥ अज अविनाशिनि शोक बिनाशिनि बिश्वरूप पदकमलनुते ॥ ४ ॥ रागकल्याण ॥ जयजय कलिपाप समनिरोष राग दोष दमनि तोष मोष दायिनि जग अभय कारिका ॥ वंदत ब्रह्मादि देव पावत नहि जासुभेव चरितसिंधु गावति श्रुतिग्रोनि चारिका ॥ १ ॥ मोह मानमद कुधार वहेजात जीवभार और ठौर पावत नहि तुहीं तारिका ॥ नन्द भवन जन्म लिये अभय दानसवहि दिये भूसुर भूभार हरणि असुर मारिका ॥ २ ॥ उदभव थिति नाशकरणि जगके अगवंध हरणि बुद्धि सुद्धि दायिनि सवशोक हारिका ॥ काल कर्म कुटिल चंड जनके भ्रम विदम मुंड खंड खंड करणि निखिल शक्ति धारिका ॥ ३ ॥ रज निपति विमल वदनि सोहति अतिमंद रदनि धारेपट सुदन वरतड़ित सारिका ॥ तरणि तरणि तेजरासि लीला तनुदेवि भासि दिव्यदृष्टि दायिनि मनखेद वारिका ॥ ४ ॥ विश्वरूप जगत जननि अरज मानुदान अपनि गमपरणशरण देहु भीम चंडिका ॥ ५ ॥ रागभैरो ॥ जय मारुत सुत जयहनुमान दीनबंधु प्रभुकृपा निधान ॥ रामनाम रटरहत निरंतर प्रेम सुधा नित करत हैं पान ॥ १ ॥ अंजनि तनय तेजवल सागर ज्ञान भवन सभगुन गनखान ॥ कीन्हेउ भक्ति परम सुखसागर निजवसि गखेव रामसुजान ॥ २ ॥ जाके यश रघुवर निजमुख तें कपिदल महं कियो वहुत वखान ॥ छन महं लांघि पयोधि गयेहै जासु प्रताप जगत प्रगटान ॥ ३ ॥ खलदल तूलताहि पावक सम वालापने मुख मेलेउ भान ॥ विश्वरूप प्रभु रामदूत वरदेहु कोंग हरिपद निर्वान ॥ ४ ॥ रागभैरो ॥ महावीर रनधीर शिरोमणि रामदूत गुणखानी ॥ यशप्रताप महिमा अतुलित वल कहिनसकत श्रुति वानी ॥ गोपद सम लांघेव सागर कहलनें वननेकु थकानी ॥ कीन्हें परिचा देव विविध विधि लखिप्रभुता सुखमानी ॥ १ ॥ सीताशोक हरण करुणाकर वरसागर वरदानी ॥ दनुज दितिज कुल अगम गहन वनदहन विदित जग जानी ॥ २ ॥ जारेउलंक शंकनाहि मन मह तोरेउ वाग विरानी ॥ हाहाकार कियो सव पुरजन टेरत पानी पानी ॥ ३ ॥ मुनि जन सुख कारक भय हारक द्रवो सुजन पहिचानी ॥ विश्वरूपप्रभु दया कीजिये हरिये मोह निशानी ॥ ४ ॥ विहाग ॥ जयगणेश जय जय जगवंदन ॥ अशरण शरण भरत उर चन्दन ॥ नाम प्रताप भले विधि जानत सुमिरत तुम्हे नसे भ्रमफन्दन ॥ करिवर वदन हरणदुख सागर राम

भक्तउर जेहि चितनन्दन ॥ १ ॥ चरण कमल जेहि पूजिसदा नर अबहुन लहत मोहमद मंदन ॥ कोटि सूरसम कांति बिराजै निरखत टरैताप जग द्वन्दन॥ २॥ बिश्वरूप प्रभुशरण पुकारत रामभक्ति देहु शंकर नन्दन ॥ ३ राग भैरो ॥ अघखण्डन घन मंडने शंकर काशी नाथ दयाला ॥ अति दाता उदार हर कोशल हारक काम कराला ॥ जो सुरतरु सुरधेनु सरिस कहोंतो नहि वनत कृपाला ॥ १ ॥ सह सब अल्प फलन को दायक जासकिये त्रिहिकाला ॥ तुमप्रभु निज सरूप सुख प्रापक चिदघन रूप बिशाला ॥ २ ॥ महिमा अगम पार नहि पावत पट दरशन श्रुति माला ॥ वरुणा तीर बसे याची हित अप हरि करत निहाला ॥ ३ ॥ करुणा सिंधु दयाकरि खोलो अजर मोहकी ताला ॥ बिश्वरूप रामेश्वर दरवो जानि नाथ निज बाला ॥ ४ ॥ रागभैरो ॥ जय रामेश्वर प्रभु सर्वेश्वर दीनबंधु अविनासी ॥ अलख अनादि वेद जेहि गावत ब्रह्मा करत खवासी ॥ इन्द्र वरुण चरणन्ह पर लोटत शरणागत अभिलाषी ॥ १ ॥ अनल भानु शशि नयन बिराजत तेजपुंज सुखरासी ॥ जापर दया करत चितवत प्रभु हरत मोह मद फांसी ॥ २ ॥ रामचन्द्र निज करतें थापे जलनिधि तीर हुलासी ॥ देवन कर मुनिवर युत पूजे जयजय धुनि नभ वासी ॥ ३ ॥ करुणा जलधि चन्द्र शेखर हर आसु तोषना माशी ॥ विश्वरूप प्रभु याची तारण बसे वरुणा तटकाशी ॥ ४ ॥ भैरवी ॥ धर्म राज महाराज दम निधि तेज पुंज तप धारी ॥ जाको रिपु काहुं नजरि न आवत सबकरि सबै निहारी ॥ गर्व मोह ममता मद माया निज स्वभावतें टारी ॥ १ ॥ जाको बंधुमहा बल सागर विदित जगत मह चारी ॥ सुरपति देत जाहि अर्द्धासन डरपत खल भयकारी ॥ २॥ पापसिंधु अति लख दुर्योधन कीन्ह उपद्रव भारी ॥ ताको दर्प हरण समरथ यशुदाके कृष्ण मुरारी ॥ ३ ॥ शिवपुर बास शिवरूप भयेहैं याची जन अघहारी ॥ विश्वरूप जेहिनाम जपेतें होत धर्म मति प्यारी ॥ ४ ॥ राग भैरो ॥ पंडु तनय अति बुद्धि उजागर वलसागर गुण खानी ॥ धर्म राज महाराज सभासजि दिशिदिशि तें धन आनी ॥ रूव नृपनीति रीति श्रुति मतके यज्ञहेत व्रत ठानी ॥ १ ॥ सकल दिशातें मुनिवर आये वेद विद्या बखानी ॥ कृष्ण सदलबल सुख निधि आये सभा हर्ष अधिकानी ॥ २ ॥ प्रथम पूजिसब मह निरणय करि पूज्यकृष्ण कहजानी ॥ पुजावेद शास्त्रविज वरसब किये यथोचित वानी ॥ ३ ॥ सघुन रेस हर्ष दरवाको मुखेनृप अभिमानी ॥ बिश्वरूप यदुभूप जाहिं बल ताको भुवन निशानी ॥ ४ ॥ रागभैरो ॥

जय भगवान अनादि सनातन कपिल जगत हितकारी ॥ देव हूति कर्दम के जाये जग तारण बपु धारी ॥करि उपदेश विवेक अनेकन्ह जननीभवतें तारी ॥ १ ॥ तत्वविवेचन मग सबहू वेनिज बल ताहितकारी ॥ भयेहैं पुनीत चरित मन भावन विदित भुवन दशचारी ॥ ३ ॥मातुहि करि उपदेश ज्ञान वरमोह जाल सब टारी ॥ चेतन अमल सोहावन निजसुख कीटभृंग सम डारी ॥ ४ ॥ अति कृपाल निजपाल बालजिमि जननी प्रीति संभारी ॥ विश्वरूप कोशीश संभु जन याची को रखवारी ॥ ५ ॥ यह सोलह भजन पंच कोर्शाके ॥ गौरी ताल जल्द ॥ आरति श्री मोहन जीकी कीन्ही कनक थार यशोमति कर लीनी ॥ १ ॥ चांद सूर दोउ ज्योति सोहाय जगमग ज्योति तरुण तमछीनी ॥ माल पटल रोरी छविसोहै नवल सुरंग लसत पटभीनी ॥ २ ॥ शीस मुकुट मणि जड़ित बिराजै त्रिभुवन छवि सिंहासन छीनी ॥ वरषत देव कुसुम चहुं हरषे वनमाला छवि लसत नवीनी ॥ ३ ॥ गावत राग सकल व्रज नारी सकल लोक छवि व्रज आधीनी ॥ विश्वरूप व्रजलाल कन्हैया भूपन ज्योति हरत गुनतीनी ॥ ४ ॥ गौरी तालजल्द ॥ आरति श्री रघुवर जीकी कीन्ही सकल भुवन छविचित महदीन्ही ॥ भक्ति सुदीप सुहावन लागे वाती तत्व विचार नवीनी ॥ प्रेम सोहावन घृत छविछाजै हरत ज्ञान मय ज्योति अलीनी ॥ १ ॥ श्रद्धा सचिव सकल इन्द्रिय गण सुक सनकादिक सुरदि जो बीनी ॥ शम दम योग विराग यतन सब ढोलक मधुर मृदंग नफीनी ॥ २ ॥ आरति कलश लसत जनसोई श्री गुरुशरण वारि वर बीनी ॥ विश्वरूप प्रभु अचल निरंजन झलकत ज्योति होत भ्रमछीनी ॥ ३ ॥ भैरवी तालजल्द ॥ मंगल आरति श्री यदुवरकी ज्योति सोहावन राजै ॥ मकरा कृत कुण्डल छविसोहै मुकुट भानु छविछाजै ॥ १ ॥ माल विशाल लसत मणि गणको पदिक कंठमह भ्राजै ॥ कटक वलय भूपण छवि छावत चहला घन मह गाजै ॥ २ ॥ बदन सरोरुह लसत मनोहर कुटिल केश अलिताजै ॥ हास मनोहर ध्यान करत सुचि सिद्धि होत सबकाजै ॥ ३ ॥ व्रज वनिता बालक परिजन सब साजि सुमंगल साजै ॥ विश्वरूप प्रभु आरति गावत झांझ विपंची बाजै ॥ ४ ॥ भैरवी तालजल्द ॥ मंगल आरति श्रीहरिहरकी ब्रह्मादिक सुरसाजै ॥ कनक थार कपूर कि वाती जगमग ज्योति विराजै ॥ १ ॥ श्याम शेत घनकुंद सोहावन कोटिन्ह रविछवि छाजै ॥ मणिगण हार माल अहिगण को वाम शिवा श्री भ्राजै ॥ २ ॥ गान करत सब देव मनोहर वहु विधि बाजन बाजै ॥ रतन सिंहासन झलकत प्रभुके देखि

मनो भव लाजे ॥ ३ ॥ शारद शेस सिद्धि गुण गावत छोड़ि सकल भ्रमकाजे ॥ विश्वरूप महिमा हरि हर को गावत श्रुति शिर ताजे ॥ ४ ॥ राग भैरो ॥ आरति करत तुमारी रघुवर ॥ दीपक बुद्धि प्रीति घृत ता मह वातीं सुरत सवांरी ॥ वरत है ज्योति अखंडनिरंतर दशोदिश उजियारी ॥ १ ॥ थार बिचार धरो ता ऊपर तत्व कुसुम चहुंतारी ॥ अद्भुत छबिरबि तरुणा तेज सम शोक रैनि तम टारी ॥ २ ॥ शमदम तेप वमन भूषण वर इन्द्रिय गण रुचियारी ॥ गावत ताल देत बहु भांतिन्ह निरत मन रुचि कारी ॥ ३ ॥ यह गुरुगम आरति धारत उर मेटत ममता भारी ॥ विश्वरूप लहे अचल अमल पद जेहि गावत श्रुतिचारी ॥ ४ ॥ जय जयश्री गुरु प्रभु जग तारक तारक ब्रह्मानंद हरे ॥ अति उदार सुख सार सिंधु प्रभु नमत चराचर चरण तरे ॥ सकल महीश अहीश नमत नित कर जे रैनिशि बार धरे ॥ १ ॥ आज्ञा करत देवगण जाको ऋद्धि सिद्धि दासी-सगरे ॥ सब गुण वपु धरि शरण शरण करि चरण पलोटत प्रीति भरे ॥ २ ॥ शारद सुरसरि सर नाना विध जो तप पुंज भुवन निसरे ॥ तजि निज निज थल चरण कमल दल बसत पलटि नहि जात रे ॥ ३ ॥ जन मन कुमुद निशाकर रुचिकर सुर तरु इच्छित दानि वरे ॥ शम दम ज्ञान दया तप संयम चारो फल अति सरस फरे ॥ ४ ॥ दरशनतें अतिहर्ष बढ़तउर कलिपातक दल सकल हरे ॥ जैसे पंचानन कह निरखत भाजत करि गण बहुतडरे ॥ ५ ॥ भानु निकर कर जासु वचन वर सुनत अविद्या रैनि टरे ॥ कामक्रोध मद लोभ नखत गन छीन भये नहि नेजरि परे ॥ ६ ॥ ईश विष्णु विधि नाम भेदत्रय केवल आपुहिं रूप धरे ॥ मस्करीश परमीश पुरातन सतचित व्यापक अचर चरे ॥ ७ ॥ दिशि दिशि भ्रमेउ लहेउ नहि अस प्रभु जोदुखसुनतहिं तुरित ढरे ॥ विश्वरूप मनमधुप मनोहर चरण सरोरुहवास करे ॥ ८ ॥

॥ श्रीगणेशायनमः ॥

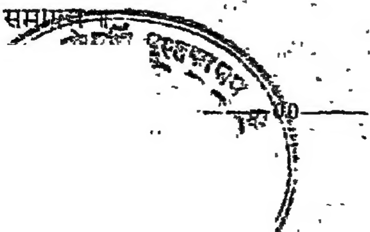
शरच्चंद्रप्रतिमवदनां कोटिरविभां शुभांगंगाम्बांछा जलकनशा भीतिकरिकास् ॥ शिरोरत्नैगूढान्धवनमकरासीनजननीम् पटैश्वच्छन्देलेपित सुतनुम्यामिशरणम् ॥ १ ॥ बलेधाचाव्याज त्रिपदभुवनाक्रान्तजयिनो द्रुतो द्रकाङ्घ्रि प्रवरनखविद्धांडसुविरात् ॥ अवद्धारापारा द्रुहिणनिलये प्रविशदजा कपर्दे गच्छन्तीनकुलतपसामेहशिखरे ॥ २ ॥ चतुर्धास्व कृत्वाऽवनितलंविशन्तीभगवतो परिवाहोल्लोलप्रवरसुरवे मोक्षमतिदा ॥ अकूपाराविष्टा शुभगाजिनानोक्षहक्षपा वहित्थादिव्याधि प्रचुरहरणी दीनजननी ॥ ३ ॥ जग

न्मातर्नीरं स्पर्शन्ति चरन्ते विपथगे वरं सेव्यं सारं सकलतपसां शुद्धमतिभिः ॥
विहस्तास्याकारं निरपदनिकारौघशमनम् मनोवाग्धीबोध प्रशमविदधद्विद्वश
रणी ॥ ४ ॥ मुनीन्द्रः स्वर्तारेऽपिचक्रुमतये ब्रात्यनिचया मुनेर्जित्वापित्वा
पुरचलपदम्वेदविदितम् ॥ समारुह्यत्त्वंग्रा तुरयंघटना खिन्नमनसा कृतं दिव्यं
आनंजननिनियद्युनाकभवनम् ॥ ५ ॥ वियद्गंगेऽनंगारि शिरसिचरद्वारि विः
मलेन्दुद्युत्येऽनघे सुरसुरवधूसेव्यसलिले ॥ चलद्वीचिश्रेणि भ्रमपदजगत्ताप
हरणिहराशान्दुःपाश स्परमकृपया विष्णुपदिमे ॥ ६ ॥ त्वमीशस्त्वं धातात्वम-
सिहरिरम्वाऽखिलनृणामिरात्वं रुद्राणी जलदभवनात्यम्भगवती ॥ जगद्भत्वा
सृष्टिप्रलयमनिशं संविदधतीत्वदन्यत्किं लोके यदसिनहितदब्रूहि नितराम् ॥
७ ॥ अहोमन्दैर्लुब्धप्रभृतिनिकरैर्भेदकुशलैः रविद्यैयच्चैयेषु लि सुगुरुतोद्वन्द्वु
विधुरैः ॥ सुखेस्वच्छेऽव्यस्ताऽप्रमितजगदोके भुजगवत्गुणेशच्छिद्रं पेत्वयिवि-
गतुलेस्वान्तमनिशम् ॥ ८ ॥ पवित्रं स्तोत्रं ते पठतिनियतो यस् सुमनसा लभे-
दिष्टंसौख्यं सुवृषमचलम्वाद विधुरम् ॥ दहेदंघोरंहो वचनतनुधी जातम-
खिलं व्रजेदन्तेऽनन्तन्निरवधिसुखं ब्रह्मविरजम् ॥ ९ ॥ इतिश्रीम त्परमहंस
परिव्राजकस्वान्त मधुव्रतास्वादितांघ्रिकमल श्रीगौड स्वामि शिष्य श्रीविश्व-
रूपानन्द स्वामि कृतं गंगाष्टकम् ॥ श्रीगणेशायनमः ॥ विद्येशमीश तनयं
वरदं गणेशं विघ्नापहम् विपमशोक निवृत्तिहेतुम् ॥ तुष्टिप्रदं निखिल देव
मुनीन्द्र वन्द्यं वन्देऽर्क कोटिसदृशं गजराजवक्त्रम् ॥ १ ॥ वेदार्थसारमखिलं
रचितम्मुनीन्द्रैः सूत्रं तदर्थं सुगमंयचकारभाष्यम् ॥ यः शंकरो निखिललोक
हिताय दृष्टिस्तं नौमितत्व मतिदं भगवन्तमीशम् ॥ २ ॥ सन्यासिद्विजवर्य्य
मण्डलवृतः श्री स्वामिमत्तारकब्रह्मानन्द सरस्वतीतिविदितो मायातमोभानु-
मान् ॥ सच्चिद्ब्रह्मसुखप्रकाशकृदसौ वर्वर्तिभूवौ पर्य्येतित्पादसरोज मेवसततं
भृंगे भजेऽहंमुदा ॥ ३ ॥ विद्वद्वृन्दवरालि सेवितपदाब्जद्वन्द्वसत्तारक ब्रह्मा
नन्द सरस्वतीयतिवर श्रीमद्गुरु स्वामिनाम् ॥ मायाभ्रान्ति तमिस्रभानु-
निकरौ सद्भक्त निर्वाणदौ वन्देऽहंचरणौ सुभेदधिपणौ न्मत्तेभकंठीरवौ
॥ ४ ॥ यं काश्यां जगदीश्वरं गिरिसुता नाथं जगद्वल्लभम् पंचक्रोश्युपरक्षया
चित्तनता सर्वार्थ देवद्रुमम् ॥ वाणीस्वान्त शरीरजाघतमसे चंडांसु कोटि-
प्रभं सच्चिद्ब्रह्मसुखंनिरीहमचलं श्रीकर्दमेशंभजे ॥ ५ ॥ श्रीमद्वृन्द मुखादिने-
श सद्दृशींमूपाम्बरालंकृतां षड्गान्याष्टकरैर्युतां मुदघतीं निर्वाणधर्मादिदाम्
॥ कामक्रोधमदादि नागभरणीं माहेश्वरी मम्बिकां धाचीशादनुवन्दितांघ्रि
मनसा श्रीभीमचण्डीम्भजे ॥ ६ ॥ मायावन्धहरं जनैपासितकरं वंद्यं विधा-

चादिभिः श्रीराम प्रियमीश्वरं जनकजा चिन्ताऽपिचिन्तामणिम् ॥ मिश्रं साधुमत ममि च मसतांसर्वेश्वरंसादिगं सच्चित्कं शुचि सिंधुसागर गृहं श्रीवायुपुत्रम्भजे ॥ ७ ॥ सुर्यग्नीन्दुदृशं गिरीन्द्रतनयानाथंमहेशं विभुंवंद्य धात्रिमुखैस्त्वकुन्दधवलं भोगीन्द्रहारंहरम् ॥ वांछादं वनदं सतां च वरदं रोघसस्थितं शंकरं सच्चिद्ब्रह्मनिरंजनं सुवदनं श्रीरामनाथंभजे ॥ ८ ॥ योवैभवाब्धितरणाय चरित्रसेतुंभव्यं चकार भगवान्स्वजनाऽनुकम्पी ॥ याचः ऽर्थितो रघुकुलेयुकृतावतारस्तं जानकीशमखिलार्थदमाश्रयेऽहम् ॥ ६ ॥ श्रीपण्डोस्तनयान्युधिष्ठिरमुखांसद्धर्मचिन्तपरान्या खण्डादिकुतर्कशार्वरतमोभानूननुयात्यर्थदान् ॥ त्यक्ताराज्यमदं सदाशिव पुरस्य नूत्नेदुरात्तस्पदं श्रीकृष्णांघ्रिसरोज भृङ्गहृदयान् श्रद्रौपदीशान्भजे ॥ १० ॥ श्रीमत्सर्वगुणाकरं भव भयच्छेत्तारमीड्यं सुरैः कर्तारं जगतामगम्यम् सताग्यानैगम्यम्विभुम् ॥ कण्ठन्यस्तेडमणांभुंच कपिलाधारस्थमीशं शिवं सर्वेशं वृषभध्वजेश्वरमहं श्रीपार्वतीशंभजे ॥ ११ ॥ श्रीमत्खर्व विनायकं गणमुखं श्रीकेशवं सिद्धिदं श्रीमत्संगमराड् त्रिलोचन विभुं श्री बिन्दु लक्ष्मीधवान् ॥ सत्सेव्यंमणि कर्णिकेश्वर हरं श्रीतारकेशं प्रभुं श्री सप्तावरणं गजेन्द्रवदनं श्री सिद्धिराजंभजे ॥ १२ ॥ श्री मन्स घच दंडपाणिगिरिजा श्री ज्ञानवापीः शुभाः श्री मत्साक्षिविनायकं खलुमनः कामेश्वरंशंकरं ॥ स्वान्तेच्छावरदं जगद्भयहरं श्री कोटिलिंगेश्वरं भक्तिज्ञान विरागशान्तिसुखदं श्री ढुंढिराजंभजे ॥ १३ ॥ पिंडाऽण्डोद्भवज वृजजीवनिकरांसंशोध्यतेभ्यः प्रभोज्ञानं ज्योतिरजंददासिगुरुणा श्रुत्यामतंत्वांविभो ॥ सर्वेशं करुणाकरं शरणदं मार्त्तण्डचंडप्रभंयाचो भूषणभूषितांगमनिशंश्रीभैरवं संभजे ॥ १४ ॥ श्रीकाश्यां भ्रिप्रमाणजीवनिकरेभ्याऽजादि सेव्यंविभुंतत्वं ब्रह्मचराचरेश्वरमजंसंबोधयन्तं प्रभुम् ॥ संसारार्णवपाटपोतमजरं देव्यन्नपूर्णापतिंसंबिद्धं व्यमनंत भानुसदृशं श्रीविश्वनाथंभजे ॥ १५ ॥ भूचन्द्रांगनिधेशवत्सरगतेमासेतथाकार्तिके शुक्लेऽनंगतिथैभृगोश्चदिवसे श्रीविश्वरूपैःकृतः । मुक्तिक्षेत्रकृतालयेश गिरिजाश्रीभैरवादेस्तवश्चोप्रियः पठतांतनोतुनितरांसंशृण्वतांश्रद्धया ॥ १६ ॥ पंचक्रोशस्थदेवानांवन्दनंस्तोत्रमुत्तमम् । यःपठेच्छृणुयाद्वाऽपिप्रदक्षिणफलंलभेत् ॥ १७ ॥ इति श्रीविश्वरूपानन्द स्वामिविरचितपंचक्रोशप्रधानदेवस्तवम् । चतुर्वेदैर्वेद्यांभुवनविदितांतं नकवृतांघुवांस्वारामसेव्यपदयुगलांहंसकरभाम् ॥ तुलाकोटिर्दैवीं स्वपदिदधतीब्रुन्दूवदनामुरोदेवृक्कंदा सुतनुमनिशंनौमिवरदाम् ॥ १ ॥ सहस्रास्यादीसत्वभ्रनिखिन जयिनोदैत्यनिकरान् रसाभूदेवादिचिदशसुतपोरऽयदहनान् ॥ स्फुरद्दोपपांगैःप्रलयजजुदानन्त पटलैः प्रशम्याय्यै तूर्णंद्मभयमक्र-

या:पाहिवरदे ॥ २ ॥ अग्रेसेव्येभव्ये भविकमतिभिर्भावुकवरै स्तपोमूर्तेस्फूर्ते न्निधिहरिहरैर्गीतचरिते ॥ जगद्गाढोन्मायेप्रगतमृगवद्वै विरूपयाविहस्तान्नो बद्धांजननिललितेमोचयनिजान् ॥३॥ विराड्वै सोचाकूडस्कगिरिशाकारभूद्वे रमेरोमाकूपेसमयगुणाते ऽनन्तमहिमे ॥ ध्रुवेऽम्बस्माद्धातोऽत्स्यवसितिस्त्वसेविश्व मखिलम्भवाम्भोधौनग्नांस्तरणिचरणेचोद्धरशिवे ॥४॥ विपन्नांनि:कासौ ने खल सुखदेश्शान्तमुधियेकलैर्मन्त्रैस्तारै: सरसललितै:कसंरतये ॥ स्वतत्वंकमोर्थं प्रथितकृपय बोधयसिभो हरन्तंदीनार्त्तिप्रवितरचमेज्ञानममलम् ॥ ५ ॥ तम स्तामिश्रादिप्रथितबिलसत्यर्वमुदयन्सज्ञामायाराचौ निखिलमधटामोघिजनि-कास् ॥ अजादिस्तम्बान्ताऽऽवरण करिकांशान्तिहरिकांकृपादृम्भ स्वद्सिहर शरणदेपाहिगिरिजे ॥ ६ ॥ अयोध्याद्या:पूर्य: सुरपतिमुखालोकपतये फणी-न्द्राद्या नागाहिमगिरिमुखा: शैलनिकरा: ॥ वियद्गंगा मुख्यानिखिलसरितो ऽम्भोधिनिचया:विराड्मूर्चात्मेशास्त्वतसिनिखिले पाहिवरदे ॥ ७ ॥ निजान-न्दानऽन्तोऽमृतसदनचिद् ब्रह्मखिपरे जगत् व्यध्यस्तं त्रिभुवनवद्विन्ध्य भवने ॥ नमोरूपेवेदो सुगुरुकृपयालब्धधिषणैवरंज्ञानंमह्यं निगमगदितंदेहिसु भगे ॥ ८॥ वरंदिव्यन्तत्वं पठतियदि देव्यष्टकमिदंमनोवाणीकायार्जितवृजि नतोयाब्धिघटजम् ॥ परांसिद्धिंलब्ध्वासइहतरसानन्दकरिकां ध्रुवं गच्छेदन्तो स्वमुखमचलं ब्रह्मपरमम् ॥ ९ ॥ इति श्री विश्वरूपस्वामिकृतंदुर्गाष्टकम् ॥

कुंडलिया ॥ ताकरब्रह्मानन्दजी स्वामीगौड सुजान। ताकोशिष्य सुजान है विश्वरूप जग यान ॥ कीन्हो हरि गुण गान सगुण निर्गुण सुखदाई। बासु-देव द्विज राच ताहि महं कीन्ह सहाई ॥ गूंथिचरित वरमान उमानाथहिं सुख कारक। विश्वनाथ उर माहि समर्पेउ सबजग तारक ॥ १ ॥ उनइस शत येकातीस वरस हरि गुणराम ॥ २ ॥ सप्तपुरीमें विदित यहुं काशीबिच प्रधान। स्वामि गौड महाराजके दशाश्वमेधस्थान ॥ ३ ॥ गंगातीर पुनीत अति रुचिर घाट सोपान। पंडित वृन्दयतीन्द्र जन वसत मनोहरजान ॥ ४ ॥ विश्वरूप स्वामी कियो रचना ललित ललाम। बासुदेव तेहिको कसहि बांधि रागमहंनाम ॥ ५ ॥ इतिश्री विश्वरूप स्वामीकृत हरि हर सगुण निर्गुण पदावली समाप्त ॥



नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
ब्रजविलास	राग सागर	अक्षयवनी	मुहूर्त चिन्तामणि सटीक
ब्रजविलास छोटा	वैद्यमनोत्सव	स्वयम्बोध	मुहूर्त मार्तण्ड सटीक
राग	ज्योतिष	ज्ञान चालीसी	मुहूर्त दीपक
राग प्रकाश	जातक चन्द्रिका	दोहावली	बृहज्जातक सटीक
लावनी	जातकालंकार	बालबोध	जातकालंकार सटीक
शृंगार पचीसी	ईसरी भरण	विद्यार्थी की प्रथम पुस्तक	जातकाभरण
किस्सा वग़ैरह	ज्ञानस्वरोदय	किताब गंजी	होरा मकरंद
नानार्थ की संग्रहावली	रमलसार	गणित कामधेनु	संस्कृत उर्दू टीका स·
ब्रह्मसार	इन्द्रजाल	लीलावती	मनुस्मृति
शिवसिंह सरोज	मुतफ़र्रकात	पटवारियों की पुस्तक प्रथा·	विष्णु हारीत
भक्तमाल	शनिश्चर की कथा	संस्कृत की पुस्तकें	महिम्न स्तोत्र
रामाभिषेक नाटक	ज्ञान माला	लघुकौमुदी	संस्कृत भाषा टी· स·
इन्द्रसभा	गोपीचंद भरथरी	सिद्धान्त चन्द्रिका	अमरकोश
विक्रम विलास	कथा श्री गंगा जी	अमरकोश गैनी फाइस	याज्ञवल्क्य स्मृति
बैताल पचीसी	अवध यात्रा	पंच महायज्ञ	संध्या पद्धति
सिंहासन बत्तीसी	भरथरी गीत	निर्णयसिन्धु	अगार्क
पद्मावती खण्ड	दानलीला व नागलीला	संग्रह शिरोमणि	भगवद्गीता टी· हरवंश
शुकबहत्तरी	दोहावली रत्नावली	भगवद्गीता सटीक	भगवद्गीता टी· आनन्दगिरि
बकावली सुमन	गोकर्ण माहात्म्य	दुर्गापाठ सटीक	गीत गोविंद
बहार दरवेश	श्री गोपाल सहस्रनाम	विष्णु भागवत	कथा सत्यनारायण
किस्सह हातमताई	कथा सत्यनारायण स·	भविष्योत्तर पुराण	परमार्थ सार
अपूर्व कथा	हनुमान बाहुक	अपराधभंजन स्तोत्र	शार्ङ्गधर संहिता
किस्सा गुल सनोवर	जनक पचीसी	दुर्गास्तोत्र	पाराशरी
सहस्र रजनी चरित्र	आनन्दामृतवर्षिणी	कायस्थ कुल भास्कर	शीघ्रबोध
रॉबिन्सन का इतिहास	बनयात्रा	कायस्थ धर्म निरूपण	लघुजातक
वैद्यक	कायस्थ वर्ण निर्णय	तथा छोटा	षट्पंचाशिका
निघण्ट भाषा	विहार विन्द्रावन	मनुजलता	सामुद्रिक
अमर विनोद	समर विहार विन्द्रावन	ज्योतिष	शनिश्चर नाम की
वैद्यजीवन	कल्पभाष्य	मुहूर्त गणपति	पुस्तकें
औषधि संग्रह कल्पवल्ली	दरसी	मुहूर्त चक्र दीपिका	संस्कृत

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
ऋजुपाठ	भूगोल तत्त्व	अयोध्या काण्ड	मजमूआ जाब्ते फौ-
१ भाग	भूगोल दर्पण	आरण्य काण्ड	जदारी ऐक्ट १० सन्
२ भाग	इतिहास तिमिरना-	किष्किन्धा काण्ड	१८६१ ई०
३ भाग	शक १ भाग	सुन्दर काण्ड	ऐक्ट स्टाम्प १ सन्
धात्वर्थ	२ भाग तथा ३ भा-	लंका काण्ड	१८६२ ई०
नागरी की पोथी	भारतवर्षीय इतिहास	उत्तर काण्ड	ऐक्ट रजिस्टरी २० सन्
वर्णमाला पोथी १भा	भरतखण्डीय भूगोल गुटका		१८६६ ई०
तथा २ भाग	इंगलिस्तान का इतिहास १ भाग		ऐक्ट स्टाम्प खर्चा अदाल-
गणित की पोथी फारसी	हिंदी पत्रिका	२ भाग	त २६ सन् १८६७ ई०
नागरी ... वर्णन	बालक सूत्र	३ भाग	मजमूआ ऐक्ट अ-
अक्षर रचना	पद्यसंग्रह	हिसाब ... सुन्दरी-	वध लगान १८ सन्
धर्मप्रकाशिका १भा	भाषा काव्यसंग्रह	सान्	१८६८ ई० इस्तामरा-
तथा २ भाग	कवित्त रत्नाकर १भा-	पत्र चिट्ठी	र २६ सन् १८६८ ई०
... बुद्धी कहानी	तथा २ भाग	पट्टा व खत की पोथी	बंगाला
धर्मसिंह का वृत्तान्त	मंगलकोष	तथा कबूलियत	ऐक्ट स्टाम्प दस्ता-
शिक्षा वली	अंक प्रकाश	रजिस्टर दाखिल खा-	वेज़ात १८ सन्
पत्रहितैषिणी	गणित प्रकाश १भा	रिज बुलबा मदर्सा	१८६९ ई० सवी
पत्र दीपिका	तथा २ भाग	रजिस्टर हाज़िरी पाठशा-	ऐक्ट ताल्लुक़दारा-
विद्याचक्र	तथा ३ भाग	ला	न मुअल्लक़ अवध २४
विद्यांकुर	तथा ४ भाग	कानून	सन् १८७० ई०
पदार्थविद्यासार	गणित क्रिया	पटवारियों के क़ायदे	ऐक्ट चौपायों का मदा-
पदार्थ ज्ञान विटप	क्षेत्र प्रकाश	उर्दू की पोथी महाजनी	खिलत बेजा १ सन् १८७१
भोजप्रबंधसार	क्षेत्र चन्द्रिका १भा-	दिवानी के स्टाम्प्स	ऐक्ट मजमूआ ज़ाब्ता
राजनीति	वकील दायरा	का ऐक्ट ७ सन् १८७०	फौजदारी १० सन् १८७२ ई
शिशुबोध	रेखा गणित १ भाग	तूजबी	ऐक्ट माल गुज़ारी
भाषा लघुव्याकरण	तथा २ भाग	नागरी	मगरबी व शुमाली
१ भाग	बीजगणित १भा-	ऐक्ट लगान मगरबी	१९ सन् १८७३ ई०
तथा २ भाग	तथा २ भाग	पश्चिमोत्तरी १० सन्	तरमीम मजमूआ जाबि-
भाषा तत्त्व दीपिका	रामायण तुलसीकृत	१८५९ ई०	ता फौजदारी १८ सन् १८७४ ई
भाषा चंद्रोदय	बालकाण्ड	इंडियन पिनल कोड	